3 राजधानी
महापर्व में आहुति देने निकली जनता

6 अभिमत
अमेरिका-ईरान संबंध और भारत

11 विदेश
श्रीलंका में सीता अम्मन मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा

12 स्पोर्ट्स
दीप्ति ने विश्व रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण जीता

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 208
लखनऊ, मंगलवार, 21 मई, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

अग्निवीर
राष्ट्र की संप्रभुता के रक्षक
राष्ट्रीय-10

चढ़ता पारा, घटता मतदान

● लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में भी नहीं दिखा वोटरों में उत्साह

राजेश कुमार। नई दिल्ली

एक ओर उत्तर भारत भीषण गर्मी से जूझ रहा है तो दूसरी ओर लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में भी मतदाताओं की उदासीनता जारी रही। 49 निर्वाचन क्षेत्रों में 59.11 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। पश्चिम बंगाल में हिंसा की छिटपुट घटनाओं और उत्तर प्रदेश के एक गांव में मतदान बहिष्कार के बीच राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों में मतदान हुआ। सबसे अधिक मतदान प्रतिशत पश्चिम बंगाल (73 प्रतिशत) में जबकि सबसे कम मतदान प्रतिशत महाराष्ट्र (53.51 प्रतिशत) में हुआ। जिन निर्वाचन क्षेत्रों के लिए मतदान हुआ, उनकी संख्या के लिहाज से यह सबसे छोटा चरण था। पांचवें चरण में कम मतदान ने भाजपा सहित राजनीतिक दलों को परेशान कर दिया है।

श्रीनगर के बाद, जम्मू-कश्मीर की बारामूला लोकसभा सीट पर पांचवें चरण में मतदान वाली 49 सीटों में से एक में 54.49 प्रतिशत मतदान हुआ, जो पिछले आठ लोकसभा चुनावों में सबसे अधिक मतदान की ओर अग्रसर है। अब तक हुए किसी भी आम चुनाव में उत्तरी कश्मीर के निर्वाचन क्षेत्र के लिए यह एक तरह का रिकॉर्ड है। बारामूला सीट पर मतदान के पिछले पैंतीस साल के इतिहास में सबसे अच्छा मतदान 1984 के आम चुनाव में 61.09 प्रतिशत था। यह चौथे चरण के दौरान श्रीनगर में 38.49 प्रतिशत मतदान दर्ज होने के बाद आया है। बारामूला जम्मू-कश्मीर के कश्मीर संभाग की तीन सीटों में से एक है - श्रीनगर और अनंतनाग-राजौरी के अलावा - जहां भाजपा ने कोई उम्मीदवार नहीं उतारा है। आयोग ने कहा कि 2019 में निर्वाचन क्षेत्र में 34.6 प्रतिशत मतदान महाराष्ट्र में सबसे कम 48.88 प्रतिशत जबकि पश्चिम बंगाल में सबसे अधिक 73 प्रतिशत मतदान हुआ। बिहार में 52.55 प्रतिशत, जम्मू-कश्मीर में 54.21 प्रतिशत, झारखंड में 63 प्रतिशत, ओडिशा में 60.72 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 57.79 प्रतिशत और लद्दाख में 67.15 प्रतिशत मतदान हुआ। मतदान का समय शाम छह बजे तक था, हालांकि पहले से कतार में लगे लोगों को वोट डालने की अनुमति दी गई।

नई दिल्ली में सोमवार को पूर्वी दिल्ली से भाजपा प्रत्याशी हर्ष मल्होत्रा के समर्थन में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनसभा को संबोधित किया।

पश्चिम बंगाल के सात संसदीय क्षेत्रों में हिंसा की छिटपुट घटनाओं के कारण मतदान प्रभावित हुआ। बैरकपुर, बनगांव और आरामबाग सीटों के विभिन्न हिस्सों में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई। निर्वाचन आयोग ने कहा कि उसे विभिन्न राजनीतिक दलों से 1,036 शिकायतें मिली हैं, जिनमें इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) में खराबी और एजेंटों को बूथों में प्रवेश करने से रोकने का आरोप लगाया गया है। आरामबाग विधानसभा क्षेत्र के खानाकुल इलाके में टीएमसी और भाजपा समर्थकों के बीच झड़प हो गई। पड़ोसी हुगली निर्वाचन क्षेत्र में, भाजपा की मौजूदा सांसद और पार्टी की उम्मीदवार लॉकेट चटर्जी को टीएमसी विधायक आशिमा पात्रा के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं के विरोध का सामना करना पड़ा। चटर्जी जब एक बूथ पर जा रही थीं, तो टीएमसी कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया और चोर-चोर के नारे लगाए, जिसके बाद भाजपा सांसद अपनी कार से उतरीं और उनके खिलाफ नारे लगाए।

पुलिस और केंद्रीय बलों की एक बड़ी टुकड़ी मौके पर पहुंची और दोनों समूहों को रोका। हावड़ा निर्वाचन क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों से भी हिंसा की खबरें आईं। हावड़ा के लिलुआ इलाके में भाजपा ने टीएमसी कार्यकर्ताओं पर मतदान प्रक्रिया में बाधा डालने का आरोप लगाया, जिसके बाद दोनों समूहों के बीच झड़प हुई। केंद्रीय पुलिस बल इलाके में पहुंचे और उन्हें तितर-बितर किया। बनगांव निर्वाचन क्षेत्र के गाएशपुर इलाके में, एक बूथ के बाहर टीएमसी समर्थकों ने स्थानीय भाजपा नेता सुबीर विश्वास को कथित तौर पर पीट दिया। इसके बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया। इसी निर्वाचन क्षेत्र के कल्याणी इलाके में, केंद्रीय मंत्री और भाजपा उम्मीदवार शांतनु ठाकुर ने एक मतदान केंद्र के अंदर एक व्यक्ति को अपने प्रतिद्वंद्वी टीएमसी उम्मीदवार विश्वजीत दास के पहचान पत्र का कथित तौर पर उपयोग करते हुए पकड़ लिया। इसके बाद केंद्रीय बलों ने उस व्यक्ति को बूथ से हटा दिया।

हुगली के कुछ बूथ पर केंद्रीय बल मतदाताओं को कथित तौर पर डराने-धमकाने में भाजपा कार्यकर्ताओं की सहायता कर रहे थे, जिसके बाद टीएमसी कार्यकर्ताओं ने कुछ इलाकों में विरोध प्रदर्शन भी किया। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस ने ईवीएम में गड़बड़ी का दावा किया और भाजपा पर राही प्रखंड के बेला खारा गांव में तीन बूथ पर लोगों को वोट नहीं डालने देने का आरोप लगाया। कांग्रेस की उत्तर प्रदेश इकाई ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, रायबरेली के सरेनी में रसूलपुर का बूथ नंबर पांच सुबह आठ बजे से बंद है (और) मतदाता वापस जा रहे हैं। तो इस तरह 400 (सीट जीतने का लक्ष्य) पार हो जाएंगी।

गोंडा विधानसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी प्रत्याशी श्रेया वर्मा ने निर्वाचन आयोग से शिकायत की कि मनकापुर क्षेत्र के बूथ संख्या 180 और 181 पर निष्पक्ष मतदान नहीं हो रहा। कौशांबी से मिलीं खबरों के मुताबिक, हिसामपुर माधो गांव के मतदाताओं ने मतदान का बहिष्कार किया। ग्रामीणों ने अधिकारियों से कहा कि वे मतदान को लेकर तभी विचार करेंगे जब प्रशासन उन्हें आश्वासन देगा कि गांव को अन्य क्षेत्रों से जोड़ने वाली सड़क और रेलवे पुल बनाया जाएगा। (शेष पेज 9)

लखनऊ में 56.64, मोहनलालगंज में 63.37 प्रतिशत वोट पड़े

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ में सोमवार को लोकसभा चुनाव में एक मतदान केंद्र पर अपनी बारी की प्रतीक्षा करते लोग

लखनऊ में सोमवार को मतदान के दिन चढ़ते तापमान के बीच वोटर घरों से निकले। वहीं देर शाम तापमान में कुछ नरमी आई। दिन का अधिकतम तापमान 40 डिग्री और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्शियस दर्ज हुआ। इस दौरान लोगों के बीच वोटिंग को लेकर उत्साह देखने को मिला। लखनऊ में 56.64, मोहनलालगंज में 63.37 प्रतिशत वोट पड़े। लखनऊ पूर्वी विधानसभा क्षेत्र में शाम छह बजे तक 52.25 प्रतिशत मतदान हुआ था। अपरान्ह एक बजे के बाद मतदान में थोड़ी गिरावट देखने को मिली लेकिन तापमान में नरमी आते ही लोग अपना फर्ज निभाने के लिए मतदान केन्द्र पहुंचे। केंद्रीय रक्षा मंत्री और सांसद लखनऊ राजनाथ सिंह ने प्रात: 10.15 बजे सपरिवार विपुल खंड गोमती नगर में स्कॉलर होम स्कूल पोलिंग पर मतदान किया। रक्षा मंत्री ने धर्मपत्नी सावित्री सिंह, सुपुत्र भाजपा वरिष्ठ नेता नीरज सिंह और पुत्रवधू नीलम सिंह के साथ मतदान किया। मतदान के बाद राजनाथ सिंह ने कहा कि मैं लखनऊ सहित देश के सभी मतदाताओं से यह अपील करना चाहता हूं कि परिवार के सभी सदस्यों के साथ मतदान निश्चित रूप से करें, यह हमारी सभी से अपील है। पार्टी को कितनी सीटें मिलेगी इसका जवाब देते हुए कहा कि फैसला जनता के हाथों में है लेकिन एनडीए का संकल्प 400 प्लस का है और इस समय सीटों के लिए कोई भविष्यवाणी नहीं करना चाहूंगा।

मतदान के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए नीरज सिंह ने कहा कि लोगों के अंदर उत्सुकता है और हर पोलिंग बूथ पर बड़ी संख्या में मतदान के लिए कतार लगी हुई है। विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए हर व्यक्ति आज मोदी को पुन: सत्ता में चाहता है कि वह हमारे प्रधान सेवक के रूप में प्रधानमंत्री के रूप में वापस आए। उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने माल एवेन्यू में मोंटेसरी स्कूल में धर्मपत्नी नम्रता पाठक और सुपुत्री के साथ मतदान किया। मतदान के बाद कहा कि विपक्ष पूरी तरह से भ्रमित है जनता ने उन्हें पूरी तरह से नाकार दिया है और हम रायबरेली, अमेठी सहित उत्तर प्रदेश में सभी 80 सीटें जीत रहे हैं। वहीं राज्यसभा सांसद भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कहा कि सभी नागरिक मतदान का प्रयोग अवश्य करें मतदान आपका अधिकार भी है और आपका कर्तव्य भी।

बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने वीवीआईपी गेस्ट हाउस, निकट चिल्ड्रन अकादमी स्कूल में बने पोलिंग बूथ पर अपने मताधिकार का उपयोग किया है। इस दौरान मायावती ने पत्रकारों से कहा कि आज पांचवे चरण का मतदान हो रहा है। मैं अपना वोट डालने यहां आयी हूं। पांचवे चरण से जुड़े मतदाताओं से यह अपील करती हूं कि वो भी अपना वोट डालने के लिए अपने पोलिंग बूथ पर जरूर करे। मायावती ने कहा कि हर पार्टी अपना दावा करती है कि हम सरकार बना रहे हैं। जब रिजल्ट आयेगा तो दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। इंडी गठबंधन पर मायावती ने कहा कि इन लोगों पिछली बार भी कहा था कि सरकार हम बनाने जा रहे हैं।

बसपा के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा ने बेटे कपिल मिश्रा के साथ मांटेसरी स्कूल में मतदान किया। मतदान के उपरांत बसपा नेता ने इंडी गठबंधन पर हमला बोलते हुए कहा कि सपा-कांग्रेस के लोग हर वो कार्य करते हैं जिससे भाजपा को लाभ मिले। मतदान करने के उपरांत पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि डॉ. आंबेडकर के संविधान को बचाना चाहते हैं तो लोग घरों से निकलकर वोट डालें। इससे जो चाहते हैं कि उनको नौकरियां मिलें, किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े, फ्री में पैसा, राशन न लेने पड़े, इसके लिए जरूरी है कि लोग भारी संख्या में घर से निकलकर मतदान केंद्र पर पहुंचकर वोट डालें। लगातार इंडी गठबंधन द्वारा बसपा को भाजपा के लिए बी टीम की तरह काम करने वाले सवाल पर उन्होंने कहा कि बसपा नहीं बल्कि सपा और कांग्रेस पार्टी के लोग बी टीम का काम कर रहे हैं।

भाजपा ने बाकी चरणों के लिए रणनीति तय करने को की बैठक

नई दिल्ली में सोमवार को पार्टी मुख्यालय में आयोजित बैठक में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शामिल हुए।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

शेष दो चरणों के लिए व्यस्त लोकसभा चुनाव प्रचार के बीच, पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सोमवार को पार्टी मुख्यालय में महासचिवों सहित शीर्ष भाजपा नेताओं की एक जरूरी बैठक बुलाई। पार्टी सूत्रों ने बताया कि यह बैठक चुनाव में अब तक पार्टी के प्रदर्शन की समीक्षा करने और बाकी चरणों के लिए रणनीति तैयार करने के लिए बुलाई गई थी। बैठक में भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) बीएल संतोष, राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह, तरुण चुघ, पार्टी आईटी विभाग के प्रमुख अमित मालवीय, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनिल बलूनी और केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव शामिल थे। नड्डा ने सभी वरिष्ठ नेताओं से अधिक प्रभावी भूमिका निभाने और जमीन पर पार्टी की चुनावी रणनीति के कार्यान्वयन में सक्रिय योगदान देने के लिए कहा। भाजपा प्रमुख ने पांचवें चरण के मतदान की भी समीक्षा की और चल रहे चुनावों के संबंध में पार्टी की भविष्य की रणनीति पर भी चर्चा की। सूत्रों के अनुसार उन्होंने पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि पार्टी पदाधिकारी और सभी वरिष्ठ नेता अपने-अपने बूथों पर इसी तरह की बैठकें करें और बूथ पर पार्टी की रणनीति के कार्यान्वयन में अधिक प्रभावी भूमिका निभाएं।

ईरान के राष्ट्रपति रईसी की हेलीकॉप्टर हादसे में मौत

● प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जताया दुख, भारत में आज एक दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा

पायनियर समाचार सेवा/एजेंसियाँ। नई दिल्ली/दुबई

सरकारी मीडिया के मुताबिक ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी, देश के विदेश मंत्री और कई अन्य अधिकारी सोमवार को देश के उत्तर-पश्चिम के कोहरे वाले पहाड़ी इलाके में उनके हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने के कुछ घंटों बाद मृत पाए गए। रईसी 63 वर्ष के थे। सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने कुछ घंटों बाद घोषणा की कि ईरान के पहले उपराष्ट्रपति मोहम्मद मोखबर चुनाव होने तक देश के कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में काम करेंगे। खामेनेई ने पांच दिनों के सार्वजनिक शोक की भी घोषणा की।

भारत ने राष्ट्रपति रईसी के सम्मान में मंगलवार को एक दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की और पूरे भारत में राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा और राजकीय शोक के दौरान कोई आधिकारिक मनोरंजन नहीं होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, विदेश मंत्री एस जयशंकर और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिअर्जुन खड़गे ने ईरानी राष्ट्रपति रईसी के निधन पर दुख और दुख व्यक्त किया। मोदी ने कहा, 'दुख की इस घड़ी में भारत ईरान के साथ खड़ा है।' केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कहा कि पूरे भारत में उन सभी इमारतों पर राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा जहां इसे नियमित रूप से फहराया जाता है और राजकीय शोक की अवधि के दौरान कोई आधिकारिक मनोरंजन नहीं होगा। प्रवक्ता ने कहा, दिवंगत गणमान्य व्यक्तियों के सम्मान में, भारत सरकार ने निर्णय लिया है कि 21 मई (मंगलवार) को पूरे भारत में एक दिन का राजकीय शोक रहेगा। अधिकारी ने कहा, शोक के दिन पूरे भारत में उन सभी इमारतों पर राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा जहां राष्ट्रीय ध्वज नियमित रूप से फहराया जाता है और उस दिन कोई आधिकारिक मनोरंजन नहीं होगा। इस बीच, सरकारी टीवी ने ईरान के पूर्वी अज़रबैजान प्रांत में हुई दुर्घटना

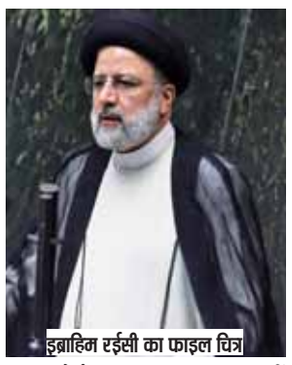

इब्राहिम रईसी का फाइल चित्र

का कोई तत्काल कारण नहीं बताया। मृतकों में 60 वर्षीय ईरानी विदेश मंत्री होसैन अमीराब्दुल्लाहियन भी शामिल थे। सरकारी आईआरएनए समाचार एजेंसी ने बताया कि हेलीकॉप्टर में ईरान के पूर्वी अजरबैजान प्रांत के गवर्नर, अन्य अधिकारी और अंगरक्षक भी सवार थे।

सोमवार की सुबह तुर्की के अधिकारियों ने ड्रोन फुटेज जारी किया, जिसमें जंगल में लगी आग दिखाई दे रही थी और उन्हें हेलीकॉप्टर का मलबा होने का संदेह था। फुटेज में आग को अज़रबैजान-ईरानी सीमा से लगभग 20 किलोमीटर दक्षिण में एक खड़ी पहाड़ी के किनारे दर्शा रहा था। आईआरएनए द्वारा सोमवार तड़के जारी किए गए फुटेज में दिखाया गया है कि एजेंसी ने हरी पर्वत श्रृंखला में एक खड़ी घाटी के पार दुर्घटना स्थल को क्या बताया है। ईरान द्वारा इस बात की पुष्टि करने के बाद कि दुर्घटना में कोई जीवित नहीं बचा है, पड़ोसियों और सहयोगियों की ओर से संवेदनाएँ आना शुरू हो गईं। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि भारत दुख की इस घड़ी में ईरान के साथ खड़ा है।

पाकिस्तान ने एक दिन के शोक की घोषणा की, जबकि मिस्र और जॉर्डन के नेताओं ने भी संवेदना व्यक्त की, साथ ही सीरिया के राष्ट्रपति बशर असद ने भी शोक व्यक्त किया। तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन ने अपनी संवेदना व्यक्त की। क्रेमलिन द्वारा जारी एक बयान में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने रईसी को रूस का सच्चा दोस्त बताया। खमेनेई, जिन्होंने खुद जनता से रविवार रात प्रार्थना करने का आग्रह किया था, ने जोर देकर कहा कि ईरान सरकार का कारोबार जारी रहेगा, (शेष पेज 9)

विदेशी दान पर आम आदमी पार्टी की मुश्किलें बढ़ीं

● पार्टी ने आरोपों का खंडन किया और केजरीवाल सरकार को बदनाम करने की नई साजिश करार दिया

राजेश कुमार। नई दिल्ली

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी, जिसके वह राष्ट्रीय संयोजक हैं, को एक और झटका देते हुए, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने आरोप लगाया है कि आम आदमी पार्टी (आप) को 2014 से 2022 तक विदेशी फंड के रूप में 7.08 करोड़ रुपये मिले और कथित तौर पर विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए), जन प्रतिनिधित्व अधिनियम (आरपीए) और भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) का उल्लंघन किया। केंद्रीय गृह मंत्रालय को सौंपे गए अपने दस्तावेज में ईडी ने खुलासा किया है कि आप को संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, ओमान और अन्य देशों में कई दानदाताओं से धन प्राप्त हुआ। ईडी के अनुसार राजनीतिक दलों को मिलने वाले विदेशी चंदे और पार्टी के आईडीबीआई बैंक खाते में सीधे आप को जमा किए जाने वाले विदेशी चंदे पर लगे प्रतिबंधों से बचने के लिए आप ने अपने खातों में विदेशी दानदाताओं की वास्तविक पहचान छिपाई है।

इस बीच आप ने सोमवार को विदेशी धन प्राप्त करने के आरोप का खंडन किया और इसे लोकसभा चुनावों के बीच केजरीवाल सरकार को बदनाम करने के लिए भाजपा की एक नई साजिश करार दिया। एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, आप नेता आतिशी और संदीप पाठक ने आरोप लगाया कि भाजपा पार्टी को निशाना बनाने के लिए एक पुराने मुद्दे को उठाने की कोशिश कर रही है और दावा किया कि दिल्ली में चुनाव नजदीक आने के साथ इस तरह के और भी आरोप सामने आएंगे। आरोपों का खंडन करते हुए आतिशी ने कहा, ये बेबुनियाद आरोप हैं। यह एक पुराना मामला है जहां यह पहले ही साबित हो चुका है कि कोई अवैध चंदा नहीं लिया गया। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि जैसे-जैसे चुनाव चल रहे हैं, भाजपा ने आम आदमी पार्टी को फंसाने के लिए एक नई साजिश रची है। वे हमें शराब घोटाले और स्वाति मालीवाल मामले में फंसाने में विफल रहे। इसीलिए उन्होंने अब यह मुद्दा खोला है।

वहीं ईडी की जांच से पता चला है कि कई दानदाताओं ने दान के लिए एक ही पासपोर्ट नंबर का इस्तेमाल किया है। आप को दान देने के लिए एक ही पासपोर्ट नंबर, ई-मेल आईडी, मोबाइल नंबर और क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल किया है। ईडी ने अपनी जांच से संबंधित सभी जानकारी केंद्रीय गृह मंत्रालय के साथ दानकर्ताओं के विवरण के साथ साझा की है, जैसे दानकर्ता के नाम, दानकर्ता का देश, पासपोर्ट नंबर, दान की गई राशि, दान का तरीका और प्राप्तकर्ता का बैंक खाता नंबर, बिलिंग नाम, बिलिंग पता, बिलिंग टेलीफोन नंबर, बिलिंग ई-मेल, दान का समय और तारीख और उपयोग किए गए (शेष पेज 9)

झुलसा देने वाली गर्मी से फिलहाल राहत के आसार नहीं

अर्चना ज्योति। नई दिल्ली

दिल्ली सहित उत्तर-पश्चिम भारत के निवासियों को भीषण गर्मी से कोई राहत मिलती नहीं दिख रही है, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने सोमवार को क्षेत्र में अगले पांच दिनों के दौरान भीषण लू की चेतावनी जारी की है। चूंकि दिल्ली के नजफगढ़ में तापमान 48 डिग्री सेल्सियस के खतरनाक स्तर के करीब पहुंच गया है और राष्ट्रीय राजधानी और उत्तर-पश्चिम भारत के व्यापक क्षेत्रों के लिए रेड अलर्ट जारी किया गया है, स्थिति की गंभीरता को कम नहीं किया जा सकता है। एयर कंडीशनर और डेजर्ट कूलर जैसे शीतलन उपकरणों के अत्यधिक उपयोग के कारण, मई में देश की चरम बिजली की मांग अनुमानित 235 गीगावॉट स्तर के करीब पहुंच गई है।

केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, बिजली की चरम मांग या दिन में सबसे ज्यादा आपूर्ति 6 मई को 233 गीगावॉट तक पहुंच गई है, जबकि एक साल पहले यह 221.42 गीगावॉट दर्ज की गई थी। आईएमडी ने कहा कि पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़-दिल्ली और पश्चिम राजस्थान में भीषण गर्मी की स्थिति बनी रहेगी। साथ ही, इस अवधि के दौरान उत्तरी मध्य प्रदेश और गुजरात में लू चलने की संभावना है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने कहा कि यह चरम मौसम

न केवल स्वास्थ्य जोखिम पैदा करता है बल्कि दैनिक जीवन को भी बाधित करता है और लोगों की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को चुनौती देता है। उन्होंने कहा, ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए, नागरिकों की भलाई की रक्षा करने और इस प्रचंड गर्मी के प्रभाव को कम करने के लिए तत्काल उपायों की आवश्यकता है। इस निरंतर गर्मी की लहर ने उत्तर प्रदेश के आगरा, उत्तरी मध्य प्रदेश के दतिया और राजस्थान के गंगानगर सहित अन्य क्षेत्रों को भी नहीं बख्शा है, जहां तापमान तेजी से बढ़ रहा है और तापमान 45 डिग्री सेल्सियस को पार करने की कगार पर है।

रविवार को सबसे अधिक तापमान दिल्ली के नजफगढ़ में 47.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। इसके बाद पश्चिमी उत्तर प्रदेश के आगरा में 47.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। ये स्थितियाँ पहले ही हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली में बड़े पैमाने पर देखी जा चुकी हैं, जिससे पंजाब और पश्चिम उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात और उत्तर-पश्चिम मध्य प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में काफी गर्मी पड़ रही है। इसके अलावा, पश्चिमी राजस्थान के कई हिस्सों और हिमाचल प्रदेश और पूर्वी राजस्थान के कुछ इलाकों में भीषण गर्मी पड़ रही है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और उत्तर-पूर्व मध्य प्रदेश के पृथक क्षेत्र भी प्रभावित हुए हैं। विशेष रूप से, गुजरात क्षेत्र 15 मई से हीट वेव की स्थिति को झेल रहा है, जबकि सौराष्ट्र और कच्छ 16 मई से प्रभावित हुए हैं। 17 मई से हीट वेव पंजाब, हरियाणा, (शेष पेज 9)

● लखनऊ में सबसे कम 52.23 और बाराबंकी में सबसे अधिक 67.10 प्रतिशत मत पड़े

यूपी की 14 लोकसभा सीटों पर 57.98 प्रतिशत मतदान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पांचवे चरण में प्रदेश की 14 लोकसभा सीटों पर चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। शाम छह बजे तक की सूचना के मुताबिक 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में कुल औसत 57.98 प्रतिशत मतदान हुआ है। सबसे अधिक मतदान बाराबंकी 67.10 प्रतिशत हुआ है जबकि राजधानी लखनऊ में सबसे कम 51.23 प्रतिशत मत पड़े हैं। जिसमें मोहनलालगंज (अ.जा.) 62.72, लखनऊ 52.23, रायबरेली 58.04, अमेठी 54.40, जालौन(अ.जा.) 56.15, झांसी 63.70, हमीरपुर 60.56, बांदा 59.64, फतेहपुर 57.05, कौशाम्बी(अ.जा.) 52.79, बाराबंकी(अ.जा.) 67.10, फैजाबाद 59.10, कैसरगंज 55.68, गोण्डा 51.64 तथा विधानसभा उप निर्वाचन क्षेत्र लखनऊ पूर्व में 52.45 प्रतिशत मतदान हुआ।

प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने प्रेसवार्ता में बताया कि 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों तथा विधानसभा उप निर्वाचन क्षेत्र लखनऊ पूर्व में मतदान शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो गया है। मतदान प्रात: 7 बजे से शुरू होकर सायं 6 बजे समाप्त हुआ। मुख्य

निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मतदान की प्रक्रिया को स्वतंत्र एवं निष्पक्ष बनाये रखे जाने के उद्देश्य के लिए प्रभावी पर्यवेक्षण हेतु 14,984 मतदेय स्थलों पर वेबकास्टिंग की व्यवस्था की गई, जिसका पर्यवेक्षण जिला निर्वाचन अधिकारी, मुख्य निर्वाचन अधिकारी एवं भारत निर्वाचन आयोग तीनों स्तर पर किया गया। उक्त के अतिरिक्त 4,199 मतदेय स्थलों पर वीडियोग्राफी की भी व्यवस्था की गई थी। पांचवें चरण के पोस्टल बैलेट मतदान के लिए अर्ह श्रेणियां (यथा- 85 वर्ष की आयु से अधिक के मतदाता, दिव्यांग, अनिवार्य सेवायें तथा मतदान कार्मिक) में 21,907 मतदाताओं द्वारा पोस्टल बैलेट के माध्यम से मतदान किया गया। 85 वर्ष की आयु से अधिक के मतदाता एवं दिव्यांग मतदाताओं में जिनके द्वारा पोस्टल बैलेट का विकल्प चुना गया था, उनके घर पर जाकर मतदान दल द्वारा मतदान कराया गया। प्रक्रिया को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं पारदर्शी बनाये जाने हेतु मतदान दल के साथ एक माइक्रो आब्जर्वर तथा वीडियोग्राफर की तैनाती की गई थी एवं प्रत्याशियों को सम्पूर्ण प्रक्रिया को देखने के लिए स्वयं अथवा अपने अभिकर्ता को भेजने के लिए मतदान दल का शिड्यूल उपलब्ध कराया गया था एवं इस श्रेणी के अर्ह मतदाताओं की सूची भी प्रत्याशियों को उपलब्ध कराई गई थी। इस मतदान प्रक्रिया की पूरी वीडियोग्राफी कराई गई है। इसके अतिरिक्त कुल 32,250 सेवा मतदाताओं को भी रिटर्निंग अधिकारी द्वारा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से (ईटीपीबीएस) पोस्टल बैलेट का प्रेषण किया गया। 29,005 कार्मिकों को ईडीसी जारी किया गया है। मतदान पर सतर्क दृष्टि रखने के लिए आयोग द्वारा 14 सामान्य प्रेक्षक, 9 पुलिस प्रेक्षक तथा 15 व्यय प्रेक्षक भी तैनात किये गये थे। उक्त के अतिरिक्त 2,416 सेक्टर मजिस्ट्रेट, 327 जोनल मजिस्ट्रेट, 549 स्टैटिक मजिस्ट्रेट तथा 3,619 माइक्रो ऑब्जर्वर भी तैनात किये गये थे। इसके अतिरिक्त भारत निर्वाचन आयोग द्वारा राज्य स्तर पर एक वरिष्ठ सामान्य प्रेक्षक, 1 वरिष्ठ पुलिस प्रेक्षक तथा 1 वरिष्ठ व्यय प्रेक्षक भी तैनात किये गये थे, जिनके द्वारा क्षेत्र में रहकर सम्पूर्ण निर्वाचन प्रक्रिया का पर्यवेक्षण किया गया। आज 20 मई, 2024 को मतदान के दौरान कतिपय शिकायतें प्राप्त हुई, जिन्हें जनपद के अधिकारियों से ससमय निस्तारण कराया गया। चुनाव में सभी 28,688 मतदेय स्थलों (पोलिंग बूथों) के लिए मतदान के लिए आवश्यक ईवीएम एवं वीवीपैट तथा अलग-अलग जनपदों में पर्याप्त मात्रा में रिजर्व ईवीएम एवं वीवीपैट की व्यवस्था की गई थी एवं मतदान के दौरान जहां कहीं भी शिकायत प्राप्त हुई हैं, वहां तत्काल प्रभावी कार्यवाही करते हुए ईवीएम एवं वीवीपैट को बदलने की कार्यवाही की गई है। जनपदों से प्राप्त सूचना के अनुसार पाँचवें चरण के 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के मॉक पोल के दौरान कुल 167 बीयू, 268 सीयू एवं 349 वीवीपैट बदले गये एवं मतदान प्रारम्भ होने के पश्चात सायं 6 बजे तक कुल 67 बीयू, 67 सीयू एवं 238 वीवीपैट बदले गये। विधानसभा उप निर्वाचन क्षेत्र लखनऊ पूर्व में मॉकपोल के दौरान 6 बीयू, 2 सीयू तथा 11 वीवीपैट बदले गये। मतदान प्रारम्भ होने के पश्चात सायं 6 बजे तक कोई बीयू, सीयू, वीवीपैट बदले नहीं गये। चुनाव को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने हेतु पर्याप्त मात्रा में अर्द्ध सैनिक बलों की तैनाती की गई थी। ईवीएम के स्ट्रांग रूम की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी अर्धसैनिक बलों को दी गई है। चुनाव पूर्ण रूप से शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराया गया एवं किसी अप्रिय घटना की कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है।

आप व कांग्रेस का गठबंधन जनकल्याण नहीं, लूट-खसोट के लिए बना: मुख्यमंत्री

● चंडीगढ़ की जनसभा में बोले सीएम योगी, कांग्रेस इस लायक भी नहीं बची कि 400 सीटों पर चुनाव लड़ सके

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ चंडीगढ़

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि पूरे देश में फिर एक बार मोदी सरकार और अबकी बार 400 पार के नारे एक स्वर में गूंज रहे हैं। देश ही नहीं दुनिया भी आश्वस्त है कि 4 जून को क्या परिणाम आने जा रहा है। मगर कांग्रेस को उसके कारनामों के कारण देश ने इस हाल में भी नहीं छोड़ा है कि वह 400 सीटों पर चुनाव ही लड़ सके।

बीजेपी के स्टार प्रचारक और यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ सोमवार को यहां मलोया क्षेत्र में बीजेपी प्रत्याशी संजय टंडन के पक्ष में चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पंजाब में जहां माफिया का बोलबाला दिखता है वहीं यूपी में हमने ऐसे तत्वों को उलटा टांग दिया है और आज उनकी कब्र पर कोई मर्सिया पढ़ने वाला भी नहीं है। योगी ने कहा कि आप और कांग्रेस का गठबंधन जनकल्याण के लिए नहीं, बल्कि लूट-खसोट के लिए बना है। योगी आदित्यनाथ ने अपने भाषण की शुरूआत करते हुए कहा कि वह मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की जन्मभूमि से आए हैं और जगत जननी मां भगवती चंडी देवी तथा माता मंशा देवी के पावन

दरबार को कोटि कोटि नमन करते हैं। योगी ने चंडीगढ़ को गुरुओं की साधना और उनकी भक्ति और शक्ति के अद्भुत संगम स्थल बताते हुए जनता का अभिवादन किया। उन्होंने कहा कि जनता कह रही है कि जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे। क्योंकि जो राम का है वही राष्ट्र का है और जो राम का नहीं है वह किसी काम का नहीं है। कांग्रेस के बुद्धिदाता कहते हैं कि भारत में राममंदिर नहीं बनना चाहिए था। उन्हें ये बात पहले कांग्रेस को ही कहना चाहिए था ताकि कांग्रेस ही राममंदिर इटली में बनवा देती। विनाश काले विपरीत बुद्धि, कांग्रेस में यही दिख रहा है। योगी ने कहा कि इंडी गठबंधन वाले नेता पहले न्यायालय को धमकाते थे कि राममंदिर पर फैसला हुआ तो दंगे हो जाएंगे, खून की नदियां बह जाएंगी। हमने कहा यूपी में अब दंगा नहीं होगा, कोई दंगा करेगा तो उसको उलटा टांग देंगे उसको। मैंने कहा था कि राममंदिर पर फैसला जिस दिन होगा वो ब्रह्मांड का सबसे शांत दिन होगा। यूपी में अब दंगे नहीं होते हैं। अब यूपी में सड़क पर नमाज नहीं होती और मस्जिदों से लाउडस्पीकर भी उतर चुके हैं। अब सब शांति से रहना चाहते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश पर जब भी संकट आया है सबसे पहले राहुल गांधी विदेश भागते हैं। उन्होंने कहा कि यद्यपि ये लोग ही संकट देने वाले हैं। इन्होंने आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार जैसे संकटों को भारत को देने का कार्य किया है। इस सदी के सबसे बड़े संकट कोरोना में वह कहीं नजर नहीं आए। न चंडीगढ़ में दिखे न यूपी में। तब केवल बीजेपी के कार्यकर्ता जनता की सेवा में थे। एक करोड़ प्रवासी यूपी में आए थे, जो अलग अलग राज्यों में जाने वाले थे। उन्हें उनके घरों तक पहुंचाने के लिए हमने तब 14 हजार बसें लगाई थी।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कांग्रेस को वोट देकर पाप के भागीदार नहीं बनना है। अच्छा जनप्रतिनिधि चुनने पर हमें पुण्य प्राप्त होता है। आज भारत यशस्वी बन रहा है। दुनिया में सम्मान बढ़ रहा है। आतंकवाद, नक्सलवाद और अराजकता का समाधान हुआ है। पहले आतंकी विस्फोट होते थे, निर्दोष भारतीय मारे जाते थे। संसद में जब मुद्दे को उठाता था तो कांग्रेस कहती थी आतंकवाद सीमापार से है। अब जोर से पटाखा भी फूट जाए तो पाकिस्तान भी सफाई देने लगता है। उसे पता है कि ये नया भारत है। छेड़ेंगे तो छोड़ेगा नहीं। योगी ने कहा कि 12 साल पहले जब वह दिल्ली से चंडीगढ़ आए थे तो उन्हें 10 घंटे का समय लगा था, मगर अब 3 घंटे में दिल्ली से चंडीगढ़ पहुंच सकते हैं। कांग्रेस के एक प्रधानमंत्री ने वक्तव्य दिया था कि 100 पैसा देते हैं मगर 15 पैसा ही गरीब तक पहुंचता है। इसका मतलब बीच में कांग्रेस के बिचौलिए शेष 85 पैसे खा जाते थे। मोदी ने जनधन एकाउंट खोल दिया आज 100 परसेंट लाभार्थी के खाते में सीधे पहुंच रहा है। एक लंबी फेहरिस्त है लोककल्याण की। गरीबों, वंचितों का बिना चेहरा, जाति, धर्म देखे योजनाओं का लाभ दिया गया। उन्होंने कहा कि अयोध्या में 500 साल का इंतजार समाप्त हो चुका है। सभी को अयोध्या में आकर भगवान श्रीराम के दर्शन करने चाहिए। उन्होंने बताया कि मंदिर से भी पहले अयोध्या में इंटरनेशनल एयरपोर्ट को बनाने के साथ ही उसका नामकरण महर्षि वाल्मीकि के नाम पर किया गया। वाल्मीकि समाज जरूर अयोध्या आए और वहां की दिव्यता की अनुभूति करे। राममंदिर का निर्माण आपके एक वोट की ताकत से हुआ है। आपके वोट की ताकत से ही मोदी जी को कड़े फैसले लेने की शक्ति मिलती है। हर व्यापारी और बेटी की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

काशी में आज 25 हजार महिलाओं से सीधा संवाद करेंगे पीएम मोदी

● अनेकता में एकता का दिखेगा संगम, सीएम योगी भी रहेंगे मौजूद

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ वाराणसी

मातृशक्ति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रोड शो में अहम भूमिका निभाई थी। प्रधानमंत्री ने इन महिलाओं के प्रति आभार जताने के लिए इनसे मिलने की इच्छा जताई थी। इसे पूरा करने के लिए मंगलवार को प्रधानमंत्री 'अपनी काशी' में लगभग 25 हज़ार महिलाओं से सीधा संवाद करेंगे। डॉ. संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में शाम को नारी शक्ति संवाद कार्यक्रम आयोजित होगा। इसमें संचालन, मंच, व्यवस्था समेत संपूर्ण दायित्व मातृशक्ति ही संभालेंगी। प्रधानमंत्री अपने क्षेत्र में विशेष काम कर रहीं महिलाओं, स्वयं सहायता समूह की खास महिलाओं और भाजपा की महिला पदाधिकारियों से मुलाकात करेंगे। नारी शक्ति संवाद कार्यक्रम में लघु भारत का स्वरूप भी देखने को

मिलेगा। मंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी रहेंगे। कार्यक्रम में सिर्फ महिलाएं ही दिखेंगी। पीएम दो दिवादीय यात्रा पर 21 मई को काशी पहुंचेंगे व 22 मई की सुबह रवाना होंगे।

वाराणसी में यह अलग तरह का कार्यक्रम हो रहा है। इसके जरिए शिव की काशी से नारी शक्ति का संदेश पूरे भारत में जाएगा। इसमें सभी दायित्व मातृशक्ति के कंधे पर रहेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 25,000 से अधिक महिलाओं से संवाद भी करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोकसभा चुनाव के नामांकन के बाद एक सप्ताह के अंतराल में अपने संसदीय क्षेत्र काशी में आ रहे हैं। यह कार्यक्रम खुद प्रधानमंत्री के नारी शक्ति से संवाद करने की इच्छा प्रकट पर आयोजित किया जा रहा है। समाज के विभिन्न वर्गों की महिलाओं को इस कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया है। नारी शक्ति संवाद कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को रिसीव करने, मंच संचालन, व्यवस्था समेत संपूर्ण दायित्व मातृ शक्ति के कंधे पर ही है। पंडाल में मिनी भारत का स्वरूप भी दिखाई देगा। मराठी, बंगाली, दक्षिण भारतीय आदि प्रांत की वाराणसी में रहने वाली महिलाएं अपने अलग-अलग परिधान में दिखेंगी। इनमें डॉक्टर, शिक्षिका, गृहिणी, अधिवक्ता, खिलाड़ी, व्यापारी समेत सभी वर्ग की महिलाएं भी शामिल रहेंगी। भाजपा महिला मोर्चा की तरफ से कार्यक्रम की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। लोकसभा प्रभारी अर्चना मिश्रा एवं मीना चौबे, भाजपा महिला मोर्चा की क्षेत्रीय अध्यक्ष नम्रता चौरसिया, महानगर अध्यक्ष कुसुम सिंह पटेल, जिलाध्यक्ष विनीता सिंह, निर्मला सिंह पटेल, महामंत्री प्रज्ञा पांडेय समेत पूरी टीम कार्यक्रम को यादगार बनाने की तैयारी में जुटी है।

अब मोदी की गारंटी पर नहीं रहा भरोसा: कांग्रेस

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कांग्रेस ने कहा है कि आज देश में पांचवे चरण के चुनाव सम्पन्न हो चुके हैं, और जिस तरह से देश और उत्तर प्रदेश की जनता ने पिछले 10 साल की भाजपा एवं नरेन्द्र मोदी की नीतियों एवं गारंटियों को नकारते हुए वोट के रूप में इंडिया गठबंधन को अपना प्यार और समर्थन दिया है इससे निश्चित रूप से देश में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने जा रही है।

उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी मीडिया विभाग के चेयरमैन व पूर्व मंत्री डॉ. सीपी राय ने कहा कि अब देश एवं प्रदेश के किसान, मजदूर, युवा, महिलाओं का भरोसा मोदी की गारंटी पर नहीं रहा। क्योंकि जिस तरह से पिछले 10 सालों में युवाओं को प्रतिवर्ष 2 करोड़ रोजगार का झूठ वादा, किसानों की आय दोगुनी, करने तथा महंगाई पर अंकुश लगाने में में विफल साबित रही है। डॉ. राय ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश में 14 लोकसभा सीटों पर चुनाव सम्पन्न हो गये हैं और 9 सीटों पर इंडिया गठबंधन जीत हासिल कर भाजपा को करारी शिकस्त देगा तथा अन्य सीटों पर कांटे की टक्कर है और आगे के चरणों के चुनाव में भी इस प्रदेश की जनता महंगाई, बेरोजगारी, के खिलाफ वोट की चोट करते हुए इंडिया गठबंधन को अपना प्यार और समर्थन देने जा रही है। उन्होंने कहा कि अब प्रदेश की जनता भाजपा की झूठे वादों और जुमलों में आने वाली नहीं है अब वह कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे एवं जननायक राहुल गांधी तथा कांग्रेस के घोषणा पत्र 'न्याय पत्र' की 5 गारंटी एवं 25 न्याय पर भरोसा जताते हुए मतदान कर रही है।

इंडी गठबंधन के किसी भी घटक दल की निष्ठा भारत में नहीं: योगी

● हरियाणा के कुरुक्षेत्र में योगी ने कहा, बांग्लादेश, पाक और अफगानिस्तान से आए रोहिंग्याओं को आपकी संपत्ति दें देंगे कांग्रेस वाले

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

हरियाणा के चुनावी समर में उतरे भाजपा के स्टार प्रचारक व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सोमवार को कांग्रेस की नीतियों पर खूब फायर रहे। उन्होंने कुरुक्षेत्र लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार नवीन जिंदल के पक्ष में न्यू अनाज मंडी में विजय

संकल्प रैली की। योगी ने कुरुक्षेत्र की धरा को प्रणाम किया। फिर बोले कि कमल के फूल पर बटन दबाकर 'अबकी बार-400 पार' और 'फिर एक बार मोदी सरकार' बनाना है। अयोध्या का जिक्र कर सीएम ने कहा कि हमने रात-रात भर जगकर अयोध्या को अयोध्या बनाया है। आजाद भारत की पहली सरकार है, जिसने आस्था को सम्मान दिया है।

योगी ने कहा कि अब कोई दुश्मन हमारी सीमा में घुसपैठ नहीं कर सकता है। अब आतंकी विस्फोट नहीं होते, पहले हर जिले, क्षेत्र, प्रदेश में विस्फोट से निर्दोष मारे जाते थे। कांग्रेस शासन में सुबह की शुरुआत घोटाले और शाम होते-होते आतंकी वारदात की बड़ी खबरें आती थीं, लेकिन अब भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक व एयर स्ट्राइक के माध्यम से विश्व को अपनी ताकत का अहसास कराया है। हम शांति और सौहार्द के पक्षधर हैं, लेकिन शांति केवल बोलने से नहीं, ताकत से हासिल की जाती है। सीएम योगी ने कहा कि आम आदमी पार्टी की शुरुआत और शाम का अंत भी झूठ से होता है। अन्ना जी ने भ्रष्टाचार हटाने के लिए कांग्रेस के खिलाफ आंदोलन किया था। आप का गठन इसी के पक्ष में था, लेकिन आम आदमी पार्टी उसी कांग्रेस के साथ मिलकर लूटने चली है। इन लोगों ने देश की राजधानी दिल्ली को तबाह-बर्बाद कर दिया। यह मूल्यों-आदर्शों से हटकर देश की कीमत पर राजनीति और देश के संसाधनों को लूटवाकर अराजकता पैदा करना चाहते हैं। योगी ने कहा कि 25 करोड़ के यूपी में पहले सरकार कमजोर और माफिया हावी थे। उनकी समानांतर हुकूमत चलती थी। आज हमने सभी अपराधियों व माफिया को जहन्नुम में पहुंचा दिया। उनका राम नाम सत्य हो गया। यूपी में बेटी-व्यापारी की सुरक्षा से खिलवाड़ करने वालों के लिए जेल नहीं, जहन्नुम के रास्ते खुले हैं। यूपी में आज 14 सीटों पर चुनाव हो रहा है। मुझे पता है कि सभी सीटें हमारे पास आनी है, इसलिए मैं हरियाणा प्रचार करने आया हूं। प्रभु की कृपा, मोदी का नाम और जमीन पर हमारे काम की बदौलत जनता परिणाम दे रही है। सीएम ने आम आदमी पार्टी को खूब धोया, बोले कि पंजाब में गैंगस्टर खड़े होकर फिर से गैंगवार कर रहे हैं। वहां लोग कह रहे हैं कि हालत खराब हो गए हैं।

पांचवें चरण में भाजपा का पूरी तरह से सफाया: राजेन्द्र चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी ने कहा है कि पहले ही चार चरणों में लोकसभा चुनाव के मतदान में प्रदेश के मतदाताओं ने समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन को भारी बहुमत देकर भाजपा को चारो खाने चित कर दिया है। सोमवार 20 मई पांचवें चरण के मतदान में मतदाताओं ने समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन को भारी बहुमत देकर भाजपा का पूरी तरह से सफाया कर दिया है। पांचवे चरण के चुनाव में आज मोहनलालगंज, लखनऊ, रायबरेली, अमेठी, जालौन, झांसी, हमीरपुर, बांदा फतेहपुर, कौशाम्बी, बाराबंकी, फैजाबाद, गोण्डा एवं कैसरगंज लोकसभा क्षेत्रों में मतदाताओं ने भाजपा को पूरी तरह से नकार दिया है। भाजपा की सरकार में पूरे प्रदेश में समाज का हर वर्ग आज अपने को अपमानित और उत्पीड़ित महसूस कर रहा है। किसान, नौजवान अपने को ठगा महसूस कर रहा है। उनकी जिंदगी में अंधेरा है। भर्ती परीक्षा के पेपर लीक से नौकरी मिलने की उम्मीदों पर पानी फिर गया है। नौजवान हताश-निराश है। व्यापारी नोटबंदी-जीएसटी के शिकार है। शासन-प्रशासन की अकर्मण्यता से लोगों में बहुत आक्रोश है। अखिलेश यादव और राहुल गांधी की जनसभाओं में जनसैलाब उमड़ रहा है। यह जनसैलाब सत्ता परिवर्तन का आगाज है। देश और प्रदेश का मतदाता एकजुट होकर समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों को भारी मतों से जिताने के लिए स्वत: स्फूर्त तरीके से विभिन्न जनसभाओं में आ रहा है। मतदाताओं के जनसैलाब को देखकर भाजपा डरी हुई है। वह प्रशासन के सहारे जनता में भय व्याप्त कर रही है। भाजपा संविधान और लोकतंत्र को कुचल रही है। यह अजीब विडम्बना है कि मतदान के हर चरण में ईवीएम भारी संख्या में खराब हो रही है। ईवीएम खराब होने से मतदान का प्रतिशत कम हो रहा है।

सातवें चरण में जनता का गुस्सा सातवें आसमान में दिखाई देगा: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि इस बार के लोकसभा चुनाव में जनता सारी बाधाएं तोड़कर इंडिया गठबंधन के पक्ष में मतदान करने निकल पड़ी है। उम्मीद से ज्यादा समर्थन दे रही है। भाजपा ने नौजवानों का भविष्य बर्बाद किया है, किसानों को धोखा दिया है। हर चुनाव में जनता का गुस्सा बढ़ता जा रहा है। सातवें चरण में तो जनता का गुस्सा सातवें आसमान में दिखाई देगा। तय है कि भाजपा सरकार बदलेगी, मंत्रिमंडल भी बदलेगा। अखिलेश यादव ने आज डुमरियागंज लोकसभा क्षेत्र में इंडिया गठबंधन समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी भीष्म शंकर तिवारी, संतकबीरनगर से प्रत्याशी लक्ष्मीकांत और बस्ती से

प्रत्याशी राम प्रसाद चौधरी के समर्थन में आयोजित चुनावी जनसभाओं को सम्बोधित करते हुए भारी मतों से इन्हें जिताने की अपील की। यादव ने कहा देश में इंडिया गठबंधन की हवा चल रही है। पांच चरणों के चुनाव में भाजपा की हालत खराब हो गई है। जनता ने भाजपा की नफरत और नकारात्मक राजनीति को नकार दिया है। इस चुनाव में देश की 140 करोड़ जनता भाजपा को 140 सीटों के लिए तरसा देगी। भाजपा ने 10 साल की सरकार में हर वर्ग को परेशान किया। महंगाई बढ़ाकर चरम पर पहुंचा दिया है। डीजल, पेट्रोल, गैस सिलेंडर से लेकर दवाई पढ़ाई सब चीजों के दाम बढ़ा दिए। साइकिल से लेकर मोटरसाइकिल तक सब कुछ महंगा हो गया। भाजपा सरकार ने इलेक्ट्रोरल बांड के नाम पर भारी भ्रष्टाचार किया। पूरे देश में उद्योगपतियों से और कंपनियों से जमकर वसूली की, भाजपा की वसूली के कारण भी महंगाई बहुत बढ़ गई। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार की हर बात झूठी निकली। इस सरकार ने जनता से झूठे वादे किए। किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई। किसान पर कर्ज बढ़ा है। नौजवानों को नौकरी रोजगार नहीं मिला। भाजपा सरकार युवाओं को नौकरी और रोजगार नहीं देना चाहती है। इसीलिए भर्ती परीक्षाओं के 10 पेपर जानबूझकर लीक करा दिये। जिससे कि नौजवानों को नौकरी और आरक्षण न देना पड़े। यादव ने कहा कि खेती के उत्पादन का लागत मूल्य बढ़ गया लेकिन किसानों को उनकी फसलों का सही दाम नहीं मिला। इस सरकार ने उद्योगपतियों का 25 लाख करोड़ का कर्ज माफ कर दिया, लेकिन किसानों की कोई मदद नहीं की। भाजपा सरकार किसानों की जमीन और फसल छीनने के लिए तीन काले कानून लाई थी।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

मैने अपना नाम शेख राजऊ अली से बदलकर शेख राजू अली पुत्र शेख रऊफ अली पता 20/19 बिरहाना रोड चटाई मोहल कानपुर भविष्य के लिए कर लिया है।

सूचना

मैने अपना नाम अंकित से बदलकर अंकित रावत पुत्र राकेश कुमार पता ग्राम धौरा उन्नाव भविष्य के लिए कर लिया है।

सूचना

मैने अपना नाम नयनिका सिंह से बदलकर नयनिका सिंह सेंगर पुत्री प्रभात सिंह सेंगर पता 7-A न्यू आजाद नगर कल्याणपुर कानपुर भविष्य के लिए कर लिया है।

IDBI BANK
CIN-L65190MH2004GOI148838

पंजीकृत कार्यालय : आईडीबीआई टावर, डब्ल्यूटीसी कॉम्पलेक्स, कफ परेड, कोलाबा, मुम्बई-400005
आंचलिक कार्यालय : सी.पी. 12, विराज खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
शाखा : इन्द्रा नगर, लखनऊ (उ.प्र.)

कब्जा सूचना

एतद्द्वारा वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्गठन एवं प्रतिभूति-हित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002 (2002 का 54) के अंतर्गत और प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नोटिस दिया गया है। बैंक ने निम्न उधारकर्ता/सह-उधारकर्ता/गारंटीदाताओं/बन्धककर्ता को उनके नामों के सामने दर्शायी गई तारीख को उपरोक्त अधिनियम की धारा 13(2) के तहत मांग सूचना जारी की कि उपर्युक्त नोटिस की प्राप्ति की तारीख से 60 दिन के भीतर नोटिस में वर्णित राशि को चुकता कर दें। चूंकि वे उपर्युक्त राशि को चुकता नहीं कर पाए, अत: उन्हें और आम जनता को एतद्द्वारा सूचना दी जाती है कि अधोहस्ताक्षरी ने उपर्युक्त नियमों के नियम 8 के साथ पठित उपर्युक्त (अधिनियम) की धारा 13(4) के अंतर्गत प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए उधारकर्ता के उसके (उनके) नाम के सामने दर्शायी गई तारीख को नीचे वर्णित संपत्ति का कब्जा ले लिया है। विशेषकर उधारकर्ता/सह-उधारकर्ता/ गारंटीदाताओं/ बन्धककर्ता और सामान्य तौर पर आम जनता को एतद्द्वारा सतर्क किया जाता है कि वे ऐसी संपत्ति का सौदा न करें, ऐसी संपत्ति के सौदे पर नीचे वर्णित राशि और उस पर भविष्य के ब्याज व प्रभार **आईडीबीआई बैंक लिमिटेड** के प्रभार के अधीन होंगे। ऋणियों का ध्यान धारा 13 की उपधारा (8) की ओर आकृष्ट किया जाता है, जो प्रतिभू आस्तियों की पुनर्वापसी से सम्बंधित है

क्र. सं.	ऋणी/सह-ऋणी/जमानतगीर एवं संपत्ति मालिक का नाम	मांग सूचना की दिनांक	कब्जा की दिनांक	सम्पत्ति का विवरण	सूचना 13(2) में दर्शायी गई बकाया राशि
1.	मेसर्स न्यू ज़ाब ऋणी- श्री अज़हर अहमद खाँन	19.12.2023	16.05.2024	अचल संपत्ति एक प्लॉट के सभी भाग व खण्ड, खसरा नं. 586 का हिस्सा सहित, क्षेत्रफल- 1669.50 वर्ग फीट अर्थात 155.16 वर्ग मी. स्थित रहीम नगर, वार्ड- महानगर, जिला- लखनऊ (उ.प्र.)- 226020 चौहद्दी : पूरब- अन्य मकान, पश्चिम- पिकनिक स्पॉट रोड, उत्तर- खसरा नं. 586 का शेष भाग, दक्षिण- सुरेन्द्र व अन्य का प्लॉट	रु. 14,52,151/- (रु. चौदह लाख बावन हजार एक सौ इक्यावन मात्र) और उस पर ब्याज व अन्य व्यय

* समेत धरती से जुड़े सभी यंत्र-संयंत्र अथवा धरती से जुड़ी किसी भी वस्तु से बंधी हुई तथा धरती पर निर्मित भवन व संरचनाएँ।

दिनांक: 21.05.2024 स्थान : लखनऊ प्राधिकृत अधिकारी, आईडीबीआई बैंक लिमिटेड

लोकतंत्र के महापर्व में आहुति देने निकली जनता

इन राजनेताओं ने डाले वोट

ब्यूरोक्रेट्स ने परिवार संग किया अपने मत का प्रयोग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोकतंत्र के इस महापर्व में हम सब की भागीदारी एक नैतिक जिम्मेदारी है। मतदान से हम सिर्फ सरकार को ही नहीं चुनते, बल्कि अपनी दिशा व दशा तय करते हैं। वोट से आने वाले परिणाम को हम जनादेश यानी जन का आदेश कहते हैं। कुछ इसी मंसूबे के साथ अपना जनप्रतिनिधि चुनने के लिए सोमवार को लखनऊ और मोहनलालगंज संसदीय सीट के लिए आम जनता से लेकर राजनेता और ब्यूरोक्रेट्स ने लोकतंत्र के महापर्व में अपनी आहुति दी।

राजधानी में सुबह के प्रथम राउंड से ही मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की भारी संख्या देखी गयी। बड़ी संख्या में लोग 7 बजे से 10 बजे तक वोटिंग करते नजर आए। लेकिन जैसे जैसे पारा ऊपर चढ़ता गया मतदाताओं की लाइनें छोटी होती रही। जिला निर्वाचन अधिकारी सूर्य पाल गंगवार स्वयं वोटिंग प्रतिशत पर नजर बनाए हुए थे, यही नहीं कई मतदाताओं की रुचि को देखकर प्रभावित हुए। एक बुजुर्ग महिला की व्हील चेयर को स्वयं मतदान केंद्र के बूथ तक पहुंचाते दिखे। लेकिन जिला निर्वाचन कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार लोकसभा क्षेत्र लखनऊ में अपराह्न 3 बजे तक 41.90 प्रतिशत मतदान ही हुआ था। इसके बाद जिला निर्वाचन अधिकारी ने एक बयान जारी कर मतदाताओं से घर से निकलने और मतदान करने की अपील की। जिसके बाद लोकसभा क्षेत्र लखनऊ में सायंकाल 5 बजे तक 49.88 प्रतिशत मतदान प्रतिशत पहुंच सका, जिसमें दो घंटों के भीतर मात्र 8 प्रतिशत मतदान की ही वृद्धि हुई। मतदान प्रतिशत में गिरावट आने के बाद आखिरी घंटे में मतदान प्रतिशत को बढ़ाने के लिए जनप्रतिनिधियों की ओर से बयान जारी किये गये।

ब्यूरोक्रेट्स ने भी ड्यूटी संग निभाया फर्ज

लोकसभा क्षेत्र के अवध डिग्री कालेज में बनाये गये मतदान केन्द्र में मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने मतदान किया। मतदान करने के बाद मुख्य सचिव ने पांचवें चरण के मतदाताओं से मतदान करने की अपील की। इसी तरह प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री व सूचना संजय प्रसाद ने अपने पत्नी पूजा प्रसाद एवं बेटी संजना के साथ मतदान किया। मुख्यमंत्री के सलाहकार और पूर्व आईएएस अवनीश अवस्थी और उनके पत्नी मालिनी अवस्थी अपने परिवार के साथ गोमती नगर के विकास नगर स्थित मतदान केन्द्र पहुंचें। मतदान केन्द्र पर परिवार के सभी सदस्यों ने मतदान किया। इसके बाद मालिनी अवस्थी ने अवनीश अवस्थी सहित परिवार के सदस्यों की सेल्फी ली।

उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने पत्नी के साथ लखनऊ लोकसभा क्षेत्र में रामआसरे पुरवा हुसडिया स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय में मतदान किया। मतदान के बाद पुलिस महानिदेशक ने कहा कि लोकसभा चुनाव के पांचवे चरण में सुबह से अभी तक सकुशल मतदान हो रहा है। पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने कहा कि प्रदेश के 21 जनपदों में 14 संसदीय क्षेत्र में मतदान शांति पूर्वक चल रहा है। पूर्व में भी चार चरणों में भी मतदान शांति पूर्ण सम्पन्न हुआ है। मतदान केंद्रों पर सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। 10 हजार संख्या में निरीक्षक, उपनिरीक्षक और पुलिस अधिकारियों को पांचवें चरण में तैनात किया गया है। उन्होंने कहा कि मतदाताओं में बेहद उत्साह है। उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के पांचवें चरण के अंतर्गत सोमवार को राजधानी लखनऊ में हॉल-ए सीएसआई टॉवर, विपिनखण्ड, गोमतीनगर के बूथ 338 पर मतदान किया। इस मौके पर पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने बताया कि मल्टी स्टोरी बिल्डिंगों में रहने वाले मतदाताओं के लिए विशेष केन्द्र बनाए गए हैं। उप्र में यह प्रयोग किया गया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग मतदान कर सकें। इसके तहत नोएडा, गाजियाबाद, बरेली और लखनऊ जैसे शहरों में मल्टी स्टोरी बिल्डिंगों के मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया गया है। आईएनडीआई गठबंधन प्रत्याशी रविदास मेहरोत्रा ने सोमवार को मतदान देने के बाद कहा कि मेरे सामने कोई चुनौती नहीं है। मेरा चुनाव जनता लड़ रही है। पांच वर्षो तक सांसद को किसी ने नहीं देखा है। रविदास मेहरोत्रा ने कहा कि कोरोना के वक्त लखनऊ में जब पीड़ित रहे। जब हजारों लोग बिना आक्सीजन,दवा के मर रहे थे,उस वक्त भी सांसद लखनऊ नहीं आये। किसी व्यक्ति ने अपने सांसद को कहीं पर नहीं देखा। मैं यहीं का स्थानीय निवासी हूं और लोगों के सुख में दुग्ख में साथ रहता हूं। मेरे लिए हर व्यक्ति मेरा अपना है। आईएनडीआई गठबंधन प्रत्याशी ने कहा कि शहर के मतदाताओं से शत-प्रतिशत मतदान करने की अपील करता हूं। जो मतदाता भाई-बहन अभी तक अपने घर से नहीं निकले हैं, वो मतदान करने अवश्य जायें। मतदान करने के लिए निकलते हुए पर्ची और भारत निर्वाचन आयोग का अपना परिचय पत्र अवश्य साथ में रखें। इंडी गठबंधन के प्रत्याशी रविदास मेहरोत्रा ने कैसरबाग स्थित नारी शिक्षा निकेतन मतदान केन्द्र पर मतदान किया।

डीसीपी ने मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया

राजधानी में मतदान केन्द्रों और बूथों पर सुरक्षा व्यवस्था को लेकर जिला प्रशासन और कमिश्नरेट पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों सहित समस्त पुलिस कर्मियों ने राजधानी के मतदान केन्द्रों पर कानून व्यवस्था बनाए रखने में अहम योगदान दिया। इतना ही नहीं मतदान केन्द्रों पर मोरल पुलिसिंग भी देखने को मिली। मतदान केंद्रों पर तैनात पुलिसकर्मियों की सक्रियता से कही भी कोई विवादित मामले की सूचना सामने नहीं आई। इस दौरान मतदान केंद्रों की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने पुलिस आयुक्त एजॉइंट पुलिस कमिश्नर कानून व्यवस्था सहित समस्त जोन के डीसीपी ने मतदान केन्द्रो का निरीक्षण किया। पुलिस आयुक्त एसबी शिरडकर के निर्देश पर जेसीपी की मॉनीटरिंग में लखनऊ पुलिस के चारों जोन के डीसीपी सहित समस्त पुलिस अधिकारियों और कर्मियों में लगातार मतदान केन्द्रों और बूथों पर सक्रिय रही। सोमवार को राजधानी के पुलिस आयुक्त ने मतदान के दौरान थाना ठाकुरगंज के चौक क्षेत्र में मतदान केंद्रों की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते हुए अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। वहीं जेसीपी उपेंद्र अग्रवाल ने सुबह सबसे पहले अपने मतदान केंद्र पर जाकर मतदान किया। डीसीपी दक्षिणी तेज स्वरूप सिंह ने अपने जोन के मतदान केन्द्रो पर पहुँच कर मतदान केंद्रों की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया।

घड़ी की सुइयों के आधार पर बढ़ता रहा वोटिंग प्रतिशत

लोकतंत्र के महापर्व में यह दिवस 2024 लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण का दौर था और उम्मीद की जा रही थी कि कम से कम राजधानी मुख्यालय यानी लखनऊ लोकसभा क्षेत्र में मतदान का अधिकाधिक प्रतिशत देखने को मिलेगा जोकि अन्य संसदीय सीटों के लिये एक शानदार उदाहरण बनकर उभरेगा। लेकिन बेहाल करने वाली गर्मी व शासन-प्रशासन की तमाम कोशिशों के बावजूद लखनऊ संसदीय सीट पर देर शाम छह बजे तक वोटिंग का फीसद 52.03 फीसद के आसपास ही आकर रुक गया। मोहनलालगंज ग्रामीण सुरक्षित संसदीय सीट पर यहां के वोटरों ने रिकॉर्ड मतदान करते हुए यहां के वोटिंग फीसद 62.53 प्रतिशत से आगे पहुंचाने का काम किया। वहीं, पोस्टल बैलेट प्राप्त हुए है उसमे लोक सभा 34 मोहनलालगंज अजा 3653, लोक सभा 35 लखनऊ में 5511, उप निर्वाचन 173 लखनऊ पूर्व में 1166 वोट पड़े।

लखनऊ में वोटिंग प्रतिशत

- प्रातः 9 बजे तक 10.39 प्रतिशत
- प्रातः 11 बजे तक 22.03 प्रतिशत
- अपराह्न 1 बजे तक 33.5 प्रतिशत
- अपराह्न 3 बजे तक 41.91 प्रतिशत
- शाम 5 बजे तक 49.89 प्रतिशत
- शाम 6 बजे तक कुल वोटिंग 56.64 प्रतिशत

मोहनलालगंज में वोटिंग प्रतिशत

- प्रातः 9 बजे तक 13.86 प्रतिशत
- प्रातः 11 बजे तक 28.49 प्रतिशत
- अपराह्न 1 बजे तक 41.45 प्रतिशत
- अपराह्न 3 बजे तक 41.91 प्रतिशत
- शाम 5 बजे तक 49.89 प्रतिशत
- शाम 6 बजे तक 63.37 प्रतिशत

लोक सभा 35 लखनऊ का विधानसभावार वोटिंग प्रतिशत

- 171 पश्चिम 54.23
- 172 उत्तर 51.48
- 173 पूर्व 52.24
- 174 मध्य 52.42
- 175 कैंट 49.28
- कुल प्रतिशत 52.03 प्रतिशत

लोक सभा 34 मोहनलालगंज अजा. का विधानसभावार वोटिंग प्रतिशत

- 152 सिधौली 66.49
- 168 मलिहाबाद 63.90
- 169 बीकेटी 65.68
- 170 सरोजनीनगर 54.44
- 176 मोहनलालगंज 66.30
- कुल प्रतिशत 62.53 प्रतिशत

मतदान केन्दों में आये बुजुर्ग लोगों की हर संभव सहायता की

डीसीपी मध्य रवीना त्यागी ने मतदान केन्द्रो में आये बुजुर्ग लोगों की हर संभव सहायता की। उन्हें पानी पीने के लिए दिया और उनके बैठने के लिए व्यवस्था करवाई ताकि मतदान के लिए आई महिलाए युवतियों और बुजुर्ग महिलाओं को की देखभाल करते हुए उनका मतदान करवाया। उनकी कार्यशैली को देखकर बुजुर्ग महिला ने उन्हें धन्यवाद किया। डीसीपी पश्चिम डॉ दुर्गेश कुमार ने अपने जोन के समस्त मतदान केन्द्रो में जाकर वहां की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने भी मतदान केन्द्रो के बाहर खड़े बुजुर्ग लोगो को पुलिस की सहायता से मतदान केन्द्र पहुंचाते हुए मतदान करवाया उनकी कार्यशैली को देखकर बुजुर्ग ने उन्हें धन्यवाद किया। डीसीपी उत्तरी जोन प्रबल प्रताप सिंह ने अपने जोन के सेटरों पर ड्यूटी पर लगे पुलिस कर्मियों को आवश्यक निर्देश दिए।

सोशल मीडिया पर दिखी खाकी की इंसानियत

सोशल मीडिया पर जनता द्वारा वायरल की गई कुछ तस्वीरें और वीडियो में कई थानों के प्रभारी निरीक्षक और सब इंस्पेक्टर के साथ सिपाहियों द्वारा मतदान केन्द्रों पर बुजुर्गों को व्हीलचेयर में बैठाकर मतदान स्थल तक ले जाया गया और त्वरित मतदान कराते हुए उनको जलपान कराया। थाना सआदतगंज पुलिस, इटौंजा पुलिस और आलमबाग पुलिसएबीकेटी पुलिस की स्थानीय जनता ने तारीफकी। थाना सरोजनी नगर प्रभारी निरीक्षक शैलेन्द्र गिरी के नेतृत्व में एक महिला कॉन्स्टेबल द्वारा एक विकलांग को मतदान केंद्र तक लाकर उनका मतदान करवाया गया। पुलिस के ऐसे व्यवहार को देख कर जनता ने पुलिस कर्मियों को धन्यवाद दिया।

मोहनलालगंज में बुजुर्गों में दिखा गजब का उत्साह

एसडीएम की फटकार के बाद पोलिंग बूथ पर मंगवाई गई व्हीलचेयर

संवाददाता। मोहनलालगंज

बीएलओ की लापरवाही से मोहनलालगंज में कई बुजुर्गों को घर बैठे मतदान की सुविधा नही मिल सकी। हालांकि मतदान के लिए बुजुर्गों के उत्साह ने बीमारी और चलने फिरने में बेबसी को भी पीछे छोड़ दिया। किसी ने व्हीलचेयर तो किसी ने परिजनों के साथ बाइक से बूथ पहुंचकर मतदान किया। वहीं अधिकांश पोलिंग बूथ पर बुजुर्गों के लिए व्हीलचेयर नही मिल सकी।

मोहनलालगंज के दहियर निवासी बुजुर्ग चन्द्रमौलि तिवारी की उम्र तकरीबन 95 वर्ष है। बीमारी की वजह से कई दिन से निजी अस्पताल में भर्ती होकर इलाज करा रहे थे। सोमवार की सुबह टीवी से मतदान तिथि की जानकारी मिलते ही उन्होने मतदान करने की इच्छा जाहिर की। बेटे पवन कुमार तिवारी डाक्टर की सलाह लेकर उन्हें बाइक से दहियर मतदान केन्द्र लेकर पहुंच गए। लेकिन बूथ पर व्हीलचेयर की सुविधा भी नही मिल सकी। लिहाजा किसी तरह सहारा देकर बुजुर्ग पिता को बूथ तक पहुंचाया तब जाकर उन्होने मतदान किया। वापस फिर बुजुर्ग चन्द्रमौलि को अस्पताल ले जाकर भर्ती करा दिया गया। गंगा खेड़ा निवासी बुजुर्ग नन्हेलाल भी पड़ोसियों की मदद से मतदान करने बूथ पहुंचे लेकिन उन्हें भी व्हीलचेयर नही मिल सकी। बाद में एसडीएम बृजेश कुमार वर्मा की फटकार के बाद मतदान केन्द्र पर व्हीलचेयर मंगवाई गई। मोहनलालगंज कस्बे के रहने वाले बुजुर्ग जयकरन शुक्ल को परिजन व्हीलचेयर से नवजीवन इण्टर कालेज मतदान केन्द्र लेकर पहुंचे। जहां उन्होने मतदान किया। बुजुर्ग जयकरन को घर बैठे मतदान की सुविधा नही मिलने का मलाल रहा। परसपुर थट्टा निवासी बुजुर्ग श्रीराम पाल दृष्टिबाधित हैं। फिर भी उन्हें घर बैठे मतदान की सुविधा नही उपलब्ध कराई गई। लिहाजा उन्होने परिजनों की मदद से बूथ पहुंचकर मतदान किया। जहां उन्हें व्हीलचेयर तक नही मिल सकी। मऊ निवासी बुजुर्ग बाबूराम गुप्ता और ललूमर की रहने वाली 90 वर्ष की बुजुर्ग जगरानी ने परिजनों के साथ व्हीलचेयर पर बूथ पहुंचकर लोकतंत्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई।

मोहनलालगंज में 86 वर्ष की बुजुर्ग रामकुमारी ने मतदान केन्द्र पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। देईटीकर निवासी बुजुर्ग रमाकान्त मिश्र ने भी समाजसेवियों की मदद से व्हीलचेयर पर सर्वप्रथम मतदान केन्द्र पहुंचकर मतदान किया तब पानी पिया।

आवेदन के बाद भी नहीं कर सके घर बैठे मतदान

मोहनलालगंज के मऊ निवासी बुजुर्ग विजय प्रताप सिंह ने बीएलओ की मदद से घर बैठे मतदान की सुविधा के लिए फार्म 12 डी भरकर जमा कराया। लेकिन उन्हें घर बैठे मतदान की सुविधा नही मिल सकी। लिहाजा सोमवार को बेटे अरुणेश प्रताप सिंह के साथ गाड़ी से कन्या पाठशाला मतदान केन्द्र पहुंचकर उन्होने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। जिसे लेकर उनके बेटे अरुणेश प्रताप सिंह ने तहसील प्रशासन से शिकायत दर्ज कराई है।

भाजपा तुष्टीकरण नहीं बल्कि संतुष्टीकरण पर करती है काम

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ सिरसा

- सीएम योगी ने हरियाणा में सिरसा की अनाज मंडी में जनसभा को किया संबोधित

देश में चार चरणों के चुनाव संपन्न हो चुके हैं। उस दौरान पूरे देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जो लहर चली थी, वह आज पांचवे चरण में सुनामी बन चुकी है। पूरे देश में एक ही स्वर गूंज रहा है एक बार फिर मोदी सरकार और अबकी बार 400 पार। जब हम 400 पार की बात करते हैं तो कांग्रेस को चक्कर आने लगते हैं क्योंकि वह 400 सीटों पर चुनाव ही नहीं लड़ रही है। ऐसे में वह जीतेगी कैसे। देश की जनता जनार्दन अब कांग्रेस को एक जवाब दे रही है कि जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे। हमारी पीढ़ी सौभाग्यशाली क्योंकि हम नये भारत के नागरिक हैं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में काम कर रहे हैं, जो दुनिया के लिए असंभव है। वहीं जो कांग्रेस के लिए असंभव था, उसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संभव करके दिखाया है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को हरियाणा में सिरसा की अनाज मंडी में जनसभा को संबोधित करते हुए कही। इस दौरान उन्होंने लोकसभा प्रत्याशी अशोक तंवर के पक्ष में वोट की अपील की।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी सबका साथ सबका विकास के तहत काम कर रही है। हम तुष्टीकरण नहीं बल्कि संतुष्टीकरण पर काम कर रहे हैं। वहीं इंडी गठबंधन के लोग सुबह से लेकर शाम तक झूठ और अफवाहें फैलाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इनके पास जब सत्ता तो देशवासियों के लिये कोई काम किया नहीं और अब हिंदुओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। इनके अंदर औरंगजेब की आत्मा आ गयी है। यह कहते हैं कि सत्ता में आए तो आपकी संपत्ति का सर्वे कराएंगे। उसके बाद उस पर विरासत टैक्स लगाएंगे यानी यह औरंगजेब का जजिया कर लगाएंगे, जिस हम आप कभी होने नहीं देंगे। सीएम योगी ने कहा कि अयोध्या में रामलला अपने भव्य और दिव्य मंदिर में विराजमान हो गये हैं और देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए आ रहे हैं। ऐसे में इन्हे अब किसी भी जन्म में सत्ता नहीं मिलने वाली है क्योंकि यह चुनाव राम भक्त और रामद्रोहियों के बीच में हो गया है। कांग्रेस ने भारत की विरासत का विरोध किया है। ऐसे में इनको अब सत्ता कभी भी नहीं मिल सकती है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि इन्हे सत्ता पर काबिज होने की इतनी जल्दी थी कि यह करतारपुर साहिब को ही भूल गई थी। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सत्ता संभालते ही करतारपुर का गलियारा के निर्माण को आगे बढ़ाया। इसके साथ ही गुरु नानक देव की पावन धरा को भी भारत का हिस्सा बनाने के कार्य को आगे बढ़ाया। उन्होंने सरहिंद के लिये अपने आप को बलिदान करने वाले गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के चार साहिबजादों के नाम पर 26 दिसंबर की तिथि को वीर बाल दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। सीएम योगी ने कहा कि आज देश बदल चुका है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले 10 वर्षों में भारत की तस्वीर और तकदीर दोनों बदल दी है। आज दुनिया में भारत का सम्मान बढ़ा है। इसके साथ ही दुनिया में कोई संकट आता है तो वह लोग भारत की तरफ देखते हैं। देश में विकास के बड़े-बड़े कार्य हो रहे ह

महापर्व में भागीदारी के लिए उमड़ी मतदाताओं की भीड़

मोहनलालगंज में बूथों पर सुबह से ही जुटी भीड़, देर शाम तक चलता रहा मतदान

संवाददाता। मोहनलालगंज

लोकतंत्र के महापर्व में सोमवार को मोहनलालगंज के मतदाताओं ने बढ़ चढ़कर मतदान रुपी आहुति दी। भीषण गर्मी के दृष्टिगत सुबह 6 बजे से ही अधिकांश पोलिंग बूथ पर मतदाताओं की भीड़ जुट गई। दोपहर में कुछ सन्नाटा जरुर पसरा लेकिन शाम होते होते फिर से ज्यादातर बूथ मतदाताओं से गुलजार नजर आए। कुछ बूथों पर रात 9 बजे तक मतदान चलता रहा। मोहनलालगंज संसदीय सीट से मनपसंद सांसद चुनने के लिए सोमवार को मोहनलालगंज विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं ने जमकर उत्साह दिखाया। निगोहां के सत्यनारायण तिवारी इण्टर कालेज और मोहनलालगंज के नवजीवन इण्टर कालेज में सुबह 7 बजे ही मतदाताओं की गजब की भीड़ नजर आई। इसी तरह कनकहा धरमंगत खेड़ा दहियर खुझौली सिसेण्डी व समेसी तथा गोसाईगंज कस्बे के मतदान केन्द्रों पर भी भीड़ डटी नजर आई। भौंदरी व मऊ और कुबहरा के बूथों पर भी मतदाताओं की काफी तादात दिखाई दी। दोपहर होने तक तेज धूप की वजह से ज्यादातर मतदान केन्द्रों पर सन्नाटा पसर गया। लेकिन 3 बजे के बाद धूप कम पड़ते ही तकरीबन सभी बूथों पर मतदाताओं की तादात फिर से बढ़ गई। एसडीएम बृजेश कुमार वर्मा ने बताया चांदसरांय कुढ़ा और रसूलपुर आशिकअली समेत लगभग दस बूथों पर शाम 7 बजे के बाद भी मतदान जारी रहा।

धूप में तपते मिले मतदाता मातहतों को फटकार

मोहनलालगंज के कनकहा में पोलिंग बूथों पर छांव का प्रबन्ध नही किया गया। जिसकी वजह से मतदाता तेज धूप में तपते नजर आए। बीडीओ आशुतोष कुमार श्रीवास्तव ने निरीक्षण के दौरान समस्या देखी तो सचिव को कड़ी फटकार लगाई। फिर खुद खड़े रहकर न सिर्फ छांव के लिए टेण्ट लगवाया। बल्कि पीने के पानी के जार और शर्बत की भी व्यवस्था कराई। निगोहां में भी उन्होने सचिव और प्रधान से पेयजल व शर्बत की व्यवस्था करवाई। नगर पंचायत के मऊ में बूथ संख्या 178 व 179 में छांव का प्रबन्ध नही किए जाने से मतदाता तेज धूप में तपते रहे। जिसे लेकर एसडीएम बृजेश कुमार वर्मा से शिकायत दर्ज कराई गई।

कमिश्नर ने देखी मतदान केन्द्रों की हकीकत

कमिश्नर रोशन जैकब ने मोहनलालगंज के नवजीवन इण्टर कालेज व गौरा और निगोहां के सत्यनारायण तिवारी इण्टर कालेज मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया। कमिश्नर ने छांव और पेयजल की व्यवस्था का जायजा लेकर मातहतों को लापरवाही नही बरतने की हिदायत दी। निगोहां में उन्होने शर्बत की उपलब्धता बनाए रखने की हिदायत दी। उधर सीडीओ अजय जैन ने अमेठी के बूथों का निरीक्षण किया। जबकि डीसीपी तेज स्वरुप मतदान केन्द्रों पर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते रहे।

ईवीएम खराब होने से बढ़ी परेशानी

मोहनलालगंज के नवजीवन इण्टर कालेज मतदान केन्द्र के बूथ संख्या 180 गौरा के बूथ संख्या 264 मस्तेमऊ और कनकहा की ईवीएम में कुछ खराबी की शिकायत सामने आई। जबकि अमेठी के तीन बूथों में भी ईवीएम खराब हुई। ईवीएम बदले जाने तक मतदान में कुछ देर के लिए बाधा रही। उधर भौंदरी में धीमे मतदान की वजह से मतदाताओं को काफी परेशान होना पड़ा।

युवाओं ने पहली बार डाला वोट, सेल्फी शेयर कर दूसरों को किया प्रेरित

मैसेज वायरल किया तब जाकर कुछ युवाओं को सेल्फी लेने की छूट मिल सकी।

मोहनलालगंज। लोकसभा चुनाव में पहली बार मताधिकार का प्रयोग करने को लेकर सोमवार को मोहनलालगंज के युवाओं में खासा हौसला नजर आया। मतदान के बाद युवाओं ने सोशल मीडिया पर सेल्फी शेयर कर खुशी जाहिर की।

मोहनलालगंज कस्बा निवासी बीए के छात्र मधुर विश्वम सिंह ने सोमवार को नवजीवन इण्टर कालेज में पोलिंग बूथ पहुंचकर पहली बार मतदान किया तो उनकी खुशी का ठिकाना नही रहा। बीए की छात्रा सौम्या द्विवेदी और बीकाम की छात्रा तृप्ति ने भी पोलिंग बूथ पहुंचकर पहली बार मताधिकार का प्रयोग कर खुशी जाहिर की। दोनों सेल्फी प्वाइंट पर सेल्फी लेकर सोशल मीडिया के जरिए दूस रों को भी मतदान के लिए प्रेरित किया। मऊ निवासी वंश विजय ने भी पहली बार अपने मताधिकार का प्रयोग कर प्रसन्नता जताई। दहियर निवासी बीए के छात्र निखिल श्रीवास्तव और एलएलबी आनर्स के छात्र रजत तिवारी ने भी मतदान केन्द्र पहुंचकर पहली बार अपने मताधिकार का प्रयोग कर खुशी जताई।

सेल्फी प्वाइंट तक मोबाइल बैन करने पर जताई नाराजगी: मोहनलालगंज के नवजीवन इण्टर कालेज और निगोहां के सत्यनारायण तिवारी इण्टर कालेज गोपाल खेड़ा और नन्दौली के मतदान केन्द्रों में सेल्फी प्वाइंट तक मोबाइल ले जाने पर प्रतिबंध लगाए जाने से युवाओं ने विरोध जताया। जिसे लेकर कुछ जागरुक लोगों ने सोशल मीडिया पर

पांच चरणों में जनता ने विपक्ष का सूपड़ा साफ कर दिया है: भूपेन्द्र सिंह चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने सोमवार को कहा कि पाँचवें चरण में भाजपा सभी 14 सीटें जीतने जा रही है। राहुल गांधी की वापसी का टिकट बन चुका है वे भी पराजित हो चुके हैं। अमेठी में कांग्रेस का इको सिस्टम अब खत्म हो चुका है वहाँ दोबारा कमल खिल रहा है। अमेठी और रायबरेली से जो संदेश जनता ने भाजपा के पक्ष में दिया है उससे यह साफ है कि 4 जून के बाद राहुल बाबा देश में कांग्रेस खोजो यात्रा पर निकलने वाले हैं। उन्होंने कहा कि पाँचवें चरण का चुनाव संपन्न हो चुका है। इन पाँच चरणों में भाजपा जनता के आशीर्वाद से प्रदेश की सभी 53 सीटें जीत रही है। देश और प्रदेश में भाजपा के पक्ष में जो माहौल बना है उससे यह साफ है कि मोदी ही के नेतृत्व में तीसरी बार जनादेश मिल रहा है। जनता जनार्दन ने अब प्रदेश की सभी 80 सीटों पर कमल खिलाने का स्पष्ट मन बना लिया है। पांचो चरणों में जनता ने विपक्ष का सूपड़ा साफ कर दिया है।

जौनपुर में भाजपा वापसी की तैयारी में, मछलीशहर-भदोही सीट पर हैट्रिक लगाने की बारी

- जौनपुर में धनंजय सिंह के भाजपा में आने व गठबंधन को महान दल से झटका लगने के बाद भगवा मजबूत स्थिति में

सतीश सिंह। लखनऊ

आम लोकसभा चुनाव 2024 के तहत यूपी में छठवें चरण के अंतर्गत आने वाली जौनपुर, मछलीशहर और भदोही सीट को जीतने के लिए राजनीतिक दलों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। 2019 में जौनपुर संसदीय सीट को गंवाने वाली भाजपा इस बार कोई मौका छोड़ना नहीं चाह रही है। इसके लिए भाजपा ने अपने खेमे में बाहुबली धनंजय सिंह को मिला लिया है। जबकि मछलीशहर और भदोही संसदीय सीट पर बीजेपी की तैयारी हैट्रिक लगाने की है। वहीं विपक्ष भी अपने समीकरण के आधार पर भाजपा को रोकने की पूरजोर कोशिश में है।

जौनपुर संसदीय सीट

जौनपुर संसदीय सीट पर भाजपा ने कांग्रेस सरकार में महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री रहे कृपाशंकर सिंह को मैदान में उतारा है। जबकि गठबंधन की तरफ से सपा के टिकट पर यहां से पूर्व मंत्री बाबू सिंह कुशवाहा मैदान में हैं। वहीं बसपा ने यहां से कई जिलों में एसडीएम से लेकर मजिस्ट्रेट रहे अपने वर्तमान सांसद श्याम सिंह यादव को टिकट दिया है। पहले इस सीट पर बाहुबली धनंजय सिंह की पत्नी श्रीकला रेड्डी को टिकट दिया था। लेकिन एक नाटकीय घटनाक्रम के तहत बसपा ने नामांकन से एक दिन पूर्व श्याम सिंह यादव को अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया। पिछले लोकसभा चुनाव में सपा व बसपा का गठबंधन था लेकिन इस बार चुनाव में सपा और कांग्रेस का गठबंधन है। यहां पर भाजपा व बसपा की लड़ाई है। हालांकि गठबंधन भी अपने हिसाब से पूरा टक्कर दे रहा है। लेकिन बाबू सिंह कुशवाहा को लेकर सपा के सहयोगियों में अंदरखाने में मनमुटाव है। जिसको लेकर महान दल के नेता केशवदेव मौर्य ने कुशवाहा को समर्थन करने से साफ इनकार कर दिया है। ऐसे में बाबू सिंह कुशवाहा को चुनाव जीतने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ रही है। पिछले लोकसभा चुनावों की बात करें तो 2019 के लोकसभा चुनाव में बसपा के श्याम सिंह यादव भाजपा प्रत्याशी केपी सिंह को हराया था। वहीं 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के कृष्ण प्रताप सिंह बहुजन समाज पार्टी के सुभाष पांडे को हराया था। जबकि 2009 के लोकसभा चुनाव में बसपा के टिकट पर बाहुबली धनंजय सिंह ने सपा के पारस नाथ यादव को हराया था। 2011 के जनगणना के आधार पर जौनपुर की कुल आबादी 44 लाख से ज्यादा है।

1984 के बाद से कांग्रेस नहीं जीत सकी कोई चुनाव: जौनपुर संसदीय क्षेत्र में 5 विधानसभा क्षेत्र (बादलपुर, शाहगंज, जौनपुर, मल्हानी और मुंगरा बादशाहपुर) आते हैं। जौनपुर जिले में धर्म आधारित आबादी के लिहाज से देखा जाए तो यहां पर हिंदू बहुसंख्यक हैं और उनकी संख्या 88.59 फीसदी है, जबकि मुस्लिमों की आबादी 10.76 फीसदी है। 1984 के चुनाव के बाद कांग्रेस जौनपुर से कभी लोकसभा का चुनाव नहीं जीत पाई है। 2014 में बॉलीवुड और भोजपुरी स्टार रवि किशन कांग्रेस के टिकट पर चुनाव में उतरे थे लेकिन उन्हें आम आदमी पार्टी से भी कम वोट मिले और वह छठें स्थान पर रहे थे। जौनपुर लोकसभा सीट पर करीब पौने दो लाख क्षत्रिय मतदाता है। यही कारण है कि यह सीट सात बार क्षत्रिय नेताओं के हाथ रही है। 1962 में हुए लोकसभा चुनाव में जनसंघ के ब्रह्मजीत सिंह ने कांग्रेस के बीरबल सिंह को हराया था।

मछलीशहर संसदीय सीट

पूर्वांचल में राजनीतिक दृष्टि से मछलीशहर सुरक्षित संसदीय सीट महत्वपूर्ण है। 2019 के लोकसभा चुनाव में सबसे ज्यादा रोचक मुकाबला देखने को मिला था। पड़ोसी जिले वाराणसी में जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्वांचल की सबसे बड़ी जीत दर्ज की थी तो मछलीशहर में सबसे कम वोट का रिकॉर्ड भाजपा के नाम बना। मछलीशहर सीट से संसद में पहुंचने वाले भाजपा के बीपी सरोज ने मात्र 181 वोट से बसपा के त्रिभुवन राम को शिकस्त दी थी। इस बार भाजपा ने फिर से बीपी सरोज को मैदान में उतारा है। जबकि गठबंधन के तहत सपा ने जातिगत समीकरण साधने के लिए अपने पुराने नेता तूफानी सरोज के बेटी प्रिया सरोज को चुनावी जंग में उतारा है। वहीं बहुजन समाज पार्टी से कृपा शंकर सरोज को मैदान में उतारा है। मछलीशहर में पिछड़े और दलित मतदाताओं की संख्या सबसे ज्यादा है। इसके बाद ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, मुस्लिम और अन्य जाति के मतदाताओं का नंबर आता है। पिछले चुनावों पर गौर करें तो 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के बीपी सरोज ने बीएसपी के त्रिभुवन राम को हराया था। वहीं 2014 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के रामचरित्र निषाद ने समाजवादी पार्टी के भोलानाथ को हराया था। जबकि 2009 के लोकसभा चुनाव में सपा के तूफानी सरोज यहां से सांसद बने थे। भाजपा यहां पर इस बार हैट्रिक लगाने की तैयारी में है।

2022 के चुनाव में भाजपा के खाते में दो सीटे आई: मछलीशहर सुरक्षित लोकसभा सीट के तहत पांच विधानसभा क्षेत्र मछलीशहर, मरियाहू, जाफराबाद, केराकत और पिंडरा आते हैं। मछलीशहर सीट के पांच विधानसभा क्षेत्रों में 2022 के चुनाव में दो सीटों पर भाजपा और उसकी सहयोगी अपना दल को जीत मिली थी। सपा और सुभासपा को तीन सीटें हासिल हुई थी। हालांकि, अब सुभासपा भाजपा का हिस्सा होने से यहां की तीन सीटें भाजपा गठबंधन के खाते में हैं।

भदोही संसदीय सीट

पूर्वांचल ही नहीं देश-विदेश में कालीन शहर के नाम से मशहूर भदोही संसदीय सीट पर भाजपा ने अपने वर्तमान सांसद की जगह डॉ. विनोद कुमार बिंद को मैदान में उतारा है। वहीं गठबंधन के तहत सपा ने यहां से अपने प्रत्याशी को न उतार कर ऑल इण्डिया तृणमूल कांग्रेस से ललितेशपति त्रिपाठी को मैदान में उतारा है। बसपा ने यहां से हरिशंकर को मैदान में उतारा है। पिछले चुनाव पर नजर डालें तो 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के रमेश चंद बसपा के रंगनाथ मिश्रा को हराया था। इसी तरह 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के वीरेंद्र सिंह ने बसपा के राकेश धर त्रिपाठी को हराया था। जबकि 2009 के लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी के उम्मीदवार गोरखनाथ ने सपा के छोटेलाल भिंड को हराया था।

2008 में अस्तित्व में आई यह सीट: भदोही लोकसभा क्षेत्र में 5 विधानसभा क्षेत्र (भदोही, ज्ञानपुर, औराई, प्रतापपुर और हंडिया) आते हैं। जिसमें एक सीट अनुसूचित जाति के लिए रिजर्व है। 2008 में परिसीमन के बाद भदोही लोकसभा सीट अस्तित्व में आई।

तीन करोड़ गरीबों को मिलेगा आवास: केशव

● डिप्टी सीएम बोले, सपा, कांग्रेस का होगा सफाया

संवाददाता। सोनभद्र

यूपी के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि देश के तीसरी बार नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। पीएम बनते ही तीन करोड़ गरीबों को आवास देंगे। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस का सफाया होगा। डिप्टी सीएम एनडीए के उम्मीदवार रिंकी कोल के समर्थन में गोविंद सिंह महाविद्यालय खजूरी में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे है। उन्होंने कहा अबकी बार 400 से पार एनडीए को सीट मिल रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यों से विपक्षी पार्टियां घबरा गई है। डिप्टी सीएम ने कहा कि भाजपा सरकार में अपराधियों का सफाया किया जा रहा है, जबकि सपा सरकारों में गुंडों और माफियाओं को पनाह दिया जाता था। आज पूरा देश मोदी के साथ खड़ा है। जब सपा, बसपा और कांग्रेस सरकार थी तब इन्होंने कभी फ्री राशन नहीं दिया आज कहते हैं कि 10 किलो राशन देंगे, उस 10 किलो राशन में से आठ किलो यही लोग खा जाएंगे, जैसा कि पहले होता था। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि मोदी जी ने कहा है ना खाऊंगा और ना खाने दूंगा। मोदी जी सुरक्षा और विकास की गारंटी है। मोदी जी ने राम मंदिर बनवाया, कांग्रेस के समय लगाए गए 370 जैसे कानून से मोदी ने मुक्ति दिलाई। अब जल्द ही काशी और मथुरा को भी न्याय मिलेगा। इसलिए आप सभी को 370 वोट हर बूथ पर बढ़ाना होगा। योगी सरकार में माफिया और गुंडा समाप्त हो गए हैं। उनका घर अब जेल हो चुका है। सपा सरकार में गुंडा माफियाओं का बोलबाला था। सपा अब समाप्तवादी पार्टी बनकर रह गई है। सभा मे एनडीए प्रत्याशी रिंकी कोल व दुद्धी विधानसभा उपचुनाव के प्रत्याशी श्रवण सिंह गोंड को भारी मतों से जीताने की अपिल किया। कार्यक्रम कि अध्यक्षता करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष नन्दलाल ने मुख्यअतिथि को पुष्पगुच्छ व अंगवस्त्र से स्वागत किया। सभा को मुख्यरुप से कैबिनेट मंत्री आशीष पटेल राज्यसभा सांसद रामशकल पकौडी कोल विधायक भूपेश चौबे अनिल कुमार मौर्या, कैलास खरवार ने भी संबोधित किया।

आज होगी सांसद अफजाल अंसारी के केस की सुनवाई

गाजीपुर। सांसद अफजाल अंसारी की सजा पर सोमवार को हाईकोर्ट में सुनवाई टल गयी है। 21 मई को इस केस की सुनवाई होगी। हाईकोर्ट इलाहाबाद के वरिष्ठ अधिवक ?ता अजय श्रीवास्तव ने बताया कि बगल के जिले में चुनाव होने के चलते कोर्ट ने आज की सुनवाई को कल के लिए टाल दिया है। सुनवाई 21 मई को होगी।

फांसी लगाकर युवक ने दी जान

बीजपुर/सोनभद्र। स्थानीय थाना क्षेत्र के ग्राम पिंडारी के टोला मनरहवा में रविवार की रात वही का निवासी 22 वर्षिय महेन्द्र उर्फ अशोक पनिका पुत्र राम किशुन पनिका ने अपने घर से लगभग 200 मीटर की दूरी पर मौजूद पलास के पेड़ से नायलॉन कि रस्सी के सहारे फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। जानकारी सोमवार की सुबह उसके भाई को उस वक्त हुई जब वो घर से बाहर निकला। परिजनों ने जानकारी मोबाइल फोन के जरिए प्रभारी निरीक्षक बीजपुर पंकज पाण्डेय को दिया।

डीएम एसपी व एडीएम ने इंजीनियरिंग कॉलेज में मत पेटियां रखने के लिए स्ट्रांग रूम का किया निरीक्षण

अंबेडकर नगर। जिला निर्वाचन अधिकारी अविनाश सिंह तथा पुलिस अधीक्षक डॉण् कौस्तुभ द्वारा राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज अकबरपुर में बनाए गए मतगणना स्थल व स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया गया। अवगत कराना है कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के अंतर्गत दिनांक 25 मई को मतदान होने के उपरांत मतपेटिका को राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज अकबरपुर में रखा जाएगा। 4 जून 2024 को होने वाले मतगणना हेतु चुनाव की तैयारियों को लेकर जिला प्रशासन जिला निर्वाचन अधिकारी के नेतृत्व में तैयारियों को अंतिम रूप देने के लिए लगातार सक्रिय है। जिला निर्वाचन अधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने मतगणना स्थल व मतपेटिका रखे जाने वाले स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया गया। मतगणना स्थल के निरीक्षण के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी ने प्रत्याशियों के एजेंटों के लिए बनाए गए गलियारे के बाहरी हिस्से को ऊंचा करने एवं गलियारे के दोनों तरफमजबूत जालियां लगाने के निर्देश दिए। साथ ही वहां पर मतगणना के लिए बनाए गए विभिन्न काउंटरों की व्यवस्था का भी निरीक्षण किया गया। इसके पश्चात जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा मत पेटिका रखने के लिए बनाए गए सभी विधानसभाओं के स्ट्रांग रूम एवं उसके अंदर इवीएम के रखने को चिह्नित किए गए स्थानों का निरीक्षण किया गया।उन्होंने उपस्थित सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि मतगणना से जुड़ी समस्त तैयारियां समय से पूर्व पूर्ण करना सुनिश्चित करें। निरीक्षण के दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी डॉण् सदानंद गुप्ताए अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडीए परियोजना निदेशक दिलीप सोनकर तथा अन्य अधिकारी एकर्मचारी मौके पर उपस्थित रहे।

वितरित किया गया प्रशिक्षण किट व सिलाई मशीन

सोनभद्र। हिण्डाल्को रेणुकूट ग्रामीण विकास विभाग द्वारा क्लब हिण्डाल्को रेणुकूट परिसर में कौशल विकास एवं आजीविका संवर्धन पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी को हिण्डाल्को ग्रामीण विकास विभाग द्वारा रेणुकूट में संचालित कौशल विकास कार्यक्रमों की प्रगति के बारे में अवगत कराया गया। विगत वित्त वर्ष में संचालित दो प्रशिक्षण केन्द्रों से कुल 105 प्रशिक्षुओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया था। वर्तमान वित्त वर्ष में प्रशिक्षण टेऊ्ड में कुल 112 प्रशिक्षु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इसके पश्चात् हिण्डाल्को संस्थान के ग्रामीण विकास विभाग में सामयिक अध्ययन करने के लिए आये महाविद्यालयीन छात्राएं तनिष्का एवं साक्षी ने महिला सशक्तिकरण पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत किया जिसमें हिण्डाल्को सी.एस.आर. द्वारा महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए संचालित विभिन्न कार्यक्रमों के साथ कौशल विकास प्रशिक्षण के बारे में प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर हिण्डाल्को के मुखिया एन. नागेश ने प्रशिक्षुओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आजीविका संवर्धन के क्षेत्र में सी.एस.आर. द्वारा आयोजित कौशल विकास प्रशिक्षण एवं उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। हिण्डाल्को के क्लस्टर एच.आर. हेड जसबीर सिंह ने कहा कि सी.एस.आर. टीम लगातार महिलाओं के उद्यमिता विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कार्यक्रम में कौशल विकास प्रशिक्षण प्राप्त चुके 105 प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किया तथा 112 नवप्रवेशी प्रशिक्षुओं को विभिन्न टेऊ्ड के अनुसार प्रशिक्षण किट प्रदान किया। 55 महिलाओं को सिलाई मशीन भी वितरित किया गया।

गृहमंत्री अमित शाह की रैली के लिए भाजपा ने अपनी पूरी ताकत

संवाददाता। अंबेडकर नगर

लोक सभा चुनाव के छठवें चरण की प्रचार के अन्तिम दिन 23 मई को जिला मुख्यालय स्थित विख्यात शिव बाबा के प्रांगण में आ रहे केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की रैली को ऐतिहासिक बनाने के लिए भाजपा ने अपनी पूरी ताकत झोंक दिया है। केंद्रीय गृह मंत्री के रैली की तैयारी के लिए लोक सभा क्षेत्र की पांचों विधान सभाओं में युद्ध स्तर पर भाजपा ने बैठकें कर कार्यकर्ताओं को रैली से संबंधित जिम्मेदारी दी। लोक सभा प्रत्याशी रितेश पाण्डेय ने बेवाना मण्डल की शक्ति केंद्र अशरफाबाद में जिला सह मीडिया प्रभारी बजरंगी पाठक के संयोजन में चौपाल कर 23 मई की विशाल रैली में शामिल होने के लिए पूरी ताकत झोंकने का आवाहन करते हुए कहा कि बेवाना मण्डल से भाजपा के चुनाव चिन्ह पर भारी संख्या में बटन दबे इसके लिए एक एक घर पर जा कर जनता से आशिर्वाद मांगने का कार्य कार्यकर्ता करें। कहा कि भाजपा के पक्ष में मतदान राष्ट्र और राष्ट्र के विकास के लिए जरूरी है।

भाजपा जिला कार्यालय अटल भवन में भाजपा क्षेत्रीय महामंत्री विजय प्रताप सिंह ने लोक सभा प्रभारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह टिल्लूए भाजपा जिलाध्यक्ष त्रयंबक तिवारी की उपस्थिति में लोक सभा क्षेत्र की 24 सांगठनिक मंडलों में लगाए गए वरिष्ठ प्रवासी कार्यकर्ताओं की बैठक कर चुनावी कार्यों से संबंधित जिम्मेदारी सौंपी गई।बैठक को सम्बोधित करते हुए क्षेत्रीय महामंत्री विजय प्रताप सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की राष्ट्र के सम्मानएसनातन संस्कृति की रक्षा औरसमाज के अंतिम पायदान पर निवास करने वाले गरीब परिवारों की समृद्धि के लिए किए गए कार्यों से भाजपा 400 पार साइटों को जीत कर 4 जून को सत्ता में तीसरी बार आयेगी और मोदी जी तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ग्रहण करेंगे।जनता का पूर्ण समर्थन भाजपा प्रत्याशियों को मिल रहा है।लोक सभा प्रभारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह टिल्लू और भाजपा जिलाध्यक्ष त्रयंबक तिवारी ने कहा कि भाजपा के पक्ष में चल रही आंधी से भाजपा प्रत्याशी रितेश पाण्डेय भारी मतों से जीत दर्ज करेंगे। कहा कि 23 मई को गृह मंत्री अमित शाह की रैली में उमड़ने वाली जन सैलाब विपक्ष को चुनाव के पहले ही रितेश की जीत पक्की कर देगी। तैयारी के लिए केंद्रीय लोक सभा चुनाव कार्यालय अकबरपुर में विधान सभा चुनाव संचालन समिति की बैठक विधान सभा प्रभारी मनोज मिश्र की अध्यक्षता और संयोजक आदर्श चौधरी के संचालन एवम प्रवासी हरि ओम शर्माएचेयर मैन चंद्र प्रकाश वर्माएब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि आनंद वर्माएभाजपा नेता मनोज गुप्ता गुड्डूएमण्डल अध्यक्ष शशि द्विवेदीए अरविंद सिंह डिंपूएशिव पूजन राजभरए पंकज प्रजापति की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। उपरोक्त जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी बाल्मीकि उपाध्याय ने जारी विज्ञप्ति में दी है।

उप चुनाव विधानसभा क्षेत्र दुद्धी...

सपा के विजय सिंह गोंड का गढ़ रहे दुद्धी मे भाजपा के श्रवण गोंड की ललकार

सोनभद्र। देश भर में हो रहे लोकसभा चुनाव के साथ ही लोकसभा क्षेत्र रावट्र्सगंज के विधान सभा क्षेत्र दुद्धी मे भी विधानसभा उप चुनाव हो रहा है। जहां से कुल 06 प्रत्याशी चुनाव मैदान में है। पिछले लगभग चार दशक से विधानसभा क्षेत्र दुद्धी पूर्व विधायक विजय सिंह गोंड के गढ़ के रुप में भी रहा है जहां से दल से रहे हो या निर्दल विधायक विजय सिह गोंड ही निर्वाचित होते रहे वे यहां से सात बार विधायक निर्वाचित हुये पर पिछले लम्बे समय से विजय सिंह गोंड की पकड़ थोड़ी कमजोर हुई है। 1980 व 1984 मे विजय सिंह गोंड काग्रेंस पार्टी से विधायक निर्वाचित हुए थे पर 1989 मे जब विजय सिंह का टिकट काग्रेंस पार्टी से कट गया तो निर्दल प्रत्याशी के रुप में तीर धनुष चुनाव निशान से साथ विजय सिह ने जीत दर्ज किया उसके बाद कुल 7 वार विधायक निर्वाचन होते रहें वे मुलायम सिंह यादव की सरकार मे परिवार कल्याण राज्य मंत्री भी रहे। उन्हें आदर्श विधायक घोषित करने के साथ ही सम्मानित भी किया गया। वर्ष 2007 मे विधानसभा क्षेत्र दुद्धी अनुसूचित जाति के लिए सुरक्षित हो गया और गोंड जाति को अनुसूचित जनजाति मे शामिल हो जाने के कारण वें विधानसभा चुनाव से वंचित हो गए। 2012 मे भी यह क्षेत्र अनुसूचित जाति की ही रही वर्ष 2017 मे विधानसभा क्षेत्र दुद्धी अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हुआ तो उस दौरान विजय सिहं गोंड ने बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी के रुप मे चुनाव लडे पर लगभग एक हजार मतो से उन्हें हार का सामना करना पडा वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में भी सपा प्रत्याशी के रूप में उन्हें हार का सामना करना पडा। वर्ष 2024 के उप चुनाव में विजय सिहं गोंड को समाजवादी पार्टी ने पहले ही प्रत्याशी घोषित कर दिया था जिसके कारण उन्हें चुनाव प्रचार का पर्याप्त समय मिला है वही इस बार के चुनाव को विजय सिंह गोंड के अन्तिम चुनाव के तौर पर भी देखा जा रहा है जिसके चलते सहानुभूति भी एक बडा फैक्टर है। वही भारतीय जनता पार्टी ने भी एक युवा चेहरें श्रवण सिंह गोंड पर दाव लगाया है। श्रवण सिह गोंड राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक रह चुके हैं। पिछले लम्बे समय से भारतीय जनता पार्टी मे जनजाति मोर्चा भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष के साथ ही अनुसूचित जाति जनजाति आयोग व राज्य वन्य जीव बोर्ड उत्तर प्रदेश सरकार के सदस्य रह चुके हैं। वें राजनैतिक व सामाजिक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण पदो पर रहते हुए अपने उत्तदायित्वो का निर्वहन भी करते रहे है। दुद्धी विधानसभा क्षेत्र के स्थानीय प्रत्याशी होने के साथ ही मजदूर का बेटा होने की भी एक सहानुभूति श्रवण सिंह गोंड के साथ है। अन्य प्रत्याशियों मे बहुजन समाज पार्टी से रवि सिह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से दिनेश कुमार गोडवाना गणतंत्र पार्टी से दयाशंकर सिह व राष्ट्रीय समानता दल से मनोज कुमार भी चुनाव मैदान में है पर प्रमुख मुकाबला समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी विजय सिह गोंड व भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी श्रवण सिह गोंड के बीच ही देखा जा रहा है। अन्य प्रत्याशियों की भूमिका फिलहाल भले ही जीत हार के बीच मे न देखी जा रही हो पर जीत हार की रेस मे शामिल किसी भी प्रत्याशी का चुनावी गणित बिगाड़ने मे अन्य प्रत्याशियों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। परिणाम क्या होगा यह तो 4 जून 2024 होने वाली मतगणना के बाद ही तय हो पायेगा।

अंडर 19 अंतर जनपदीय ट्रायल का अंतिम मैच बलिया और मऊ के बीच

संवाददाता। गाजीपुर

उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के दिशा.निर्देशन में गाजीपुर मंडल के अंतर्गत जनपद के स्वामी सहजानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय में कल से शुरू हुए अंडर 19 के अंतर जनपद ट्रायल का अनितं पांचवां मैच मऊ और बलिया के बीच खेला गया। मैच के पूर्व अधिकृत मुख्य चयनकर्ता कमलकांत कनौजियाएअंपायर उत्कर्ष मौर्या एवं मो0 आदिल ने पिच का निरीक्षण किया। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए बलिया की टीम ने 291 रनों का स्कोर खड़ा किया। मऊ के तरफ से करण सिंह और रूद्र प्रताप सिंह ने 2.2 विकेट लिया। 292 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए मऊ की टीम ने हर्षित सिंह के 101 व विपिन यादव के नाबाद 36 रनों के बावजूद मात्र 262 रन बना पाई। बलिया के तरफ दिव्यांशु पाण्डेय ने सर्वाधिक 3 विकेट लिया।

सम्पूर्ण मैच के दौरान उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन से अधिकृत चयनकर्ता कमलकांत कनौजियाए अंपायर उत्कर्ष मौर्या एवं मो0 आदिल सहित स्कोरर भूषण मिश्रा मैदान पर उपस्थित थे। मैच अंत में गाजीपुर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन व गाजीपुर मंडल के अध्यक्ष शाश्वत सिंह के हाथों उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा अधिकृत चयनकर्ता वरिष्ठ रणजी खिलाड़ी कमलकांत कनौजियाए यूण्पीण्सीण्एण् पैनल के अंपायर उत्कर्ष मौर्या एवं मो0 आदिल तथा स्कोरर भूषण मिश्रा को सम्मान स्वरुप स्मृति देकर तथा मुख्य संरक्षक संजीव कुमार सिंह द्वारा अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया। मंडल के तरफ से चयनकर्ता के हाथों के उभरते खिलाड़ी हिमांशु प्रजापति को एसणएफ ब्रांड का क्रिकेट किट प्रदान किया गया। जीण्डीण्सीण्एण् के सचिव डॉ0 उमेश चन्द्र राय ने मंडल के ट्रायल के लिए आये सभी यूण्पीण्सीण्एण् अधिकारीयों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर गाजीपुर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के मुख्य संरक्षक तथा उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के अपैक्स कौंसिल सदस्य संजीव कुमार सिंह ने बताया कि किसी भी मंडल की टीम का गठन खिलाडियों द्वारा ट्रायल मैच में किये गए प्रदर्शन के आधार पर चयनकर्ता तथा उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के चयन समिति द्वारा गहन विश्लेषण के बाद ही किया जाता है। गाजीपुर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष शाश्वत सिंह बताया कि चयनकर्ता द्वारा खिलाडियों के द्वारा किये गए प्रदर्शन का अंतिम विश्लेषण के उपरांत उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा अनुमोदित सूची की घोषणा शीघ्र ही कर दी जाएगी। इस मैच के दौरान एसोसिएशन के मुख्य संरक्षक तथा उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के अपैक्स कौंसिल सदस्य संजीव कुमार सिंह के अतिरिक्त अध्यक्ष शाश्वत सिंहए सचिव डॉ0 उमेश चन्द्र रायए विनय कुमार सिंहए आदि लोग उपस्थित रहें।

बूथ से लेकर कंट्रोल रूप और चेकपोस्ट का चुनाव प्रेक्षक ने किया निरीक्षण

सकलडीहा/चन्दौली। निष्पक्ष पारदर्शी और शांतिपूर्ण मतदान कराने को लेकर सामान्य चुनाव प्रेक्षक सिंधु बीण्रूपेश गंभीर है। सोमवार को चुनाव प्रेक्षक ने मतदान बूथए चेक पोस्टए बरनेवल बूथए बेवकास्टिंग एनिर्वाचन कार्यालय और कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। बूथों पर छाया पानी और बिजली की व्यवस्था के साथ साफ सफाई का निर्देश दिया।

चन्दौली लोकसभा में सातवें और अंतिम चरण में एक जून को चुनाव होना है।अभी पाचवे चरण का चुनाव समाप्त हुआ है। मतदान निष्पक्षएपारदर्शी व सकुशल सम्पन्न हो इसको लेकर अधिकारी लगातार निरीक्षण व बैठक कर रहे है। इसी क्रम में सोमवार को चुनाव प्रेक्षक सिंधु बीण्रूपेश सकलडीहा में पिंक बूथ प्राथमिक विद्यालय सकलडीहा का निरीक्षण किया। इसके बाद तहसील के निर्वाचन कार्यालय और कंट्रोल रूम के बारे में निर्वाचन कर्मियों से जानकारी लिया। बरनेवल बूथ धरहरा मथेला और खडंवारी का निरीक्षण किया।

प्रेक्षक ने सकलडीहा और बलुआ में बनाये गये चेकपोस्टों पर सुबह से रात तक सख्ती से जांच पड़ताल करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही वेबकास्टिंग वाले मतदान केन्द्रों के बारे में जानकारी लिया। उन्होंने मतदान केंद्रों पर साफसफाई, पेयजल, बिजली, रैम्प, शौचालय, छाया की व्यवस्था का हाल जाना। कहा निर्वाचन आयोग के निर्देश पर मानक के अनुरूप सारी व्यवस्था दुरुस्त होनी चाहिए। इस मौके एसडीएम अनुपम मिश्रा, तहसीलदार राहुल सिंह, नायब तहसीलदार अमित सिंह, अजीत जायसवाल, कोतवाल संजय कुमार सिंह, शाकिब अली, स्टेटिक मजिस्ट्रेट सुदामा यादव, जयनारायण यादव सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

सकलडीहा राजवाहा में पूरी क्षमता से पानी न छोड़े जाने की मांग

सकलडीहा/चन्दौली। सकलडीहा राजवाहा में पर्याप्त मात्रा में पानी न छोड़े जाने से कृषि कार्य प्रभावित हो रहा है। धान की नर्सरी सहित पशुओं के चारा के लिए लगाया जाने वाला ढैचा व चरी में किसान डीजल इंजन चलाकर पानी दे रहे है। जिससे किसानो के ऊपर आर्थिक बोझ बढ़ गया है। इससे किसानों में आक्रोश पनप रहा है। लोगो ने पूरी क्षमता से राजवाहा चलाने की मांग किया है। सकलडीहा राजवाहा क्षेत्र का मुख्य सिंचाई का साधन है। साथ ही इससे दर्जनो माइनर जुड़ी है। जिससे सैकड़ो गावो के हजारों हेक्टयर खेतो की सिंचाई होती है। वर्तमान में धान की नर्सरी, ढैचा व चरी के लिए किसानों को पानी की आवश्यकता है। इसी को देखते हुए राजवाहे में दो दिन पूर्व पानी छोड़ा गया। लेकिन यह पानी पूरी क्षमता से नही चलाया गया। लिहाजा इसमे खेतो के सिंचाई के लिए लगे पाइप तक पानी नही पहुँच पा रहा।

मतदान भी है दान इसे प्राप्त करने के लिए विनम्रता और धैर्य की है आवश्यकता: ओमपाल सिंह

गाजीपुर। जनपद में सोमवार 20 मई को राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ इकाई द्वारा माधव सरस्वती विद्या मंदिर हायर सेकेंडरी स्कूलए के सभागार में लोकमत एवं मतदाता के संदर्भ में प्रबुद्ध वर्ग की भूमिका विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पौराणिक मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता माननीय ओमपाल सिंह प्रभारी कुटुम्ब प्रबोधन उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड तथा पूर्व राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ थे उन्होंने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मतदान भी दान हैए इसे प्राप्त करने के लिए विनम्रता और धैर्य की आवश्यकता है। भारत की समृद्धि की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भारत की ऋषि संस्कृति और कृषि संस्कृति का सिंहावलोकन किया जाना आवश्यक है।

शिक्षा से ही उद्देश्य को कर सकते हैं पूरा: पीएन सिंह

प्रयागराज। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज सिविल लाइंस में बोर्ड परीक्षा 24 में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक प्रयागराज पीएन सिंह एवं जिला विद्यालय निरीक्षक रमेश तिवारी ने शिक्षा की देवी मां सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलित करके एवं माल्यार्पण करके किया। प्रधानाचार्या नीलम मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत एवं आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम में इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्राओं निम्मी केसरवानी अपराजिता पटेल दिव्यांशी सिंह अस्मिता यादव कशिश यादव श्रेजल जायसवाल आंचल आकृति यादव गौरी यादव कोमल केसरी सौम्या तिवारी और श्रेया गुप्ता को तथा हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा में दीपिका तमन्ना पांडे अवंतिका मिश्रा खुशी पटेल राधिका आकृति कुशवाहा कीर्ति श्रीवास्तव को प्रमाण पत्र शील्ड एवं पुरस्कार प्रदान किया गया। विद्यालय की गृह परीक्षा में कक्षा 6 7 8 9 एवं 11 में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम में प्रो भास्कर शुक्ला डॉ प्रभाकर त्रिपाठी अनुपम परिहार खेल सचिव बृजेश खरे डा रेखा राम ने छात्राओं को प्रोत्साहित किया। जिला विद्यालय निरीक्षक पीएन सिंह ने विद्यालय प्रांगण में उपस्थित सभी को मतदान के प्रति जागरुक करते हुए शपथ दिलाई। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या नीलम मिश्रा ने सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रीति मिश्रा एवं वंदना आनंद ने किया। कार्यक्रम में समस्त शिक्षिकाओं की सक्रिय सहभागिता रही।

जनसत्ता दल लोकतांत्रिक ने अनुप्रिया पटेल के बयान पर जताई नाराजगी

● कहा की अनुप्रिया पटेल का बयान कुंठा से प्रेरित

संवाददाता। मिर्जापुर

जनसत्ता दल लोकतांत्रिक की एक महत्वपूर्ण बैठक अमरावती चौराहा पर संपन्न हुई। जहां पर जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के कार्यकर्ताओं ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और कुंडा के विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया पर केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल द्वारा की गई टिप्पणी पर गहरा आक्रोश व्यक्त किया। जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के जिला अध्यक्ष संजू मिश्रा ने कहा कि अनुप्रिया पटेल का यह कहना कि राजा ईवीएम की बटन से पैदा होता है अपने आप में दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि ईवीएम से राजा नहीं बल्कि जनप्रतिनिधि पैदा होता है।। जिसकी आयु 5 वर्ष होती है। कहां की वर्तमान लोकतंत्र में राजतंत्र तो समाप्त हो चुका है परंतु जो लोग पुराने राजघरानों से संबंध रखते हैं और राजनीति में सक्रिय हैं ऐसे राजा भैया जो सर्व सुलभ है उनके ऊपर कुंठा में दिया गया यह बयान निंदनीय है।

जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के युवा जिलाध्यक्ष अनुज उमर ने कहा कि अनुप्रिया पटेल सभी वर्गों का विश्वास खो चुकी है। मिर्जापुर जनपद के अंदर चुनाव में उन्हें जगह.जगह विरोध का सामना करना पड़ रहा है।

इसलिए वह बाहर कहीं भी कुछ बोल दे रही हैं।उनका बयान लोकतन्त्र की मूल भावना के खिलाफ है। कहा की राजा भैया विगत तीन दशक से उत्तर प्रदेश की राजनीति में विधानसभा के सदस्य हैं और कुंडा प्रतापगढ़ ही सहित पूरे प्रदेश में उनकी राजनीतिक विचारधारा के लोग कायल है। ऐसे में उन पर इस प्रकार की टिप्पणी करना अनुप्रिया पटेल जैसे जातिवादी नेताओं की हताशा को दर्शाता है। कहा की आने वाले समय में लोग इसका करारा जवाब देंगे। इस मौके पर प्रमुख रूप से पार्टी के पदाधिकारी और अन्य गण मान्य लोग उपस्थित रहे।

मालीवाल प्रकरण

आरोप-प्रत्यारोप

मालीवाल पर हमले के मामले में केजरीवाल के सहायक की गिरफ्तारी के बाद 'आप' और भाजपा में आरोप-प्रत्यारोप जारी हैं। दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष तथा 'आप' की राज्यसभा सांसद स्वाती मालीवाल पर कथित हमले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पीए विभव कुमार नामजद हैं। यह मामला गंभीर होता जा रहा है। यह घटनाक्रम तिहाड़ जेल से केजरीवाल की वापसी के कुछ ही दिन के भीतर हुआ जहां उनको दिल्ली एक्साइज़ नीति निर्धारण में भ्रष्टाचार के आरोप में बंद किया गया था। अब कथित हमले में विभव कुमार की गिरफ्तारी से विरोध प्रदर्शनों और राजनीतिक दांवपेंचों की शुरुआत हो गई है। इस मामले में स्वाती मालीवाल केन्द्र में हैं जिन पर दिल्ली महिला आयोग-डीसीडब्लू में नियुक्तियों में कथित अनियमितताओं के आरोप में 'एंटी-करप्शन ब्यूरो' जांच कर रहा है। पहले हमले की बात स्वीकारने वाली 'आप' अब आरोप लगा रही है कि मालीवाल को इस मामले में गिरफ्तारी की धमकी पर ब्लैकमेल किया गया था। विभव की गिरफ्तारी का संबंध इस जांच से है, जिसने पहले से ही अस्थिर स्थिति को और विस्फोटक बना दिया है। अपने सहायक की गिरफ्तारी के विरोध में अरविंद केजरीवाल ने 'आप' विधायकों, सांसदों और समर्थकों के साथ भाजपा मुख्यालय तक एक विरोध मार्च निकाल कर विभव के साथ एकजुटता प्रदर्शित की तथा भाजपा द्वारा राजनीतिक बदला लेने का 'खुलासा' किया। प्रधानमंत्री मोदी को भेजे एक वीडियो संदेश में केजरीवाल ने कहा है कि वे एक-एक कर गिरफ्तार करने के बजाय 'आप' के सभी नेताओं को एकसाथ गिरफ्तार कर लें। केजरीवाल ने जोर दिया कि विभव और मालीवाल के खिलाफ कार्रवाई 'आप' द्वारा भ्रष्टाचार का मुकाबला तथा प्रशासन में सुधार के प्रयासों को कुचलना है। दूसरी ओर भाजपा ने जोर दिया है कि भ्रष्टाचार-विरोधी कानून का पूरी सतर्कता से पालन किया जा रहा है। भाजपा नेताओं का तर्क है कि सार्वजनिक पदों पर पारदर्शिता व जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए जांच एक आवश्यक कदम है। मजेदार बात है कि कांग्रेस ने इस मुद्दे पर खामोश रहने का निर्णय किया है। इस तटस्थ दृष्टिकोण का उद्देश्य 'आप' और भाजपा के बीच टकराव से दूर रहना है क्योंकि ये दोनों दिल्ली में उसके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी हैं।

राजनीति में समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह प्रकरण ऐसे समय हुआ है, जब दिल्ली में एक सप्ताह में 25 मई को मतदान है। इस बीच 'आप' और भाजपा के बीच टकराव विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के बीच टकराव का अंग बन गया है। इस घटना के राजनीति पर दूरगामी परिणाम होंगे जिससे भावी चुनावों में मतदाताओं का दृष्टिकोण प्रभावित हो सकता है। फिलहाल मालीवाल पर दोषारोपण करना ठीक नहीं है क्योंकि मामला अभी अदालत के विचाराधीन है, लेकिन इतना जरूर कहा जा सकता है कि अतीत में दिए उनके कुछ बयान अजीब लगते हैं। एक बार उन्होंने ट्वीट किया कि वे 'सौभाग्यशाली बेटी' हैं, लेकिन दूसरे अवसर पर उन्होंने कहा कि बचपन में उनका यौन उत्पीड़न हुआ था। दोनों पार्टियों द्वारा एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप के बाद, दिल्ली की जनता पूरे प्रकरण पर गंभीर नजर रख रही है। उसे अनुमान है कि ऐसे समाधान निकलेंगे जिनसे 'राजनीतिक सुविधा' के बजाय सुशासन व न्याय को वरीयता मिलेगी। भगवान बुद्ध ने एक बार कहा था, 'तीन चीजें-सूरज, चांद और सत्य लंबे समय तक छिपाई नहीं जा सकती हैं।' जल्द ही हमें पता चल जाएगा कि मालीवाल प्रकरण एक राजनीतिक षडयंत्र है अथवा यह 'आप' पार्टी सदस्यों पर हमले की रणनीति है।

अमेरिका-ईरान संबंध और भारत

भारत ने चाबहार बंदरगाह समझौते के माध्यम से ईरान के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी की है। उसे अमेरिकन सरोकारों की पृष्ठभूमि में क्षेत्रीय हितों के साथ सावधानीपूर्वक संतुलन बनाना होगा।

भोपिंदर सिंह
(लेखक, सेवानिवृत्त सेनाधिकारी हैं)

भारत ने चाबहार बंदरगाह समझौते के माध्यम से ईरान के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी की है। उसे अमेरिकन सरोकारों की पृष्ठभूमि में क्षेत्रीय हितों के साथ सावधानीपूर्वक संतुलन बनाना होगा। ईरान अनावश्यक रूप से अनेक अमेरिकन प्रशासनों की संवेदनशीलता का शिकार रहा है, हालांकि विभिन्न अमेरिकन सरकारों में ईरान से संबंधों के मामले में मतभेद भी रहे हैं। अमेरिका-ईरान संबंधों में टकराव की शुरुआत 1979 में हुई जब ईरानी क्रांति तथा इसके बाद अमेरिकन दूतावास में बंधकों के प्रकरण ने द्विपक्षीय संबंधों में भारी तनाव पैदा किया।

लेकिन अमेरिका से संबंधों को लेकर ईरान कम आहत नहीं है। ईरानियों को गहराई तक इस तथ्य ने झकझोर दिया था कि 1953 में उनके लोकप्रिय प्रधानमंत्री मुहम्मद मुसादेह के खिलाफ सैनिक-विद्रोह के पीछे अमेरिकन खुफिया एजेंसी सीआईए का हाथ था। निश्चित रूप से अयातुल्ला खुमैनी का 'धार्मिक शुद्धतावाद' अमेरिका से संबंध बिगाड़ने का एक और कारण बना। 'ईरानी इस्लामी क्रांति' के बाद खुमैनी ने वैचारिक रूप से 'पश्चिम'-विरोधी दृष्टिकोण अपनाया था। इसके साथ ही ईरानी जनता सद्दाम हुसेन को अमेरिकी-समर्थन भूली नहीं है जिनके कारण एक दशक तक ईरान-ईराक युद्ध चला था। हालांकि, बाद में अमेरिका ने स्वयं सद्दाम हुसेन को सत्ता से हटा दिया था, पर आज अमेरिकी सरकारें ईरान से संबंध खराब करने में अपनी इस भूमिका को सुविधाजनक रूप से भूल गई हैं। इसके बाद अमेरिकनों ने ईरान को 9-11 तथा अलकायदा-आईएसआईएल के जन्म से जोड़ दिया, हालांकि ईरान का इन दोनों घटनाओं से कोई संबंध नहीं था। वास्तव में सच्चाई यह है कि ईरान तथा उसके समर्थक बल सीरिया-ईराक क्षेत्र में आईएसआईएल से लगातार लड़ते रहे हैं। ईरान ने बड़ी सीमा तक अलकायदा को कमजोर करने में अपनी भूमिका निभाई थी, पर इसके बावजूद अमेरिका ने ईरानी जनरल कासिम सुलेमानी की हत्या कर दी।

अमेरिका के 'सहयोगी'-इज़राइल और अरब के शेखों की शतरंज में नस्ली टकराव का महत्वपूर्ण स्थान है, इसलिए उनको सीरिया, लेबेनान और यमन में ईरान की शक्तिशाली स्थिति पसंद नहीं है और अनुचित रूप से ईरान को लगातार 'शैतान की तरह' पेश किया जाता है। हालांकि, सऊदी अरब और पाकिस्तान जैसे देशों ने धार्मिक अतिवाद और आतंक फैलाने में ज्यादा बड़ी भूमिका अदा की है, पर उनको लगातार अमेरिकी सहायता मिल रही है जबकि ईरान पर विकलांगकारी आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए हैं। अमेरिकनों ने एकपक्षीय रूप से ईरान नाभिकीय समझौता खारिज कर दिया, जबकि समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले अन्य पीप्लसवन देशों तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ की निगरानी एजेंसी 'इंटरनेशनल एटोमिक इनर्जी एजेंसी'-आईएईए ने पुष्टि की थी कि ईरान ने संधि की सभी शर्तों का पालन किया है। इज़राइल व अरब शेखों के दबाव में ईरान को लगातार मजबूर किया जा रहा है। उस पर मध्यपूर्व में होने वाली हर गलत चीज का ठीकरा फोड़ दिया जाता है, भले ही ईरान की इन घटनाओं में कोई भूमिका न रही हो।

'हमास' समूह का ईरान समर्थन करता है, जबकि अभी हाल तक सऊदी अरब व अन्य देश इसका समर्थन करते थे। इस बात के कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं हैं जो ईरान को 7 अक्टूबर, 2023 के हमले की योजना बनाने या उसके क्रियान्वयन से जोड़ सकें। लेकिन इसके बावजूद ईरान की संलिप्तता का शोर लगातार मचाया जा रहा है। किनारे धकेल देने पर मजबूरी में अपने संप्रभु गौरव को बनाए रखने के लिए ईरान जवाबी कार्रवाई कर रहा है। सीरिया में इज़राइलियों द्वारा उसके वरिष्ठ सैनिक अधिकारियों को मारे जाने के बाद ईरान इसके लिए मजबूर हुआ है। ईरान के कथित षडयंत्रों को 'सिद्ध करने' के लिए बहु-प्रतीक्षित औचित्य की जरूरत थी और अमेरिका ने इसे दोनों हाथों से पकड़ा। अमेरिका में यह चुनाव वर्ष है और वह 'दुश्मन' ईरान के खिलाफ चुनावी लाभ के लिए कार्रवाई करते दिखना चाहता है। इससे स्थिति और खराब हुई है। पहले ईरान नाभिकीय समझौता बहाल करने के वादे पर सत्ता में आए जो बाइडेन अब डोनाल्ड ट्रंप को मुकाबले में पराजित करने के लिए अपना यह वादा भूल गए हैं। आज बाइडेन ईरानियों का 'मुकाबला करने' में डोनाल्ड ट्रंप को पीछे छोड़ देने का प्रयास कर रहे हैं। इसके लिए वे ईरान पर और अधिक प्रतिबंध लगा रहे हैं। व्हाइट हाउस द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, 'सारी दुनिया ने देखा कि एक सप्ताह से भी कम समय पहले ईरान ने इज़राइल के खिलाफ अपनी एक सबसे बड़ी मिसाइल लांच की तथा उस पर ड्रोन विमानों से हमला किया। अपने सहयोगियों के साथ मिल कर संयुक्त राज्य अमेरिका ने इज़राइल की रक्षा की। हमने यह हमला विफल करने में सहायता की है। आज हम ईरान को इसके लिए जवाबदेह मान कर हम उसके खिलाफ नए प्रतिबंध तथा निर्यात नियंत्रण लगा रहे हैं।' इनका प्रतिबंधों और नियंत्रणों का प्रभाव अमेरिका से बहुत आगे तक जाता है। अमेरिका अब किसी ऐसे देश पर प्रतिबंध लगाने की धमकी दे रहा है जिसके ईरान से संबंध हों। इनमें संभवत: भारत भी है जिसने हाल ही में ईरान के रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चाबहार बंदरगाह के प्रबंधन के 10 वर्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह पाकिस्तानी भू-मार्गों को छोड़ कर अफगानिस्तान और मध्य एशियाई गणतंत्रों तक पहुंच मार्ग देता है।

यह भारत को पाकिस्तान के दूसरी ओर महत्वपूर्ण सुविधा देता है तथा चीन द्वारा पाकिस्तान में विकसित ग्वादर बंदरगाह का जवाब है। इससे प्राचीन सभ्यता वाले देशों-भारत तथा ईरान के संबंध मजबूत होते हैं। अफगानिस्तान में तालिबान अब पाकिस्तान से ऊब गए हैं, ऐसे में ईरान के साथ इस समझौते पर हस्ताक्षर कर नई दिल्ली ने इस क्षेत्र में चीन-पाकिस्तान धुरी का मुकाबला करने की बेहतरीन संभावनायें तैयार की हैं। जहां भारत को चीनी खतरों का मुकाबला करने के लिए अमेरिका से संबंध बनाए रखने और मजबूत करने की जरूरत है, वहं उसे क्षेत्रीय सरोकारों को देखते हुए ईरान के मामले में अमेरिकी सरोकारों से स्वयं को अलग रखना होगा। यदि अमेरिका केवल अपने द्विपक्षीय संबंधों और क्षेत्रीय दृष्टिकोण को महत्व दे तो भारत अमेरिका का 'अंध समर्थक' नहीं बना रह सकता है। यह भारत द्वारा निर्णय लेने में अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' बनाए रखने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। भारत ने रूसी तेल खरीदने तथा मास्को के साथ नजदीकी संबंध बनाए रखने में इसी नीति का अनुसरण किया है, हालांकि इसके साथ ही उसने यूक्रेन की घटनाओं पर भी चिन्ता प्रकट की है।

वैसे अमेरिका ने भारतीय दृष्टिकोण और मजबूरियों को समझा है जो किसी प्रकार अमेरिकी हितों को नुकसान पहुंचाने को लक्षित नहीं थीं। वह केवल अपने हितों की ही रक्षा करना चाहती थीं। इसलिए भारत ने ऐसे मामलों में कोई बयानबाजी नहीं की। वर्तमान स्थितियों को देखते हुए खासकर ईरान के मामलों में आक्रामक बयानतती से बाइडेन प्रशासन अपना ही नुकसान करेगा। इसलिए उसे चाबहार बंदरगाह के रखरखाव के दस वर्षीय समझौते के बारे में भारत और ईरान की मजबूरियों पर समग्र रूप से गौर करना चाहिए। अमेरिकी अधिकारी के बयान को इसी पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए। ईरान से भारतीय समझौते के बारे में सवाल का जवाब मांगने पर उसने कहा, 'आपने कई बार अनेक मामलों में हमारा दृष्टिकोण देखा है। इसका अर्थ है कि ईरान से बिजनेस करने वाले किसी उद्यम को यह पता होना चाहिए कि वे स्वयं को प्रतिबंधों के संभावित खतरे के सामने रख रहे हैं।' वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अमेरिका अपने दृष्टिकोण पर बना रह सकता है, पर भारत को भी अपने हितों को देखते हुए काम करना होगा। भारत और अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों में इस विरोधाभास को समझते और एक सीमा तक स्वीकार करते हैं। अमेरिका अच्छी तरह जानता है कि भारत के ईरान के साथ रणनीतिक समीकरणों का उद्देश्य अमेरिकी हितों को कमजोर करना नहीं है।

जटिल चुनौतियों से नीति परिवर्तन

आज की समस्याओं का समाधान केवल आध्यात्मिक हो सकता है और हमने युवा जनसंख्या को आध्यात्मिकता से वंचित रखा है। हमारी शिक्षा बहुत खतरनाक ढंग से जीवन विरोधी हो गई है।

आचार्य प्रशांत
(लेखक, वेदांत शिक्षक हैं)

भारत के महत्वपूर्ण मुद्दे स्थायी, परिवर्तनकारी परिवर्तन के लिए व्यावहारिक कार्रवाई और सामूहिक मानसिकता में बदलाव की मांग करते हैं। भारत को विभिन्न क्षेत्रों से उत्पन्न होने वाली अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को समाज, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि से संबंधित मानना आकर्षक लगता है, लेकिन अनिवार्य रूप से सभी समस्याओं की जड़ें मनुष्य के दिमाग में होती हैं और स्वयं की पर्याप्त समझ की कमी से उत्पन्न होती हैं। इसलिए समाधान बाहरी और आंतरिक दोनों डोमेन में होने चाहिए। आइए भारत को परेशान करने वाले पांच प्रमुख संघर्षों और चुनौतियों पर नजर डालें। भविष्य के लिए एक दृष्टिकोण में इन समस्याओं का रचनात्मक रूप से जवाब देना शामिल होगा।

यह सर्वविदित है कि जलवायु परिवर्तन एक मानवजनित घटना है। लद्दाख पहले से ही जलवायु परिवर्तन के कारण क्षेत्र की पारिस्थितिकी में होने वाले स्पष्ट बदलावों को लेकर आंदोलनरत है। यदि भारत ने तुरंत सुधारात्मक कदम नहीं उठाए तो पांच साल बहुत लंबा समय है। इस मुद्दे पर जन जागरूकता की भयावह कमी है जिसके कारण राजनीतिक निष्क्रियता हो रही है। हम देश को घेरने वाली भयानक गर्मी की लहरों से निपटने की योजना कैसे बना रहे हैं? फसल की घटती पैदावार और चरम मौसम की घटनाओं से गरीबों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? क्या हम नहीं जानते कि जिस जहरीली हवा का हम उपभोग कर रहे हैं या जिस जल संकट का हम सामना कर रहे हैं उसका स्रोत क्या है? हम वनों की कटाई और बड़े पैमाने पर कार्बन-उत्सर्जक बुनियादी ढांचे के निर्माण से हिमालय को बर्बाद करना जारी रख रहे हैं, यह जानते हुए भी कि इससे अनियमित बारिश के पैटर्न, ग्लेशियरों के पिघलने और अंतत: जीवन का विनाश हो रहा है, जैसा कि हम जानते हैं।

उपभोग के प्रति अंधी लालसा इस अंध विश्वास से आती है कि उपभोग किसी के जीवन की पूर्णता या सफलता का सूचक है। उपभोक्तावाद की इस धारणा के साथ हमारी आबादी का विशाल आकार आत्म-विनाश का नुस्खा है। अगले 5 वर्षों में, हमें मानव जाति के सामने मौजूद इस सबसे बड़े खतरे पर शिक्षा और जन-जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है और साथ ही आत्म-जागरूकता पर कार्यक्रमों के माध्यम से उपभोग-आधारित दोषपूर्ण जीवन दर्शन को सही करने की दिशा में वास्तविक प्रयासों की भी आवश्यकता है। वही वासना जो ग्रह को नष्ट करने की धमकी देती है, पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों के अधिकारों का भी हनन करती है। पशु अधिकारों के उल्लंघन, पारिस्थितिकी हानि और जैव विविधता विलुप्त होने की समस्याएँ - सभी एक ही स्रोत से उत्पन्न होती हैं। जब हम पशु अधिकारों की बात करते हैं, तो दुर्भाग्यवश आज यह जीवित रहने के बुनियादी अधिकार के लिए संघर्ष है। पिछले 50 वर्षों में ग्रह पर सभी जीवित प्रजातियों में से लगभग 50त्न विलुप्त हो गई हैं। इसका अधिकांश कारण हिंसक मानवीय कार्रवाई है। प्रतिदिन 100-1000 प्रजातियाँ विलुप्त हो जाती हैं। साथ ही, यह प्राकृतिक विलुप्ति दर से 100 से 1000 गुना तेज है। भारतीय और मनुष्य के रूप में, हमने पूरे ग्रह के खिलाफ जिस तरह का कालीन प्रजातिनाशक लॉन्च किया है, उसके साथ हम शारीरिक या आध्यात्मिक रूप से जीवित रह सकते हैं। अपने पैमाने और क्रूरता में, यह पृथ्वी पर अब तक देखी गई किसी भी हिंसा की कार्रवाई से कहीं अधिक है।

यह देखना विशेष रूप से खेदजनक है कि भारत, अपनी अहिंसा के साथ, जीवन रूपों के प्रति अत्याचार के सबसे बुरे अपराधियों में से एक है। चाहे वह मांस निर्यात हो, डेयरी उद्योग का विस्तार हो, या तथाकथित विकासात्मक गतिविधियों के माध्यम से पशु आवासों का संगठित विनाश हो, यह सभी के लिए केवल विनाश का संकेत है। अगले 5 वर्षों में, मैं इस मोर्चे पर सीधी और मजबूत कार्रवाई देखना चाहता हूं, जो केवल सार्वजनिक चेतना की उत्तेजना के परिणामस्वरूप हो सकती है। वही वासना जो ग्रह को नष्ट करने की धमकी देती है, वह पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों के अधिकारों का भी हनन करती है।. पशु अधिकारों के उल्लंघन, पारिस्थितिकी हानि और जैव विविधता विलुप्त होने की समस्याएँ - सभी एक ही स्रोत से उत्पन्न होती हैं। जब हम पशु अधिकारों की बात करते हैं, तो दुर्भाग्यवश आज यह जीवित रहने के बुनियादी अधिकार के लिए संघर्ष है। पिछले 50 वर्षों में ग्रह पर सभी जीवित प्रजातियों में से लगभग 50% विलुप्त हो गई हैं। इसका अधिकांश कारण हिंसक मानवीय कार्रवाई है। प्रतिदिन 100-1000 प्रजातियाँ विलुप्त हो जाती हैं। साथ ही, यह प्राकृतिक विलुप्ति दर से 100 से 1000 गुना तेज है।

भारतीय और मनुष्य के रूप में, हमने पूरे ग्रह के खिलाफ जिस तरह का कालीन प्रजातिनाशक लॉन्च किया है, उसके साथ हम शारीरिक या आध्यात्मिक रूप से जीवित रह सकते हैं। अपने पैमाने और क्रूरता में, यह पृथ्वी पर अब तक देखी गई किसी भी हिंसा की कार्रवाई से कहीं अधिक है। यह देखना विशेष रूप से खेदजनक है कि भारत, अपनी अहिंसा के साथ, जीवन रूपों के प्रति अत्याचार के सबसे बुरे अपराधियों में से एक है। चाहे वह मांस निर्यात हो, डेयरी उद्योग का विस्तार हो, या तथाकथित विकासात्मक गतिविधियों के माध्यम से पशु आवासों का संगठित विनाश हो, यह सभी के लिए केवल विनाश का संकेत है।

अगले 5 वर्षों में, मैं इस मोर्चे पर सीधी और मजबूत कार्रवाई देखना चाहता हूं, जो केवल सार्वजनिक चेतना की जागृति के परिणामस्वरूप हो सकती है। भारत की शिक्षा की स्थिति पर सार्वजनिक आँकड़े दर्शाते हैं कि देश कितने गहरे संकट में है। स्कूली छात्रों की बुनियादी मात्रात्मक और भाषाई क्षमताओं पर चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं, कॉलेज उत्तीर्ण छात्रों की बेरोजगारी का तो जिक्र ही नहीं किया गया है। विकसित दुनिया और विकासशील देशों की तुलना में, यह भारतीय समाज में शिक्षा को महत्व न देने की बात को उजागर करता है। आज की समस्याओं का समाधान केवल आध्यात्मिक हो सकता है और हमने युवा आबादी को आध्यात्मिकता से वंचित रखा है। हमारी शिक्षा बहुत खतरनाक ढंग से जीवन विरोधी हो गई है। मनुष्य तभी जीवित है जब वह सोच सके और समझ सके।

आप की बात

मोदी की लहर

लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण का मतदान समाप्त होने के बाद अब 25 मई और 1 जून को बाकी दो चरणों के चुनाव के बाद 4 जून को नतीजे आएंगे। 4 जून को लोकसभा चुनाव के नतीजे का सबको बेसब्री से इंतजार है। वैसे चुनाव परिणाम के संकेत शेयर बाजार से मिलने लगे हैं। पूंजी बाजार अत्यंत डरपोक होता है और किसी भी अफ्वाह पर वह तुरंत अपनी प्रतिक्रिया बता देता है। इस चुनाव में जो लोग परास्त होने जा रहे हैं उन्हें कोई लहर नजर नहीं आ रही है, जबकि कुछ राज्यों को छोड़कर देशभर में मोदी की लहर हिलोरें मार रही है। भाजपा तथा उसके नेतृत्व में एनडीए गठबंधन भी इस बार चुनाव में भरपूर मेहनत कर रहा है। भाजपा और एनडीए योजनाबद्ध और व्यवस्थित तरीके से चुनाव अभियान चला रहा है। जहां तक शेयर बाजार और अवैध रूप से चलने वाले सट्टा बाजार का सवाल है, तीसरे राउंड के बाद जो शेयर बाजार धड़ाम से गिर पड़ा था, वही अब 4 जून के परिणाम के बाद नई ऊंचाईयां छूकर बतायेगा। सटोरियो ने भाजपा को 300 से 335 सीटें तक मिलने का अनुमान लगाया है। मतदान केन्द्रों पर खासकर मध्य वर्ग व निम्न मध्य वर्ग जिस उत्साह के साथ मतदान कर रहा है, उससे भाजपा नेताओं का यह अनुमान सही सिद्ध हो सकता है कि देश में सत्ता-समर्थक लहर है।

-सुभाष बुडावन वाला, रतलाम

राम मंदिर पर राजनीति

सदियों से लंबित प्रकरण सुलझ कर अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हो चुका है। अब सैकड़ों-हजारों सालों तक भगवान श्रीराम का आशीर्वाद भक्तों पर बना रहेगा। विशुद्ध राजनीतिक इच्छाशक्ति व सनातन धर्म के प्रति आस्था व उसके आधार पर संघर्ष के चलते आज भगवान् राम टेंट से निकल कर विशाल मंदिर में विराजमान हो गए हैं। हालांकि, बहुत से राजनेताओं व राजनीतिक दलों को भव्य राम मंदिर का निर्माण पसंद नहीं आया है, लेकिन अब कोई भी सत्तारूढ़ राजनीतिक दल फिर रामलला को मंदिर से टेंट में लाने का दुस्साहस नहीं कर सकता। उनका यह दावा भी निरर्थक है कि अगर सत्ता में होते तो हम भी राम मंदिर का निर्माण करते। जनता उनकी कथनी और करनी से अच्छी तरह परिचित है। सारी जनता का विश्वास है कि यदि केन्द्र में प्रधानमंत्री मोदी की सरकार न होती तो अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद इसे लटकाने का भरपूर प्रयास किया जाता। जनता को अवसरवादी राजनेताओं से पूछना चाहिए कि देश के अन्य हजारों मंदिरों के बारे में उनका क्या विचार है जिनको तोड़ कर मस्जिदें बना ली गई थीं। भारत की अधिकांश हिंदू जनता अब जाग गई है और उसे भ्रमित करना असंभव है।

- शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

जमानत का प्राविधान

जमानत का प्राविधान लंबे समय से विवादास्पद रहा है। व्यापक भ्रष्टाचार, बेईमानी और अनैतिक कृत्यों के चलते अदालतें और जेलें हमेशा व्यस्त रहती हैं। अधिकांश आरोपी जनसेवकों के लिए जमानत मिलना मानो एक सामान्य बात हो गई है। वे जेल की सलाखों के पीछे रहकर भी अपने अधूरे सपनों को पूरा करने की योजना बनाते रहते हैं। अदालतें जमानत देकर एक तरह से उन्हें और आज़ादी प्रदान दे देती हैं। विडंबना है कि अदालतें जिन अपराधियों को सजा देती हैं, उनमें से अनेक जमानत पर बाहर आकर फिर से वही या उससे भी भयानक अपराध करते हैं। यह दुष्चक्र कभी समाप्त नहीं होता। अदालतों में तारीखें पड़ती रहती हैं और जमानत पर रिहा आरोपी अपने काम-धंधे निपटाते रहते हैं। यह सब देखकर आम जनता के मन में निराशा और हताशा पैदा होती है। आम आदमी सोचता है कि जो लोग बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार में लिप्त हैं, वे जमानत पर छूट जाएंगे और अपनी गतिविधियों को जारी रखेंगे। इसे देखते हुए न्याय प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। जमानत की शर्तें सख्त होनी चाहिए ताकि जो लोग समाज को नुकसान पहुंचाते हैं उन्हें आसानी से छूट न मिले। न्यायिक प्रक्रिया में पारदर्शिता और तेज़ी लाने की आवश्यकता है।

अवनीश कुमार गुप्ता, आजमगढ़

महिला उत्पीड़न

देश की राजधानी में मुख्यमंत्री के आवास पर एक राज्यसभा सांसद के साथ बदसलूकी का मामला सामने आने पर आम आदमी पार्टी-आप की लीपापोती अत्यधिक चिन्ता का विषय है। पुलिस विभाग को निष्पक्ष एवम त्वरित कार्रवाई कर दोषी को कठोरतम सजा दिलानी चाहिए। चिन्ता की बात है कि राजनीतिक दल महिला उत्पीड़न के मामलों में भी अपनी दलगत राजनीति अपनाने से बाज नहीं आते हैं। राजनीतिक दलों को यह प्रवृत्ति बदलना होगी ताकि महिला अस्मिता व महिला उत्पीड़न के सवाल पर सारा देश एक साथ खड़ा हो सके और महिला उत्पीड़न की घटनाओं पर रोक लगाई जा सके। मालीवाल प्रकरण में यह भी चिन्ता की बात है कि केजरीवाल ने आरोपी को बचाने का न केवल भरपूर प्रयास किया, बल्कि इसके लिए एक और महिला मंत्री को आगे कर दिया है। इसी प्रकार पश्चिम बंगाल की महिला मुख्यमंत्री भी संदेशखाली में महिला उत्पीड़न को संकुचित राजनीतिक व चुनावी राजनीति के दृष्टिकोण से देख रही हैं। महिला उत्पीड़न में कुछ महिलाओं की प्रत्यक्ष या परोक्ष भूमिका चिन्ता का विषय है।

- वीरेन्द्र कुमार जाटव, दिल्ली

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

शांतिपूर्ण मतदान सम्पन्न, प्रत्याशियों की किस्मत ईवीएम में बंद

● जनपद में 54.17 प्रतिशत मतदान ●गौरीगंज 55.15 प्रतिशत, अमेठी 51.43, तिलोई 56.47, जगदीशपुर 53.20, सलोन 54.66 प्रतिशत विधानसभा क्षेत्र में हुआ मतदान ●डीएम, एसपी ने क्षेत्र भ्रमण कर मतदान केंद्रों का किया निरीक्षण

अमेठी। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी निशा अनन्त के निर्देशन में लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 को सम्पन्न कराने हेतु की गई चाक चौबंद व्यवस्थाओं के अन्तर्गत गौरीगंजए अमेठीए तिलोईए जगदीशपुर व सलोन विधानसभा क्षेत्र में शांतिपूर्ण मतदान सम्पन्न हुआ। मतदाताओं ने निर्भीक होकर होकर स्वतंत्रतापूर्वक अपने मत का प्रयोग किया। सोमवार को प्रात: मॉकपॉल शुरू होने के उपरान्त प्रात: 07 बजे से मतदान शुरू हुआए जो कि निरंतर शाम 06 बजे तक चलाञ इस दौरान विधानसभा क्षेत्र गौरीगंज 55.15 प्रतिशत, अमेठी 51.43 प्रतिशत, तिलोई 56.47 प्रतिशत, जगदीशपुर 53.20 प्रतिशत, सलोन 54.66 प्रतिशत, मतदान हुआ तथा जनपद में 54.17 प्रतिशत मतदान हुआ। डीएम निशा अनन्तए पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह, मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेलए उपजिला निर्वाचन अधिकारी/ एडीएम अर्पित कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भारी फोर्स के साथ मतदान केन्द्रों का भ्रमण किया। डीएम निशा अनंत अमेठी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत संग्रामपुर के इंटर कालेज कालिकन एवं कंपोजिट विद्यालय सरवनपुर में बने बूथ का निरीक्षण किया। इस दौरान डीएम ने मतदाताओं से वार्ता करते हुए निर्भीक होकर मतदान करने की अपील की। बूथ पर तैनात कर्मचारियोंए पुलिस बल आदि को निर्देश दिए कि दिव्यांग मतदाताओं पर फोकस करेंए उन्हें लाईन में बिना लगे मतदान कराया जाए। डीएम ने विधानसभा क्षेत्र तिलोई के अंतर्गत भारतीय इन्टर कालेज जायस पर बने बूथ का निरीक्षण किया। जहां मतदाताओं से वार्ता के दौरान पीठासीन अधिकारी, अन्य कार्मिकों को निर्देश दिए कि मतदान में तेजी लाई जाएए जिससे कि सभी मतदाता अपने मत का प्रयोग कर सकें। डीएम डीएम निशा अनंत ने गौरीगंज, अमेठी, तिलोई, जगदीशपुर, सलोन विधानसभा क्षेत्र में स्वतंत्र, निष्पक्ष, शांतिपूर्ण तरीके से मतदान सम्पन्न होने पर क्षेत्र के सभी मतदाताओं, विशेष रूप से दिव्यांगजनए महिला मतदाताओं को अपने मत का निर्भीक होकर प्रयोग करने के लिए हार्दिक बधाई दी।

पाक की हिम्मत नही कि भारत की तरफ ऑख उठाकर देखेः पाठक

● साईकिल की हवा निकल गई हैः ओम प्रकाश राजभर

●प्रवीण निषाद के पक्ष में डिप्टी सीएम ने किया जनसभा

सम्बोधित करते उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक।

संतकबीरनगर। प्रदेश के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा कि मोदी कार्यकाल में देश का विकास तो हुआ ही साथ ही साथ विदेशों में भी भारत का मान बढ़ा है। वह सोमवार को धनघटा क्षेत्र के डेबरी में प्रदेश सरकार के मंत्री ओम प्रकाश राजभर और डॉ0 संजय निषाद के साथ जनसभा को संबोधित कर रहे थे। डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने कहा कि सबका साथ सबका विकास के मूल मंत्र पर कार्य करते हुए देश में गरीबों का उत्थान तो कर ही रही है। साथ ही साथ विदेशों में भी भारत का मान बढ़ाया है। पुलवामा घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि पुलवामा का बदला लेने के लिए हमारे देश की सेना दुश्मन के घर में घुसकर दोषियों को जवाब दिया तब से पाकिस्तान की हिम्मत नहीं है कि वह भारत की तरफ आंख उठाकर देख सके। उन्होंने कहा कि रूस और यूक्रेन के युद्ध के बीच हमारे देश के 24000 छात्र फंसे हुए थे जिनको लाने के लिए देश के प्रधानमंत्री दोनों देशों के नेताओं से बात किए। जिसका नतीजा हुआ कि हमारे सभी छात्र कुशल अपने घर अपने वतन लौट आए। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर तंज कसते हुए डिप्टी सीएम ने कहा कि अखिलेश की नजर में केवल सैफई के लोग ही सब कुछ है। वह समाज के किसी के हितैषी नहीं है।

प्रदेश सरकार के पंचायती राज मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि राजनीति में राहुल और अखिलेश अभी बच्चे हैं। यह लोग कितना भी जोर लगा लें लेकिन उत्तर प्रदेश इनका खाता खुलने वाला नहीं है। क्योंकि साइकिल की वाल निकल चुकी है। अब उसमें हवा नहीं रुकने वाला है। उन्होंने कहा कि मोदी योगी की सरकार देश और प्रदेश के सभी वर्गों का विकास कर रही है। कैबिनेट मंत्री संजय निषाद ने कहा कि आज निषाद समुदाय के लोगों को गुमराह करने का काम विपक्षी दल के लोग कर रहे हैं। लेकिन वह अपने मकसद में कभी कामयाब नहीं हो पाएंगे।

केंद्र में तीसरी बार मोदी सरकार बनाने के लिए देश की जनता पूरी तरह से मन बना चुकी है। केंद्र मे एनडीए की सरकार बनने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती है। सभा को प्रत्याशी प्रवीण निषाद, विधायक गणेश चंद चौहान, सदर विधायक अंकुर राज तिवारी, पूर्व विधायक दिग्विजय नारायण जय चौबे आदि लोगों में संबोधित किया। इस मौके पर जोखई सिंह, पौली ब्लाक के प्रमुख राममिलन यादव, नगर पंचायत अध्यक्ष हैंसर प्रतिनिधि नीलमणि, प्रदीप सिसोदिया, प्रदीप अग्रहरि, संजय पाठक, योगेंद्र निषाद सहित पार्टी के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित रहे।

लोस सामान्य निर्वाचन में मतदान निष्पक्ष निर्भीक, शान्तिपूर्णक तरीके से सम्पन्न

रायबरेली। जनपद रायबरेली की पांच विधानसभाओं में लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 में निर्धारित मतदेय स्थलो पर जनता जनार्दनए मतदाताओ ने बढ़चढ़कर मजबूत लोक तन्त्र के लिए जरूरी है। सबकी भागीदारी में आज हुए लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 में मतदान कर अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वहन किया। जिला निर्वाचन अधिकारी/ जिलाधिकारी हर्षिता माथुर तथा पुलिस अधीक्षक अभिषेक कुमार अग्रवाल ने लोकसभा सामान्य निर्वाचन के मतदान दिवस पर प्रात: से ही दर्जनों बूथों पर जाकर मतदान कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने सेक्टर व जोनल मजिस्ट्रेटध्पीठासीन अधिकारीध्मतदान अधिकारी से कहा कि वे त्वरित गति से मतदान कार्यों को निर्वाचन आयोग के दिशा.निर्देश का पालन के अनुरूप निष्पक्षए निर्भीक भय रहित होकर मतदान कराये। उन्होने सेक्टर मजिस्ट्रेट को निर्देश दिये कि वे पल.पल की जानकारी कन्ट्रोल रूम को देते रहे तथा यदि किसी मतदेय स्थल पर किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत हो तो तत्काल उसका निराकरण करा ले। उन्होने कहा प्रत्येक दशा में सकुशल निष्पक्ष शान्ति तरीके से मतदान को सफल कराये। उन्होंने सुरक्षा में लगे कर्मियों से कहा कि मतदाताओं को पंक्तिबद्ध तरीके से मतदान करायेए जो भी मतदाता मतदान कर चुका हो वह अनावश्यक बूथ पर न रूके। इसके अलावा मतदाताओं से यह भी बताते रहे कि किसी भी प्रकार की अफवाहों पर वह कतई ध्यान न दे। मतदान निष्पक्ष व निर्भीक भय रहित तरीके से हो रहा है। सायं 6 बजे तक आने वाले सभी मतदाताओं का मतदान कराया जायेगा। मतदान करने के लिए युवकध्युवतियों मतदान के लिए मतदान करने के लिए पंक्तिबद्ध होकर मतदान किया। मतदान करने के लिए अपनी वोटर लिए लेकर खुशी जाहिर की तथा मतदाता मित्रों द्वारा बुजुर्ग महिला व पुरुष मतदाताओं की सहायता कर उन्हें मतदान बूथों पर ले जाकर उनका मतदान कराया। जिलाधिकारीध्जिला निर्वाचन अधिकारी हर्षिता माथुर ने कन्ट्रोल रूम द्वारा सभी स्थानो पर माक.पोल मतदान शुरूआत की स्थिति भी जानी। जिला निर्वाचन अधिकारी/ जिलाधिकारी हर्षिता माथुर व पुलिस अधीक्षक अभिषेक कुमार अग्रवाल का काफिला जनपद की विधानसभा क्षेत्रों के मतदान बूथों का स्थलीय निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा किया। डीईओ.एसपी ने इधर उधर खड़े लोगो से कहा कि वे अनावश्यक चौराहो पर भीड़ न जमा करे। बल्कि कहा कि मतदान चल रहा है जागरूक मतदाता बनकर बूथ पर जाये तथा अपना वोट शान से करके आये तथा परिजनोए मित्रजनो को भी निष्पक्ष मतदान के लिए प्रेरित करके बूथ प्रतिशत बढ़वाने में अपना सहयोग दे। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने मतदान केन्द्रों पर जाकर पीठासीन अधिकारी से मतदान का प्रतिशत पूछने के साथ ही समूची पोलिंग पार्टी का कुशल क्षेम पूछा साथ ही निर्देश दिये कि मतदान त्वरित गति से कराया जाये। तत्पश्चात जिलाधिकारी ने मतदान बूथों का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी तथा पुलिस अधीक्षक ने समस्त विधानसभा क्षेत्रों में बने मतदान केन्द्रध्आदर्श मतदान केन्द्रए पिंक केंद्र को भी देखा तथा मतदान की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। पीठासीन अधिकारियों से मतदान का प्रतिशत जाना तथा त्वरित गति से मतदान कराने के भी निर्देश दिये। उन्होने यह भी कहा कि मतदाता पहचान पत्र न होने की दशा में वैकल्पिक फोटो पहचान दस्तावेज की मदद से भी मतदान कराये। इसके अलावा अनेक मतदेय स्थलों के मतदान की स्थिति का भी जायजा लियाए तथा निर्वाचन में लगे अधिकारियोंए कर्मचारियों को उचित दिशा निर्देश दिये। मतदान दिवस पर जनपद में चौतरफा चाक चौबंद व्यवस्था रही। मतदान दिवस पर बूथों पर मतदाता सहायता केन्द्र पूरी तरह से क्रियाशील नजर आये। जोनल मजिस्ट्रेटए सेक्टर मजिस्ट्रेट आदि अधिकारी पूरी तरह से सक्रिय रहे। इसके अलावा कई मोहल्लों व ग्रामीण आदि सैकड़ो लोगो ने बढ़चढ़कर मतदान करने के बारे में बताया।

● लोस सामान्य निर्वाचन मनेजमेंट में मतदाताओं ने बढ़चढ़कर किया मतदान

●जनपद में लोकसभा सामान्य निर्वाचन के मतदान दिवस पर रही चौतरफा चाक चौबंद रही व्यवस्था

नोक-झोंक के बीच चुनाव संपन्न, पड़े 54 फ़ीसदी वोट

● प्रत्याशियों की किस्मत ईवीएम कैद

गोंडा। जिले में पांचवें चरण का मतदान 20 मई को छुटपुट नोक-झोंक के बीच शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हो गया है। इस दौरान गोंडा संसदीय क्षेत्र में 51.64 व कैसरगंज संसदीय क्षेत्र 55.68 फ़ीसदी वोट पड़े। दोनों लोकसभा सीट के लिए सुबह 7 बजे से शाम 6 तक भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मतदान प्रक्रिया संपन्न हुई। भीषण गर्मी के बावजूद मतदाताओं में वोट डालने को लेकर काफी उत्साह देखा गया। सुबह 7 बजे से ही मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की लंबी कतारे लग गई। हालांकि दोपहर में गर्मी के कारण अधिकांश मतदान केंद्रों पर सन्नाटा पसर गया। परंतु 3 बजे के बाद से शाम 6 बजे तक मतदान केंद्रों पर वोट डालने का सिलसिला चलता रहा।

जिले के कैसरगंज लोकसभा सीट पर सपा, भाजपा, बसपा और एक निर्दल प्रत्याशी मिलकर कुल चार प्रत्याशी चुनाव के इस महासंग्राम में अपनी किस्मत आजमा रहे है। इस लोकसभा क्षेत्र में 19,04,726 मतदाता हैं। जिनमें 10,09,379 पुरुष और 8,95,285 महिला तथा 62 थर्ड जेण्डर हैं। इस लोकसभा सीट पर शाम 6 बजे तक 56 प्रतिशत मतदान हुआ। जबकि गोंडा लोकसभा क्षेत्र में कुल आठ प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। इस लोकसभा क्षेत्र में 18,43,121 मतदाता हैं। जिनमें 9,88,384 पुरूष, तथा 8,54,668 महिला तथा 69 थर्ड जेण्डर थे। यहां पर शाम 6 बजे तक 52 प्रतिशत मतदान हुआ। दोनों लोकसभा क्षेत्र को मिलाकर गोंडा जिले में 54 प्रतिशत मतदान हुआ। कुल मिलाकर दोनों लोकसभा सीटों पर 12 प्रत्याशियों का भाग्य इबीएम में कैद हो गया है। मतदान के दौरान आयुक्त योगेश्वर राम मिश्रा, डीआईजी अमरेंद्र प्रसाद सिंह, डीएम नेहा शर्मा और पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल भारी संख्या में पुलिस बल के साथ लगातार मतदान केंद्रों पर भ्रमणशील रह कर मतदान की निगरानी करते दिखे।

युवक संतुलन बिगड़ने के कारण ट्रेन से नीचे गिरकर गम्भीर रूप से घायल

ऊंचाहार। ट्रेन से यात्रा कर रहा युवक संतुलन बिगड़ने के कारण ट्रेन से नीचे गिरकर गम्भीर रूप से घायल हो गया, सूचना पर पहुंची पीआरवी पुलिस ने उसे एम्बुलेंस की मदद से सीएचसी भिजवायाए जहां डॉक्टरों ने उसे देखते ही मृत घोषित कर दियाए सीएचसी द्वारा मेमो दिये जाने के बाद पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा हैए मृतक युवक प्रतापगढ़ जिले का बताया जा रहा है। मामला क्षेत्र के अरखा रेलवे स्टेशन के निकट चंडीगढ़ से प्रयागराज जा रही ऊंचाहार एक्सप्रेस में यात्रा कर रहा धर्मेंद्र वर्मा 34 वर्ष निवासी छोटी चकिया मौली थाना कुंडा जिला प्रतापगढ़ संतुलन बिगड़ने के कारण ट्रेन से नीचे गिरकर गम्भीर रुप से घायल हो गयाए स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची पीआरवी पुलिस ने एम्बुलेंस की मदद से उसे सीएचसी पहुंचायाए जहां डॉक्टरों ने उसे देखते ही मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा है और परिजनों को घटना की जानकारी दी है।

क्विक न्यूज

लोकतंत्र के महापर्व में दिखा उत्साह

शिवगढ़, रायबरेली। लोकसभा चुनाव 2024 लोकतंत्र के महापर्व को लेकर क्षेत्र के सभी 87 बूथों पर मतदाताओं में काफी उत्साह देखने को मिला। कहीं सुबह, कही शाम तो कहीं चिलचिलाती धूप में मतदाता पोलिंग बूथ पर कतारबद्ध होकर मतदान के लिए अपने नम्बर का इंतजार करते नजर आए। समय सुबह 7.30 पर शिवली के बूथ संख्या 201, 202 में वोटरों की लम्बी लम्बी कतारें लगी रही। सुबह 8.30 पर बैती में बूथ संख्या 203ए204 में लम्बी लम्बी लाइने लगी रही। 10.30 पर सूरजपुर बूथ संख्या 208ए 209 पर मतदाताओं की संख्या कम दिखी। 12.10 मिनट पर बहुदाखुर्द में जहां मतदाताओं की लम्बी लाइन लगी रही तो वही बहुदा कला में सन्नाटा पसरा रहा। समय 12रू20 पर पिपडौली में 2 बूथों में से जहां एक बूथ पर लंबी लाइन लगी रही तो वहीं दूसरे बूथ पर सन्नाटा पसरा रहा। मवैया, भवानीगढ़, कुम्हरावां, दहिगवां, शिवगढ़, नेरथुआ, ओसाह, खजुरों, गूहा, ढेकवा, देहली में मतदाताओं में काफी उत्साह दिखाई पड़ा।

करंट की चपेट में आने से युवक की मौत

ऊंचाहार। घर के बिजली खम्भे में लगी केबल में उतरे करंट की चपेट में आने से युवक झुलस गया, जिसे सीएचसी में डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया, जिसके बाद परिजन शव लेकर घर चले गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने पोस्टमार्टम कराने की बात कहीए परिजनों द्वारा पोस्टमार्टम के लिए मना करने पर पुलिस पंचनामे की कार्यवाई कर वापस लौट आई। मामला क्षेत्र के पूरे चितऊ मजरे सरेनी गाँव का है, गाँव निवासी सजंय कुमार 38 वर्ष के घर पर सोमवार की सुबह फ्यूज उड़ने के कारण बिजली नहीं आ रही थी।वो घर के पास लगे खंभे में लगी केबल को डंडे से हिला रहा थाए उसी दौरान केबल कटे होने के कारण उसमें संचालित हो रहे करंट की चपेट में आने से वो गम्भीर रूप से झुलस गया।परिजनों द्वारा आनन फानन उसे सीएचसी लाया गयाए जहां डॉक्टरों ने उसे देखते ही मृत घोषित कर दिया। जिसके बाद परिजन शव लेकर घर चले गएए सीएचसी द्वारा मेमो देने के बाद पुलिस घर पहुंची तो परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से इंकार कर दिया। जिसके बाद पुलिस द्वारा पंचनामे की कार्यवाई की गई है। वहीं इस घटना से पिता रामभवन, भाई सन्दीपए पत्नी पुष्पा का रोरोकर बुरा हाल है। सीएचसी अधीक्षक डॉ मनोज शुक्ल ने बताया कि अस्पताल पहुंचने से पहले ही युवक की मौत हो चुकी थी। कोतवाल अनिल कुमार सिंह ने बताया कि परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से इंकार कर दियाए जिसके बाद पंचनामे की कार्यवाई की गई है।

सरेनी विधानसभा में शांतिपूर्ण हुआ मतदान

लालगंज रायबरेली। लोकसभा चुनाव में सरेनी विधानसभा क्षेत्र में शातिपूर्ण मतदान रहा। सुबह 7 बजे से ही बूथो पर मतदाताओं की लम्बी लाईने देखी गई। दोपहर में प्रचंड गर्मी व लू के चलते मतदान की रफ्तार धीमी रही लेकिन सायंकाल इसमें फिर तेजी देखी गई। सरेनी विधानसभा क्षेत्र में लगभग 55 फीसदी मतदान हुआ। लालगंज नगर की विभिन्न पोलिंग स्टेशनो पर मतदाताओं में मतदान के प्रति बेहद रूचि दिखाई दी। बैसवारा इंटर कालेज, आलमपुर प्राथमिक विद्यालय व पंचायत घर, बैसवारा डिग्री कालेज में लम्बी कतारो में लगकर मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। प्रचंड गर्मी के कारण गांवो से दूर बने पोलिंग स्टेशनो पर मतदान करने महिलायें नही पहुंच पाई। सेमरपहा, अम्बारा पश्चिम, पूरे ढकवा, चचिहा, कुम्हडौरा सहित दर्जनो गांवो में दूर-दराज पोलिंग स्टेशन बनने से प्रचड गर्मी के चलते महिलायें एवं बुजुर्ग मतदान से वंचित रह गये। जबकि दूसरी तरफपिछडा वर्ग एवं मुस्लिम बाहुल्य पोलिंग स्टेशनो पर मतदान की लम्बी-लम्बी कतारें देखी गई। ऐसे पोलिंग स्टेशनो पर मतदान का प्रतिशत भी अन्य केंद्रो की अपेक्षा अधिक दिखाई दिया। लालगंज नगर के चिकमंडी, घोसियाना, अली नगर, अल्ला नगर के अलावा बहाई, सोण्डासी, उतरागौरी, गौरा रूपई, बेलहनी, इलमऊ आंशिक पोलिंग स्टेशनो पर जमकर मतदान हुआ। यही हाल सरेनी ब्लाक क्षेत्र में भी रहा। दलीपुर, भोजपुर, चहोतर, अम्बरपुर, साढापुर, रालपुर, बैरूआ रामपुर, गोडा मथुरपुर आदि पोलिंग स्टेशनो पर मतदाओं की कतारें लगी रही। विधायक देवेंद्र प्रताप सिंह, ब्लाक प्रमुख शिवानी सिंह, कांग्रेस नेत्री सुधा द्विवेदी एवं पति मनोज द्विवेदी, नगर पंचायत अध्यक्ष सरिता गुप्ता एवं उनके पति दीपेंद्र गुप्ता, राजद के प्रदेश अध्यक्ष अशोक सिंह, कांग्रेस के पूर्व विधायक अशोक सिंह ने अपने-अपने गांवो में बने पोलिंग स्टेशनो पर सुबह-सुबह ही अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

गोविंदपुर में मतदाताओं ने दिया जागरूकता का संदेश

शिवगढ़, रायबरेली। शिवगढ़ क्षेत्र में दोपहर 1 बजे तक जहां 35 प्रतिशत मतदान रहा तो वहीं क्षेत्र के गोविंदपुर में कुल 1335 मतदाताओं में से 702 मतदाताओं ने लोकतंत्र के महापर्व में अपने मताधिकार का प्रयोग करके जागरूक मतदाता का संदेश दिया।

ईवीएम मशीन खराब होने से 40 मिनट बाधित रहा मतदान

शिवगढ़, रायबरेली। प्राथमिक विद्यालय अछई में बनाए गए पोलिंग बूथ संख्या 281 में पूर्वाह्न करीब 11.30 बजे ईवीएम मशीन खराब हो गई जिसकी जानकारी पीठासीन अधिकारी द्वारा उच्चधिकारियों को दी गई। करीब 40 मिनट बाद सेक्टर मजिस्ट्रेट ने मशीन बदलवाकर मतदान को चालू कराया।

कुम्हरावां में पीठासीन अधिकारी व अभिकर्ताओं के बीच हुई कहासुनी

समय 11.30 पर कुम्हरावां के बूथ संख्या 198 पर पीठासीन अधिकारी पुष्पेंद्र सिंह व पोलिंग पार्टी के कर्मचारी अपनी कुर्सी छोड़कर बगल के कक्ष में भोजन करने चले गए। वहीं मतदाता चिलचिलती धूप एवं भीषण गर्मी में वोट डालने के लिए लाइन में खड़े रहे जिसको लेकर पीठासीन अधिकारी व अभिकर्ताओं में झड़प हो गई। धूप में खड़ी महिला मतदाता शिवदेवी, गीता, रीता, रामरानी ने बताया कि वोट डालने आए हैं यहां कोई मौजूद नहीं है। कुछ देर में पहुंचे पीठासीन अधिकारी पुष्पेंद्र सिंह ने बताया कि मतदाता नहीं थे बूथ खाली था इसलिए हम लोग भोजन करने चले गए थे।

शिक्षा एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए किया पहला वोट

शिवगढ़, रायबरेली। क्षेत्र के दहिगवां की रहने वाले स्वाति सिंह, कान्ती यादव ने लोकतंत्र के महापर्व में शामिल होकर अपनी पहली वोट डाली। स्वाति सिंह, कांति यादव ने बताया कि लोकसभा चुनाव में उन्हें पहली बार वोट डालने का मौका मिला है। ईवीएम मशीन का बटन दबाकर खुद को गौरवान्वित महसूस कर रही हूं। उन्होंने बताया कि पहला वोट राष्ट्र के विकास एवं शिक्षा के उत्थान के लिए दिया है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर भी विशेष कार्य करने की जरूरत है।

महा पर्व पर लोगों ने बढ़ चढ़कर किया मतदान

सलोन। पांचवे चरण में लोकतंत्र के इस महा पर्व पर लोगों ने बढ़ चढ़कर मतदान किया। जिसमें विधानसभा सलोन क्षेत्र के कुल 369 बूथों पर 361605 मतदाताओं ने ई वी एम में कैद कर लोकसभा प्रत्याशियों का किया भाग्य का फैसला। लोकसभा चुनाव के शुरू हुए मतदान में सुबह तो मतदान करने वालों की भीड़ देखी गई परंतु जैसे.जैसे सूरज का तापमान बढ़ता गया वैसे.वैसे बूथों पर सन्नाटा पर सने लगा। पहली बार मतदान करने वाले नवयुवकों में काफी उत्साह देखा गया। तथा सलोन क्षेत्र के तीन बूथ पर ईबीएमएमें आई खराबी के कारण लगभग 40 मिनट मतदान प्रभावित हुआ। मतदान की जानकारी के लिए सुबह प्राथमिक विद्यालय लखनपुर में बनाए गए बूथ संख्या 345 को सुबह 8रू20 पर देखा गया तो कल 746 मतदाताओं मैं कल 93 मत पड़े थे। इस बूथ पर सबसे बड़ी कमी यह रही की बूथ से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी के गांव साहबगंज बाजार एनया पूरवाए नूरुद्दीनपुरए बाबूजी का पुरवाए बरुआए आदि गांव के सैकड़ो मतदाताओं का नाम इस बूथ से जुड़े होने से उन्हें काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।

बूथ संख्या 253पर मतदाताओं को धूप से बचने के लिए कुछ खास तरीके के टेंट लगाए गए थे जो आकर्षण का केंद्र बना रहा। कस्बा के सर्वोदय विद्यापीठ में बने बूथ संख्या 268 पर सुबह 10रू00 बजे 1215 मतदाताओं में 298 मत पड़े थे वही इसी स्थान पर बूथ संख्या 267 पर 1057 मतदाताओं में 191 मत पड़े थे। प्राथमिक विद्यालय आशिक़ाबाद में सुबह 11.20 पर बूथ संख्या 289 पर 1019 मतदाताओं में 304 मत पड़े थे। विधानसभा क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय बिंदा गंज के बूथ संख्या 232 पर मतदान शुरू होने के पहले कंट्रोल यूनिट खराब हो जाने से लगभग 40 मिनट मतदान बाधित रहा। प्राथमिक विद्यालय औटहिया के बूथ संख्या 296 पर भी कंट्रोल यूनिट में खराबी आने से थोड़ी देर मतदान बाधित रहा इसी तरह प्राथमिक विद्यालय बगहा के बूथ संख्या 252 पर लगभग 50 मतदान होने के बाद पी वी पैड मैं खराबी आने से यहां भी थोड़ी देर मतदान बाधित रहा। मशीनों में खराबी आने की सूचना मिलते ही इससे जुड़े अधिकारी आनन.फानन में बूथ पर पहुंच कर कंट्रोल यूनिट व वीवी पैट को चेंज किया तो मतदान तुरंत शुरू हुआ।

करंट लगने से युवक की मौत

लालगंज रायबरेली। घर में एल्युमिनियम का काम कर रहा मिस्त्री करंट की चपेट में आ गया। सीएचसी लालगंज पहुंचाया गया जहां चिकित्सको ने उसे मृत घोषित कर दिया। भोजपुर गांव निवासी रेहान (20) वर्ष पुत्र शब्बन गांव में ही एल्युमिनियम फिटिंग का काम करने गया था। वह करंट की चपेट में आ गया। डॉ. सत्यजीत सिंह ने परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया।

घायल को देखकर वापस जा रहा युवक दुर्घटना में गंभीर

लालगंज। भोजपुर के रहने वाले मिस्त्री रेहान के साथ हुई दुर्घटना की जानकारी पाकर लालगंज अस्पताल पहुंचे गोलू द्विवेदी पुत्र पिंटू द्विवेदी व इमरान पुत्र रमजान बाइक से वापस भोजपुर की ओर जा रहे थे। बेहटा गांव के पास बाइक असंतुलित होकर गिर गई। लालगंज सामु. स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया गोलू की हालत गंभीर होने के चलते चिकित्सको ने उसे प्राथमिक उपचार के बाद ट्रामा सेंटर लखनऊ के लिये रेफर कर दिया।

आरक्षण को समाप्त व संविधान को बदल देगे भाजपाईः अखिलेश यादव

● अपने महबूब नेता को देखने के लिए उमड़ा जनसैलाब, मंच तक पहुॅच गई जनता ●गठबंधन प्रत्याशी पप्पू निषाद के समर्थन में किया जनसभा

सम्बोधित करते पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव।

संतकबीरनगर। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवम् पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने सोमवार को संतकबीरनगर लोकसभा क्षेत्र के धनघटा में गठबंधन प्रत्याशी लक्ष्मीकांत उर्फ पप्पू निषाद के समर्थन में एक बड़ी जनसभा को संबोधित किया। अपने निर्धारित समय से लगभग डेढ़ घंटा देर पहुंचे अखिलेश यादव ने जैसे ही मंच पर पहुंच कर जनता का अभिवादन किया तो मौजूद भीड़ बेकाबू होकर डी की बैरिकेटिंग को तोड़ मंच तक पहुंच गई। कुछ देर के लिए अफरातफरी का माहौल बन गया। अपने संबोधन में अखिलेश यादव ने किसानों, नौजवानो, बेरोजगारों और महिलाओं की नब्ज टटोलते हुए आरक्षण और संविधान पर खतरे की आशंका भी जताई। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में सभी वर्ग के लोग परेशान हैं। किसान एमएसपी के लिए तो नौजवान नौकरी के लिए परेशान हैं। महिलाएं असुरक्षित है। कोविड का टीका लगवा कर सरकार सभी की जान के पीछे पड़ी हुई है। श्री यादव ने आरोप लगाया कि आरक्षण खत्म किया जा रहा है और संविधान को बदलकर लोकतंत्र को समाप्त करने की साजिश चल रही है। प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ को उल्टा पुल्टा सीएम बताते हुए कहा कि जानबूझ कर सरकार पेपर लीक करा रही है जिससे युवाओं को नौकरी न देना पड़े। यादव ने लोगों को भरोसा दिलाया कि यदि केंद्र में गठबंधन की सरकार बनी तो गरीब महिलाओं को लखपति बनाने के साथ ही बेरोजगारों को भत्ता भी दिया जाएगा। 35 मिनट के संबोधन में पूर्व सीएम ने दिसंबर तक 30 लाख नौकरियां देने का भी वादा किया। किसानों को लुभाते हुए उन्हें उनकी फसलों के लिए एमएसपी लागू करने और लाखों के कर्ज माफकरने का भी भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि उनके राजनैतिक जीवन का यह पहला चुनाव है जिसे सरकार के खिलाफ जनता चुनाव लड़ रही है। भाजपा के खिलाफ जनता में जो गुस्सा है वह सातवां चरण आते आते सातवें आसमान पर होगा। शिक्षा मित्रों और 69 हजार शिक्षक अभ्यर्थियों को सरकार बनने पर न्याय दिलाने का भी भरोसा दिलाया। जनसभा की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष अब्दुल कलाम और संचालन जिला महासचिव विनोद यादव ने किया। जनसभा को एमएलसी किरणपाल कश्यप, संतोष यादव सन्नी, विधायक त्रिभुवन दत्त, पूर्व मंत्री लालमणि प्रसाद, प्रदेश सचिव नित्यानंद यादव, केडी यादव,राम वृक्ष यादव, गौहर अली, रामा यादव, कांग्रेस के जिलाध्यक्ष प्रवीण पाण्डेय, पूर्व सांसद कमल किशोर कमांडो, विजय बहादुर यादव, सुबोध यादव, राजमन यादव, रामभवन शर्मा, राहुल यादव बादल, अजीम खान, राजेंद्र आजाद, मनोज यादव पहलवान, अंकिता बॉबी, अलगू चौहान, यूसुफ खान, हनुमान कन्नौजिया आदि ने भी संबोधित किया।

भीषण तपिश मतदाताओं का उत्साह नहीं रोक पायी

● कही जमकर कमल खिला तो कही तेज सायकिल दौड़ी, हाथी की रफ्तार सुस्त रही

●जिले में कई बूथों में ईवीएम हुयी खराब, तुरंत हुई व्यवस्था संसदीय क्षेत्र में 60.39 फीसदी हुआ मतदान, राठ विस में 63 फीसदी सबसे ज्यादा मतदान

मतदान करने का हो रहा इंतजार

हमीरपुर/मौदहा/राठ। जिले में लोकसभा चुनाव शांतपूर्ण रहा, छियालिस डिग्री पारा होने के बाद भी मतदाताओं में उत्साह देखा गया जिसमे महिलाओं की संख्या सबसे ज्यादा रही। वही जिले में साठ फीसदी मतदाताओं ने अपने मत का प्रयोग किया। जानकारी के मुताबिक जिले में भीषण तपिश के बाद भी ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में मतदाताओं का उत्साह कम नही हुआ। जैसे ही सुबह सात बजे से मतदान की प्रक्रिया शुरू हो गई वैसे ही मतदान केन्द्रो में मतदाताओं की लंबी-लंबी होने लगी हालांकि दिन में दस बजे के बाद चिलचिलाती गर्मी व गर्म हवाओं के चलते मतदान केन्द्रो में धीरे-धीरे सन्नाटा पसारने लगा। दोपहर होते-होते मतदान केदो में सन्नाटा पसर गया। एक आध मतदाता ही मतदान केन्द्रो में पहुंच अपने वोट डालते दिखाई दिए हालांकि तीन बजे के बाद मतदाताओं का रुख पुन: मतदान केदो की तरफहो गया और शाम को खासी संख्या में लोग मतदान केंद्र पहुंच डालने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते रहे। लोकतंत्र के इस महा पर्व में युवा महिलाओं व बुजुर्गों में खासा उत्साह देखा गया वहीं दिव्यांग भी देश की सरकार बनाने में अपनी भागीदारी करने में पीछे नहीं रहे। पहली बार वोट डाल रहे मतदाताओं में खासा उत्साह देखा गया। ग्राम सिसोलर में सुबह नौ बजे तक 12 फीसदी, भमई में 11:30 बजे तक 30 फीसदी, टिकरी में 12 बजे तक 34 फीसदी, कपसा में 12 बजे 34, इचौली में 12:15 पर 50, नायक पुरवा में 12:30 बजे तक 40, गुसियारी में 1:00 बजे तक 41, फ्तेहपुर में 1:30 बजे तक 46, खंडी में 1:40 बजे तक 39 फीसद, करहिया में 2 बजे तक 50 फीसदी, छिमौली में 2 बजे तक 50 फीसदी, सिलौली में चार बजे तक 58 फीसदी व कम्हरिया में चार बजे तक 47 फीसदी मतदान हुआ। ग्राम पाटनपुर के उच्च प्राथमिक विद्यालय के बूथ क्रमांक 289, नायकपुरवा के कन्या प्राथमिक विद्यालय बूथ संख्या 433 व ग्राम बक्षा के प्राथमिक विद्यालय बूथ संख्या 434 में मतदान के दौरान वीपी पैड काम न करने से कुछ देर के लिए मतदान की प्रक्रिया बाधित रही। अधिकारियों ने समय रहते दूसरे वीपी पैड लगा मतदान शुरू कराया। हमीरपुर महोबा सीट से इस बार भाजपा से पुष्पेंद्र सिंह चंदेल, सपा से राजेंद्र लोधी व बसपा से निर्दोष कुमार दीक्षित अपना अपना भाग्य आजमा रहे हैं।

नाराज मतदाताओं को समझा बुझाकर डलवाया वोट

राठ। क्षेत्र के टूंका गांव में पेयजल से निजात न मिलने से ग्रामीण वोट डालने नहीं पहुंचे। सूचना पर तहसीलदार कुमार भूपेंद्र और सीओ दिलीप सिंह मौके पर पहुंचे। तहसीलदार ने ग्रामीणों को समझा बुझाकर शांत कराया। जब कहीं जाकर साढ़े सात बजे से मतदान शुरू हुआ। टूंका गांव निवासी रवि, कुंवरलाल नईम, चैनू, मोनू, अजीत आदि ने बताया कि पांच साल पहले गांव में पानी की टंकी बनकर तैयार हुई थी। अभी तक गांव में पानी की सप्लाई नहीं हुई है। जिससे ग्रामीणों को पेयजल की किल्लत है। बताया कि गांव से एक किमी दूर खड़ाखर गांव में बनी पानी की टंकी से सप्लाई चालू के लिए अधिकारियों को अवगत कराया था। लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। जिसको लेकर ग्रामीणों ने वोट न डालने का निर्णय लिया। बूथों पर जब ग्रामीण वोट डालने नहीं पहुंचे तो अधिकारियों को सूचना दी गई। मौके पर तहसीलदार कुमार भूपेंद्र और सीओ दिलीप सिंह ने ग्रामीणों को समझाया। तब आधे घंटे बाद मतदान शुरू हुआ। सीओ दिलीप सिंह ने कहा कि ग्रामीणों को समझाकर मतदान शुरू करा दिया है।

आधा दर्जन स्थानों पर ईवीएम खराब

राठ। राठ कस्बा सहित ग्रामीण क्षेत्र के करीब आधा दर्जन स्थानों पर ईवीएम मशीनें खराब होने से कुछ समय के लिए मतदान बाधित रहा। सूचना पर पहुंचे चुनाव अधिकारियों ने दूसरी मशीनें लगाकर मतदान संपन्न कराया। कस्बे के फैज ए आम इंटर कालेज की बूथ संख्या 258 की मशीन दोपहर करीब सवा एक बजे खराब हो गई। इस मशीन पर 390 वोट डाले जा चुके थे। करीब बीस मिनट में दूसरी मशीन लगाकर मतदान शुरू कराया गया। वहीं क्षेत्र के टिकरिया गांव के उच्च प्राथमिक विद्यालय की बूथ संख्या 331 में मतदान शुरू होने के 15 मिनट बाद मशीन खराब हो गई। दूसरी मशीन मंगाई गई। केंद्र में करीब 40 मिनट मतदान बाधित रहा। नहदौरा गांव के बूथ संख्या 287 में मशीन खराब होने से करीब एक घंटे मतदान रुका रहा। नहदौरा गांव में एसडीएम विपिन कुमार मौके पर पहुंचे और दूसरी मशीन लगवाकर मतदान संपन्न कराया।

जालौन गरौठा की भोगनीपुर विस में 58,59 प्रतिशत मतदान

कानपुर देहात। सोमवार को सम्पन्न हुये पाँचवे चरण के अर्न्तगत जालौन गरौठा लोकसभा की भोगनीपुर विधानसभा में शाम छह बजे तक साढे 58 प्रतिशत से अधिक मतदान दर्ज किया गया। पुरूषो का मतदान करीब 60 प्रतिशत व महिलाओं का मतदान 57 प्रतिशत से अधिक दर्ज किया गया। वहीं थर्ड जेण्डर का 25 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। भोगनीपुर विधानसभा में सुबह से लम्बी कतारे देखी गयी। सुबह 9 बजे तक 15 प्रतिशत से अधिक मतदान किया जा चुका था, 11 बजे तक मतदान का प्रतिशत 30 पहुँच गया, 1 बजे मतदान का प्रतिशत 41 प्रतिशत से अधिक हो गया, 3 बजे मतदान का प्रतिशत 48 प्रतिशत को पार कर गया, 5 बजे मतदान का प्रतिशत 56 से अधिक दर्ज किया गया। शाम छह बजे तक कुल 58.59 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया, जिसमें पुरूषों ने 59.65 प्रतिशत, महिलाओं ने 57,37 प्रतिशत व थर्ड जेण्डर ने 25 प्रतिशत मतदान किया।

लोकतंत्र का उल्लास, 43 डिग्री सेल्सियस तापमान पर झूमकर मतदान

● छिटपुट घटनाओं के बीच संपन्न पंद्रहवी लोकसभा का मतदान

●कहीं मतदान का बहिष्कार, कहीं ईवीएम बनी नजर आईं दगाबाज

●गरमी के बावजूद लंबी लाइन पर लगकर बारी का किया इंतजार

फतेहपुर। पंद्रहवीं लोकसभा के लिए सोमवार छिटपुट घटनाओं के बीच मतदान संपन्न हो गया। कहीं विकास के नाम पर मतदान का बहिष्कार किया गया तो कहीं पर ईवीएम के काम न करने से मतदान पर कुछेक समय के लिए असर देखने को मिला। तापमान की मार के बाद मतदाताओं का जोश ठंडा नहीं हो सका। दोपहर में जरूर मतदान पर असर दिखा लेकिन इसमें लोकतंत्र के उल्लास पर तनिक असर नहीं दिखाई दिया। हाल यह रहे कि बेइंतहा गरमी के बावजूद मतदाताओं को लंबी लाइन में लगकर अपनी बारी का इंतजार करते देखा गया।

इस चुनाव में भाजपा, सपा व बसपा उम्मीदवार के साथ 15 प्रत्याशी मैदान में थे। कुल 19 लाख 35 हजार 891 मतदाताओं को मताधिकार का प्रयोग करना था। जिसमें 8 लाख 97 हजार 695 महिला मतदाता और 10 लाख 38 हजार 108 पुरुष मतदाता शामिल रहे। मतदान के लिए 1404 केंद्र बनाए गए थे। छह एआरओ व एक आरओ की निगहबानी में चुनावी प्रक्रिया का आगाज सुबह सात बजे से हुआ। जैसे ही वोटिंग शुरू हुई, लोकतंत्र के उत्सव का भागीदार बनने को लोग घरों से बाहर निकलने लगे।

तेज धूप व उमस के बावजूद मतदाताओं का उत्साह और उल्लास देखने को मिलता रहा। हाल यह रहे कि दोपहर तापमान के 43 डिग्री सेल्सियस पहुंचने के बावजूद इनका जोश बरकरार रहा। पोलिंग बूथ में लंबी लंबी लाइनें इसकी ताकीद करती रहीं। यदि कुछेक स्थानों पर छुटपुट वारदातों और मतदान बहिष्कार की घटनाओं को छोड़ दें तो पूरी प्रक्रिया शांतिपूर्वक संपन्न हो गई। जिला निर्वाचन अधिकारी सी. इंदुमती ने बताया कि चुनाव प्रक्रिया संपन्न करा ली गई है। जिसमें मतदान को लेकर खाशा जोश देखने को मिला है। मतदाताओं ने मौसम की परवाह किए बगैर वोट कर लोकतंत्र को मजबूती देने का काम किया है।

चार घंटे में कम हुआ मतदान: लोकसभा चुनाव में बेइंतहा गरमी का असर साफ दिखाई देता रहा। सुबह सात बजे से नौ बजे के बीच 14.25 प्रतिशत मतदाता वोट की चोट करने को बूथ पहुंचे। नौ बजे से 11 बजे के बीच मतदान प्रतिशत का आंकड़ा दूना होकर 28.58 प्रतिशत पहुंच गया। इसके बाद जैसे जैसे गरमी बढती रही, वैसे वैसे चुनाव पर असर दिखने लगा। 11 बजे से दोपहर एक बजे के बीच मतदान का प्रतिशत 10 फीसद के आसपास आकर ठहर गया। इस दौरान तक 39.83 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डाले। इसके बाद का समय मतदान प्रतिशत के लिहाज से और कमजोर रहा। इस अवधि में 47.23 प्रतिशत मतदान हुआ। शाम 5 बजे तक 54.97 प्रतिशत तक पहुंच गया। हालांकि इसके बाद के आखिरी राउंड में मतदाताओं का जोश दिखाई दिया।

डीएम के नेतृत्व में जनपद में सकुशल संपन्न हुआ मतदान

● मंडलायुक्त ने निर्वाचन कंट्रोल रूम का किया निरीक्षण

संवाददाता। कानपुर देहात

एक मतदान केन्द्र के बाहर मतदाता से कुशलक्षेम पूँछते एसपी बीबीजीटी एस मूर्ति

जिलाधिकारी आलोक सिंह के नेतृत्व में लोकसभा 45.जालौन के विधानसभा 208 भोगनीपुर में मतदान शांतिपूर्णए सकुशलएनिष्पक्ष संपन्न हुआ। सभी वर्ग के मतदाताओं में उत्साह दिखा। युवा, दिव्यांग, वृद्ध, महिलाएं आदि सभी ने बढ़ चढ़कर मतदान में अपनी हिस्सेदारी निभाई। जनपद स्तर पर बने कंट्रोल रूम के माध्यम से पल.पल की अपडेट संबंधित अधिकारी लेते रहेए जहां कहीं भी किसी प्रकार की समस्या संज्ञान में आईए उसका तत्काल निस्तारण कराया गया।

इस दौरान मंडलायुक्त अमित गुप्ता द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष में बने कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया गयाए निरीक्षण के दौरान उन्होंने कंट्रोल रूम में प्राप्त शिकायतो के निस्तारण के संबंध में जानकारी ली तथा आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

वही विधानसभा में बने मॉडल बूथए दिव्यांग बूथ, पिंक बूथ, युवा बूथ आदि का खास आकर्षण रहा। मतदान केंद्रों में साफसफाईए स्वच्छ पेयजलए शौचालयए छाया आदि की उत्तम व्यवस्था रही। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक बीबीजीटीएस मूर्ति, अपर जिलाधिकारी प्रशासन अमित कुमार, जिला विकास अधिकारी गोरखनाथ भट्ट, अतिरिक्त मजिस्ट्रेट सुरभि शर्मा तथा संबंधित अधिकारीगण आदि उपस्थित रहे।

क्विक न्यूज

किशोर ने भाजपा के पक्ष में आठ बार किया मतदान, गिरफ्तार, पोलिंग टीम सस्पेंड, पुनर्मतदान की संस्तुति

फर्रुखाबाद। आठ बार भाजपा के पक्ष में मतदान करने वाले किशोर के खिलाफपुलिस नें मुकदमा दर्ज करनें के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लियालापरवाही पाये जानें पर पोलिंग टीम को निलंबित भी किया गया है । पुनर्मतदान की संस्तुति भी की गयी है। दरअसल 13 मई को चौथे चरण के मतदान के दौरान के अलीगंज विधान सभा के अंतर्गत थाना नयागाँव के ग्राम खिरिया पमारान बूथ संख्या 343 पर प्रधान अनिल ठाकुर के 17 वर्षीय पुत्र नें फर्जी मतदान लगभग 7 से 8 बार किया। जिसका वाकायदा वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर खुद वायरल भी किया। वीडियो को सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव के साथ ही कांग्रेस नेता राहुल गांधी नें अपने सोशल मीडिया एकाउंट पर पोस्ट किया। जिसके बाद किशोर पर मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने उसे गिरफ्तार भी कर लिया। आरोपी को जिला प्रोवेशन अधिकारी की अभिरक्षा में दिया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी डा.वीके सिंह ने बताया कि लापरवाही पाए जानें पर खिरिया पमारान की पोलिंग पार्टी को निलंबित कर दिया गया है। वही स्वतंत्र व निष्पक्ष मतदान के लिए बूथ पर पुनर्मतदान की संस्तुति चुनाव आयोग से की गयी है। आरोपी किशोर को गिरफ्तार किया गया है।

नर्स के आवास में लोहिया अस्पताल में लगी आग

फर्रुखाबाद। शाम लोहिया अस्पताल के नर्स के सरकारी आवास में भीषण आग लग गयी। जिससे हड़कंप मच गया। आस-पास के पड़ोसियों नें खिड़की आदि तोड़कर आग बुझानें का प्रयास किया। लेकिन आग नही बुझी। बाद में पंहुची दमकल नें बमुश्किल आग पर काबू पाया।यज्ञेश कुमारी लोहिया अस्पताल के टाइप-2 भवन के कमरा नम्बर 28 में रहती हैं। वह लोहिया अस्पताल में पुरुष में स्टाप नर्स के पद पर कार्यरत है। वह जनपद इटावा अपने मायके निजी कार्य से गयी थी। घर पर ताला पड़ा था। शाम लगभग 4.30 बजे अचानक उनके कमरें से तेज धुआं उठता पड़ोसी कुलदीप नें देखा। उन्होंने आस-पास के लोगों को जानकारी दी। पड़ोसियों नें खिड़की का कांच तोड़कर समर आदि की मदद से आग पर काबू पानें का प्रयास किया लेकिन आग तेज होनें से कामयाबी नही मिली। एसडीएम सदर गजराज सिंह, सीएमएस डा. अशोक प्रियदर्शी व थाना पुलिस मौके पर पंहुची। दमकल की दो गाड़ी मौके पर पंहुची उन्होंने आग पर काबू पाया। जानकारी मिलने पर यज्ञेश कुमारी भी आ गयी । आग से उनके घर के सामान के साथ ही कम्प्यूटर और उससे सम्बधित लाखों का सामान भी जल गया। कुल लगभग 5 लाख का नुकसान हुआ।

सड़क दुर्घटनाओं में दो मरे, एक घायल

सण्डीला (हरदोई)। दो सड़क दुर्घटनाओं में दो व्यक्तियों की मौत हो गयी। एक गंभीर रूप से घायल हो गया। पहली सड़क दुर्घटना सण्डीला गदौरा मार्ग पर पंजाबीखेड़ा मुबारखेड़ा मोड़ पर हुई। ग्राम टिकरा बरार निवासी प्रॉपर्टी डीलर और क्षेत्र के बड़े किसान हाजी रउफ़अपने 10 वर्षीय पुत्र जाफ़र उर्फ़साहिल के साथ शाम के समय मोटरसाइकिल से घर जा रहे थेए तभी सामने से आ रही मोटरसाइकिल से टक्कर हो गयी। इस भीषण टक्कर से हाजी रउफ़की मौके पर ही मौत हो गयीए जबकि जाफ़र उर्फ़साहिल घायल हो गया। दूसरी मोटरसाइकिल पर सवार युवक भी घायल हुआ है। दूसरी दुर्घटना थाना अतरौली के अंतर्गत खसरौल पुलिया के पास हुई। ग्राम जानकीखेड़ा मजरा भरावन निवासी 30 वर्षीय प्रदीप कुमार दोपहर को ई.रिक्शा लेकर ग्राम नेवादा जा रहा था। खसरौल पुलिस के पास किसी अज्ञात वाहन ने इस ई.रिक्शा को टक्कर मार दी, जिससे प्रदीप गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे पहले सीएचसी भरावन लाया गया, जहां से उसे ट्रॉमासेंटर भेजा गया लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गयी।

युवक को मारपीट कर दी धमकी

गुरसहायगंज (कन्नौज)। रंजिश के चलते युवक के साथ गांव के ही एक परिवार के दो सदस्यों ने अभद्रता व मारपीट कर ना सिर्फघायल कर दिया बल्कि धमकी भी दी। पीड़ित ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। क्षेत्र के ग्राम तेराजाकेट निवासी विकास कुमार पुत्र हरी बाबू द्वारा कोतवाली में दर्ज कराए गए मुकदमे में कहा गया है कि रविवार की शाम वह अपने घर के बाहर खड़ा था तभी गांव के ही राज किशोर एवं उसकी पत्नी संगीता देवी आए और रंजिश के चलते उसके साथ गाली गलौज करते हुए लात घूसो से मारपीट कर घायल कर दिया तथा जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित ने बताया कि विगत 08 मई की दोपहर उसकी पत्नी पूरन देवी को भी उक्त लोगों ने मारा पीटा था। कोतवाली पुलिस द्वारा मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

जहरीला पदार्थ खाकर महिला ने दी जान

फतेहपुर। राधानगर थाना क्षेत्र के ग्राम केवई में पति से झगड़ा करने के बाद 28 वर्षीय महिला ने जहरीला पदार्थ खा लिया। जिसे उपचार के लिए अस्पताल लाया गया। जहां उसे कानपुर के लिए रेफर कर दिया जिसकी रास्ते में मौत हो गई।

टीमें रहीं भागतीं, पर्यवेक्षक भी लेते रहे जायजा

● पोलिंग बूथ के अंदर सीआरएफ की कमान बाहर का दारोमदार रहा खाकी के पास

फतेहपुर। लोकसभा चुनाव के मतदान की सुचिता को लेकर प्रशासनिक चौकसी देखते बनी। तीसरी आंख की निगहबानी के बावजूद प्रशासनिक निगाहें चौकन्ना रहीं। पोलिंग बूथ के अंदर सीआरपफका पहरा तो बाहर का दारोमदार खाकी संभाले नजर आई। मतदान की हकीकत जानने को गठित टीमें भागती रहीं। जिला निर्वाचन अधिकारी सी. इन्दुमती व पुलिस अधीक्षक उदय शंकर सिंह से लेकर पर्यवेक्षक तक की पैनी निगाहें समूची मतदान प्रक्रिया पर लगी रहीं। शहर के एक बूथ में चुनाव में अडचन बन रहे लोगों को खदेडने को खाकी को जमीन पर लाठियां पटकती नजर आई।

देश के सबसे बडे इस चुनाव में चुनाव आयोग की गाइड लाइन का सख्ती से पालन किया गया। संवेदनशील व अतिसंवेदनशील मतदान केंद्रों में वर्दी का तगड़ा पहरा नजर आया। 173 सेक्टर मजिस्ट्रेट और 14 जोनल मजिस्ट्रेट की भागदौड देखती बनी। चुनाव के निष्पक्ष संपादन को पोलिंग बूथ के अंदर सीआरएफ के जवान तैनात रहे तो बाहर की सुरक्षा व्यवस्था संभालने को सिविल पुलिस चौकन्ना नजर आई। जो जरा सी गड़बड़ी होने की आशंका पर एक्शन लेती दिखाई दी। चुनावी प्रक्रिया पर निगाहें रखने को जिला निर्वाचन अधिकारी सी. इंदुमती का एसपी उदय शंकर सिंह के साथ राउंड में रहीं।

वोट डाल कर बताई मताधिकार की अहमियत: सोमवार लोकसभा चुनाव की हुई वोटिंग का प्रतिशत बढाने को जिम्मेदार नागरिक सक्रिय नजर आए। इंडिया गठबंधन से सपा उम्मीदवार नरेश उत्तम पटेल ने जहानाबाद विधानसभा के लहुरी सराय गांव में वोट डालकर मतदाताओं से मताधिकार करने का भरोसा लिया। उन्होंने कहा कि वोट किसी को भी करें लेकिन इसे जाया नहीं।

पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष जगनायक सिंह यादव के साथ सपा विधायक चंद्र प्रकाश लोधी ने भी अपने मताधिकार का प्रयोग करते हुए एक एक वोट की कीमत पर रोशनी डाली। भाजपा जिलाध्यक्ष मुखलाल पाल ने मतदान करके जनता जर्नादन से पिछले मतदान प्रतिशत के रिकार्ड को तोडने की गुजारिश की। 1091 बूथ पर रही आयोग की रही सीधी नजर: फ्तेहपुर संसदीय सीट के 1091 बूथ पर निर्वाचन आयोग की सीधी नजर रही। सभी छह विधानसभाओं में समाहित इन बूथ की बेवकास्टिंग की जाती रही। प्रशासनिक अफ्सरों का इन्हीं बूथों पर ज्यादा दमदम देखा गया। उधर, चुनावी सुचिता को लेकर कलेक्ट्रेट में बना कंट्रोल रूम भी पूरी तरह से अलर्ट मोड पर दिखाई पडता रहा। सेल्फी प्वाइंट पर दिखा जमघट: निर्वाचन आयोग की पहल पर इस चुनाव में आदर्श मतदान केंद्रों में सेल्फी प्वाइंट इजाद किए गए थे।

छापेमारी कर पकड़ी गैर प्रांत की शराब एक गिरफ्तार, संचालक फरार

संवाददाता। फतेहपुर

आबकारी निरीक्षक ने अपने हमराही सिपाहियों के साथ ही स्थानीय थाना पुलिस के साथ खखरेरू कस्बे में संचालित एक दुकान पर छापेमारी की। इस दौरान टीम ने दुकान से गैर प्रांत की शराब व देशी शराब बरामद की। इस मामले में टीम ने एक व्यक्ति को जहां गिरफ्तार कर लिया वहीं दुकान संचालक मौके से भाग जाने में सफ्ल रहा। जिसकी तलाश की जा रही है।

जानकारी के अनुसार आबकारी निरीक्षक रमेश कुमार सिंह अपने हमराही कर्मचारियों के अलावा स्थानीय फोर्स के साथ गश्त कर रहे थे। जब टीम खखरेरू कस्बा पहुंची को सौरभ विश्वकर्मा पुत्र विमल प्रसाद निवासी खजूरियापुर नौबस्बा रोड ऐरायां थाना सुल्तानपुर घोष हाल पता कस्बा खखरेरू नशे की हालत में मिला। जिसे टीम ने पकड़ लिया और उसकी निशानदेही पर कस्बे में संचालित गोपी की दुकान पर छापेमारी की। पुलिस ने मौके से मेकडावेल नं. 01 फर सेल हरियाणा की दो बोतल अंग्रेजी, इसी ब्रांड की दो क्वाटर बोतल, दो क्वाटर ब्लेंडर फर सेल चंडीगढ़, जोशीला 16 पौवा ठेका शराब व 20 पौवा शराब हाउस ठेका शराब बरामद की।

टीम को देखकर दुकान संचालक गोपी पुत्र वासुदेव शर्मा निवासी कनपुरवा मजरे कस्बा व थाना खखरेरू मौके से फरार हो गया। जिसकी तलाश की जा रही है। गिरफ्तार करने वाली टीम में अबाकारी हेड कांस्टेबल आरिफ अहमद, आबकारी कांस्टेबल शुभम यादव, खखरेरू थाने के उपनिरीक्षक मनोज कुमार, हेड कांस्टेबल इन्द्रमणि कुशवाहा, राजेश कुमार यादव, कांस्टेबल प्रदीप धाकड़े भी शामिल रहे।

सरांय होली में भाजपा व सपा कार्यकर्ताओं में झड़प

● भाजपा नेता से शिकायत के दौरान बनाए जा रहे वीडियो से हुए आमने सामने

संवाददाता। फतेहपुर

लोकसभा चुनाव की वोटिंग के दौरान जहानाबाद विधानसभा क्षेत्र के सरांय होली गांव में भाजपा व सपा कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हो गई। विवाद की वजह भाजपा नेता से शिकायत के दौरान बनाया जा रहा वीडियो रहा। जिससे चुनावी प्रक्रिया रोक दी गई। मामले की जानकारी पर मौके पर पहुंची भाजपा प्रत्याशी साध्वी निरंजन ज्योति को भी घेरने का प्रयास किया गया। पुलिस ने लाठियां पटकर गरमाते सियासी माहौल को शांत कराया। जिसके बाद निर्वाचन प्रक्रिया आगे बढ सकी।

मामला जहानाबाद टाउन से वास्ता रखने वाले बूथ नंबर 139 का है। एक मतदाता को यहां पर पीठासीन अधिकारी ने वैध पहचान पत्र न लाने के कारण रोक दिया। इस मामले की शिकायत भाजपा नेताओं के पास पहुंची। जिस पर मंडल अध्यक्ष नीतू ओमर को मतदाता इस मामले की जानकारी देने को इकट्ठा हो गए। इसी दौरान वीडियो बनाया जाने लगा। जिस पर बात बिगड़ गई। देखते ही देखते भाजपा और सपा के कार्यकर्ता आमने सामने आ गए। जिसके बाद हो हल्ला शुरू हो गया। जिस पर वोटिंग करने आई जनता जहां की तहां ठहर गई।

इससे मतदान रुक गया। सपाइयों से तकरार की जानकारी पाकर मौके पर निवर्तमान सांसद साध्वी निरंजन ज्योति मौके पर पहुंची तो उन्हें भी निशाने पर लेने का प्रयास किया गया। जनप्रतिनिधि की मौजूदगी में हो रहे हो हल्ला के कारण कई मतदाता बिना वोट डाले ही अपने अपने घरों को लौट गए। एएसपी ने बताया कि मामूली कहासुनी हुई है। मौके पर शांत व्यवस्था कायम है। दोनों पक्षों को समझा बुझाकर शांत कर दिया गया है।

साध्वी ने सपाइयों पर लगाया हमले का आरोप: सरांय होली गांव के प्रकरण को भाजपा उम्मीदवार ने बेहद संगीन करार दिया। उन्होंने बताया कि इस गांव के बूथ पर पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ ज्यादती का मामला सामने आया था जिस पर उन्होंने मंडल अध्यक्ष को भेजा था। बवाल की सूचना पर वह मौके पर पहुंची तो सपा कार्यकर्ताओं ने पत्थर बरसाते हुए जानलेवा हमला किया।

बारातशाला न बनने पर मतदान का बहिष्कार: सदर विधानसभा के तेलियानी ब्लाक के नसीरपुर बेलवारा गांव में बारातशाला का निर्माण न कराए जाने के मामले में ऐन मतदान के वक्त मतदाताओं की नाराजगी सामने आ गई। प्राथमिक विद्यालय के बूथ नंबर 315 में सडक व बारातशाला को मुददा बनाकर मतदान का बहिष्कार कर दिया गया। मामले की जानकारी पर प्रशासन भागकर नसीरपुर बेलवारा पहुंचा। सक्षम अफ्सर की मौजूदगी में विकास का भरोसा पाकर मतदाताओं ने बूथ का रुख किया।

नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म में पिता समेत पांच को आजीवन एवं दादी को आठ वर्ष के कारावास की सजा

फर्रुखाबाद। अपर जिला एवं सत्र न्यायालय विशेष न्यायाधीश पास्को एक्ट राकेश कुमार सिंह ने आज सोमवार को एक नाबालिग बेटी के साथ सामूहिक दुष्कर्म मामले चर्चित लेखपाल पिता समेत पांच दोष सिद्धि को आजीवन कारावास एवं दादी को 8 वर्ष का कारावास की सजा से दंडित किया। फतेहगढ़ कोतवाली क्षेत्र के निवासिनी नाबालिग पीड़िता की मां प्रीती सिंह ने फ्तेहगढ़ कोतवाली में 20 जनवरी 2020 को अपनी 16 वर्षीय नाबालिग बेटी के साथ चर्चित लेखपाल पिता प्रवेश सिंह तोमर एवं उनके दोस्तों द्वारा सामूहिक दुष्कर्म किए जाने का मुकदमा धारा 376,313,323,504,506 में दर्ज कराया था। विवेचना में नाबालिग पीड़िता के पिता चर्चित लेखपाल प्रवेश सिह तोमर, मनोज शाक्य, सोनू तिवारी उर्फरत्नेश तिवारी, विमल कुमार, विष्णु शरण रस्तोगी सामूहिक दुष्कर्म के आरोपी पाए गए और दादी राधा देवी सहयोग की आरोपी पाई गई। न्यायाधीश पास्को एक्ट ने आरोप पत्र एवं साक्ष्य दाखिल होने के वाद दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के वाद अभियुक्त चर्चित लेखपाल पिता प्रवेश सिंह तोमर, मनोज शाक्य, सोनू तिवारी उर्फ रत्नेश तिवारी,, विमल कुमार तथा विष्णु शरण रस्तोगी को धारा 313, 323 504, 506 भा दं सं व लैंगिक अपराधों से बालको का संरक्षण अधि. 2012 की धारा 6 के तहत प्रत्येक को आजीवन एवं दादी राधा देवी को 8 वर्ष के कारावास की सजा से दंडित किया। पीड़िता नाबालिग बेटी के पिता लेखपाल प्रवेश सिह तोमर को आजीवन कारावास के साथ ही 50000 के जुर्माना एवं अन्य दोष सिद्ध मनोज शाक्य, विमल कुमार, विष्णु शरण रस्तोगी, सोनू तिवारी उर्फरत्नेश तिवारी सभी को आजीवन कारावास की सजा तथा एक -एक लाख रुपए जुर्माने से दंडित किया गया।

जनपद खीरी पुलिस गौहत्या को रोकने में नाकाम

● गौहत्या का सिलसिला बराबर जारी है पुलिस गौहत्यारों पर कार्रवाई की जगह संरक्षण देती है

संवाददाता। गोलागोकर्णनाथ (खीरी)

मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के सख्त निर्देश हैकि जिस जनपद में गौहत्या का मामला संज्ञान में आया उस जनपद के जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक जिम्मेदार होंगे पर दुर्भाग्य यह हैं कि खुलेआम निर्ममता के साथ गौहत्या पिछले 48 घंटे के बाद भी पुलिस के हांथ खाली है इधर गौहत्यारे गाय का मांस बिक्री करने की चर्चाओं का बाजार गर्म है। थाना हैदराबाद पुलिस की संलिप्तता के चलते गौहत्या का सिलसिला जारी है।

बीते दिनांक 18 मई 2024 को ग्राम पंचायत कपरहा के मजरा देवरिया में एक गाय की बेरहमी के साथ हत्या कर दी बाद में हत्यारों ने मांस को मौके से गायब कर दिया गया।

सुबह होने पर गौहत्या की खबर जंगल में आग की तरह फैल गई और घटनास्थल पर ग्रामीण व हिन्दूवादी नेताओं की भीड़ उमडी खबर पाकर पुलिस क्षेत्राधिकारी गोलाए थानाध्यक्ष हैदराबाद मय पुलिस हमराहियों के साथ जाकर मौका मुआइन किया बाद में इधर. उधर बिखरे पड़े अंगो को एक बोरी में भरवाने के बाद गाय का पोस्टमार्टम कराकर मुकदमा दर्ज कर लिया है जबकि थाना पुलिस को मालूम है कि गौहत्यारों में कौन कौन शामिल हैं पर पुलिस उनतक पहुंच नहीं सकी है। इधर हिन्दूवादी संगठनों में गुस्सा फैलने लगा है और आज मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन तहसीलदार सुखवीर सिंह को सौपकर गौकसी करने वाले हत्यारों को फांसी व शिव मंदिर के मोड़ पर अंडा के थोक विक्रेता की दुकान बंद कराने और गोला . अलीगंज मार्ग पर स्थित शिवमंदिर व पवित्र चित्रांशु मंदिरए देवीमंदिर है इनके निकट खुली मांस की दुकानों को बंद कराने व पवित्र गोकर्ण तीर्थ जाने वाली गली में सूरज मीठा विक्रेता की दुकानों को तत्काल प्रभाव से बंद कराने की मांग की है।

भारतीय बजरंग दल के प्रदेश सचिव अशोक जोशी, जिलाध्यक्ष अमित मिश्रा एड. जिलाप्रभारी होतीलाल रस्तोगी वरिष्ठ पत्रकार/समाज सेवी गोलागोकर्णनाथ गौरक्षा प्रमुख अनूप गुप्ता, जिला सुरक्षा प्रमुख हिमांशु जोषी, सुरेन्द्र कुमार एड. प्रशांत गुप्ता, शिवम राज, विशेष राय, साहिल वर्मा, विजय यादव मोहित राठौर सचिन वर्मा अजय मिश्रा अमित राज अभिराम व दर्जनों की संख्या में बजरंगियों ने तहसील गोला में आकर मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार को सम्बोधित ज्ञापन उप जिलाअधिकारी गोला की गैर मौजूदगी में तहसीलदार गोला सुखवीर सिंह को सौप कर कठोर कार्रवाई की मांग की है।

इंडी गठबंधन में टूट की उल्टी गिनती शुरू: प्रधानमंत्री

भाषा। झारग्राम (पश्चिम बंगाल)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को दावा किया कि लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण के मतदान के बाद कांग्रेस और इंडिया गठबंधन की हार तय है और इसके बाद विपक्षी गठबंधन में टूट की शुरुआत हो जाएगी।पश्चिम बंगाल के झारग्राम में एक रैली में मोदी ने कांग्रेस नेताओं पर सांप्रदायिकता फैलाने का आरोप लगाया और कहा कि वे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के आरक्षण को छीनकर मुसलमानों को देना चाहते हैं।उन्होंने कहा, पांचवें चरण के मतदान के बाद तृणमूल कांग्रेस और इंडिया गठबंधन हार गया है। चार जून (जब परिणाम घोषित किए जाएंगे) के बाद, विपक्षी गठबंधन का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इंडी गठबंधन के टूट की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर एक सांप्रदायिक पार्टी होने का आरोप लगाया और कहा कि उसकी अभी भी मुस्लिम लीग जैसी विचार प्रक्रिया है।उन्होंने कहा, कांग्रेस एससी, एसटी और ओबीसी के अधिकार छीनकर मुसलमानों को आरक्षण का लाभ देना चाहती है। कांग्रेस के नेता 100 फीसदी सांप्रदायिक हैं। यह कांग्रेस का सच है, जिसे पार्टी और उसके इकोसिस्टम ने सालों तक देशवासियों के सामने नहीं आने दिया। उन्होंने कहा, कई पत्रकारों ने हाल ही में मेरे साक्षात्कारों के दौरान मुझसे मुस्लिम आरक्षण के बारे में पूछा, लेकिन देखिए, कांग्रेस के शहजादे खुद अपने ही एक वीडियो में इस पर जोर दे रहे हैं। सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे एक वीडियो का हवाला देते हुए मोदी ने कहा, एक तरफ मनमोहन सिंह ने कहा था कि भारत के संसाधनों पर पहला अधिकार मुसलमानों का है। दूसरी तरफ सोशल मीडिया पर सामने आए वीडियो में कांग्रेस के शहजादे कहते दिख रहे हैं कि कांग्रेस मुसलमानों को आरक्षण देगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने कांग्रेस के शहजादे (राहुल गांधी) का वीडियो देखा है, जो 11-12 साल पुराना है।उन्होंने कहा, मैंने सोशल मीडिया पर कांग्रेस के शहजादे का वीडियो देखा। 11-12 साल पुराने इस वीडियो में कांग्रेस के शहजादे खुलेआम कह रहे हैं कि कांग्रेस मुसलमानों को आरक्षण देगी। प्रधानमंत्री अक्सर अपने भाषणों में राहुल गांधी पर निशाना साधने के वास्ते उनके लिए शहजादे शब्द का इस्तेमाल करते हैं।मोदी ने आरक्षण के मुद्दे पर इंडिया गठबंधन की आलोचना की और कहा कि उसमें शामिल घटक दल धर्म के आधार पर आरक्षण देना चाहते हैं।उन्होंने कहा, बाबासाहेब आंबेडकर धर्म के आधार पर आरक्षण दिए जाने के खिलाफ थे। लेकिन अब, इंडिया गठबंधन धर्म के आधार पर आरक्षण देना चाहता है। कर्नाटक में उन्होंने मुसलमानों को ओबीसी आरक्षण दिया, क्या आप अपने आरक्षण को खत्म करना चाहते हैं? मोदी ने कहा कि हालांकि कांग्रेस ने आधी सदी से अधिक समय तक गरीबी हटाओ का नारा दिया, लेकिन यह कोई और नहीं, बल्कि मोदी है जिसने भारत को दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाया, जिसने देश के 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला।प्रधानमंत्री को तमलुक में एक रैली को संबोधित करना था, लेकिन खराब मौसम के कारण उनका हेलीकॉप्टर नहीं उतर सका। उन्होंने झारग्राम से ही डिजिटल माध्यम से तमलुक की रैली को संबोधित किया।

पूजा स्थल कानून गैर विवादित ढांचे के मामले में ही लागू होता है: हिंदू पक्ष

भाषा। प्रयागराज

मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह विवाद मामले में सोमवार को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में हिंदू पक्ष के वकील ने कहा कि पूजा स्थल कानून, 1991 गैर विवादित ढांचे के मामले में ही लागू होता है ना कि विवादित ढांचे के मामले में। मौजूदा मामले में ढांचे का चरित्र अभी तय होना बाकी है और यह केवल साक्ष्यों से तय हो सकता है। हिंदू पक्ष के वकील ने कहा, मंदिर पर एक अवैध निर्माण, वाद में बाधक नहीं बन सकता। वाद की पोषणीयता को लेकर दाखिल अर्जी पर निर्णय, पक्षों से साक्ष्य देखने के बाद ही किया जा सकता है। वर्ष 1968 में हुए समझौते के प्रश्न पर हिंदू पक्ष की ओर से दलील दी गई कि वाद की पोषणीयता को लेकर दाखिल अर्जी पर निर्णय करने के चरण में इस पर (समझौते) विचार नहीं किया जा सकता। इससे पूर्व, मुस्लिम पक्ष की वकील तसलीमा अजीज अहमदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए कहा था कि उनके पक्ष ने 12 अक्टूबर, 1968 को एक समझौता किया था जिसकी पुष्टि 1974 में निर्णित एक दीवानी वाद में की गई। एक समझौते को चुनौती देने की समय सीमा तीन वर्ष है, लेकिन वाद 2020 में दायर किया गया। इस तरह से मौजूदा वाद समय सीमा से बाधित है। अहमदी ने आगे दलील दी थी कि यह वाद शाही ईदगाह मस्जिद के ढांचे को हटाने के बाद कब्जा लेने और मंदिर बहाल करने के लिए दायर किया गया है। वाद में की गई प्रार्थना दर्शाती है कि वहां मस्जिद का ढांचा मौजूद है और उसका कब्जा प्रबंधन समिति के पास है। इस मामले पर सुनवाई न्यायमूर्ति मयंक कुमार जैन की अदालत कर रही है। मामले में सुनवाई मंगलवार को भी जारी रहेगी।

अधिक मानवीय सोच के साथ तैयार किए गए नए आपराधिक कानून: कटारिया

गुवाहाटी। असम के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया ने कहा है कि ब्रिटिश कालीन तीन कानूनों की जगह लेने वाले तीन नए आपराधिक कानूनों को अधिक मानवीय सोच के साथ तैयार किया गया है।कटारिया ने रविवार को यहां विधि और न्याय मंत्रालय के विधि कार्य विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन में यह बात कही। सम्मेलन का विषय था- दंड न्याय प्रणाली के प्रशासन में भारत का प्रगति पथ। देश में एक जुलाई से तीन नए आपराधिक कानूनों को लागू किया जाएगा। एक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार, कटारिया ने सम्मेलन में अपने समापन भाषण में कहा कि इस आयोजन से प्राप्त जानकारियां नए कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण होंगी। उन्होंने कहा, ए कानून पूर्ववर्ती उपनिवेश कालीन कानूनों से बहुत अलग हैं। ए प्रत्एक भारतीय में औपनिवेशिक विरासत के अंशों को समाप्त करने का गौरव भरते हैं।

कर्ज न लेने पर भी आईडीएफसी बैंक ने ग्राहक से ली ईएमआई

देना होगा एक लाख रुपए का मुआवजा

भाषा। मुंबई

आईडीएफसी बैंक ने एक व्यक्ति से ऐसे कर्ज के लिए मासिक किस्त (ईएमआई) काट ली, जो उसने कभी लिया ही नहीं था। इस मामले में अब एक उपभोक्ता अदालत ने बैंक को निर्देश दिया है कि नवी मुंबई के उस व्यक्ति को एक लाख रुपए का मुआवजा दे। जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (मुंबई उपनगर) ने बैंक को सेवा में कमी का दोषी मानते हुए उसे ग्राहक को ब्याज सहित 5,676 रुपए की ईएमआई राशि वापस करने के लिए भी कहा। आयोग ने पिछले महीने पारित आदेश को हाल में उपलब्ध कराया। शिकायतकर्ता ने दावा किया कि उसे पता चला कि बैंक ने फरवरी, 2020 में अपनी पनवेल शाखा में उसके खाते से उस ऋण के लिए ईएमआई काट ली है, जो उसने लिया नहीं था। पूछताछ करने पर बैंक ने शिकायतकर्ता को बताया कि उसे एक ईमेल भेजकर बताया गया था कि यह एक ईसीएस भुगतान था। वह व्यक्ति जब बैंक शाखा में गए, तो उन्हें एक ऋण खाता दिया गया। हालांकि, जब उन्होंने खाते में लॉग इन किया, तो उन्हें ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन का एक खत्म हो चुका वाउचर मिला। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि आईडीएफसी बैंक ने अनिवार्य प्रक्रियाओं का पालन किए बिना और हस्ताक्षर प्राप्त किए बिना धोखाधड़ी से ऋण स्वीकृत किया। उन्होंने दावा किया कि बैंक ने व्यक्तिगत विवरण का दुरुपयोग करके अवैध रूप से।,892 रुपए की मासिक ईएमआई के साथ 20 महीने की अवधि के लिए 20,000 रुपए का ऋण मंजूर किया था। आयोग ने कहा कि शिकायतकर्ता के अमेजन के साथ पत्राचार से पता चला कि उसे वाउचर के लिए बैंक से कोई राशि नहीं मिली है।

छत्तीसगढ़ में वाहन के घाटी में गिरने पर 18 लोगों की मौत, चार घायल

भाषा। कवर्धा

छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में सोमवार को एक वाहन (पिकअप) के घाटी में गिरने से 17 महिलाओं और एक पुरुष की मौत हो गई तथा चार अन्य घायल हो गए। पुलिस अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले के कुकदूर थाना क्षेत्र के अंतर्गत बाहपानी गांव के करीब दोपहर बाद लगभग।:45 बजे वाहन के बंजारी घाट में गिरने से 18 लोगों की मौत हो गई। मृतकों में 17 महिलाएं हैं। उन्होंने बताया कि कुई गांव के रहने वाले ग्रामीण तेंदूपत्ता एकत्र करने जंगल गए थे और वे जब पिकअप वाहन में सवार होकर अपने गांव लौट रहे थे तभी बाहपानी गांव के करीब वाहन बंजारी घाट में गिर गया। अधिकारियों ने बताया कि प्राप्त जानकारी के मुताबिक, वाहन पहले सड़क से नीचे गिरा और घाटी के निचले हिस्से में बनी सड़क से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उन्होंने बताया कि घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस दल को मौके पर भेजा गया तथा बचाव कार्य शुरू किया गया।कबीरधाम जिले के पुलिस अधीक्षक अभिषेक पल्लव ने बताया, "दुर्घटना में 12 महिलाओं और एक पुरुष की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि नौ अन्य घायल हो गए। पल्लव ने बताया, "पुलिस दल ने घायलों को अस्पताल भेजा जहां पांच अन्य महिलाओं की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि तीन महिलाओं समेत अन्य चार घायलों को इलाज के लिए बेहतर सुविधा वाले अस्पतालों में भेजा जा रहा है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने घटना पर दुख जताया है तथा जिला प्रशासन को घायलों को बेहतर इलाज प्रदान करने का निर्देश दिया है। साय ने एक्स पर अपने पोस्ट में लिखा, कबीरधाम जिले के कुकदूर थाना क्षेत्र के बाहपानी गांव के पास वाहन के पलटने से 18 लोगों के निधन और चार अन्य लोगों के घायल होने का दु:खद समाचार प्राप्त हुआ है।

एआई से अश्लील तस्वीर तैयार कर युवतियों को धमकाने वाला कंप्यूटर संचालक गिरफ्तार

इंदौर (मध्यप्रदेश)। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की मदद से अश्लील तस्वीर तैयार करके सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर युवतियों को धमकाने के आरोप में पुलिस ने 22 वर्षीय कंप्यूटर संचालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस के एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) अभिनय विश्वकर्मा ने बताया कि आरोपी की पहचान इंदौर से करीब 100 किलोमीटर दूर शाजापुर कस्बे के रहने वाले यश भावसार (22) के तौर पर हुई है। उन्होंने बताया कि भावसार, शाजापुर नगर पालिका में कंप्यूटर संचालक के तौर पर काम करता है। विश्वकर्मा ने बताया कि आरोपी ने एआई पर आधारित एक मोबाइल ऐप के जरिए 10 युवतियों के डीप फेक तस्वीर तैयार किए थे जिनमें उन्हें बेहद अश्लील हालत में दिखाया गया था।

ईडी ने उच्चतम न्यायालय में सोरेन की अंतरिम जमानत अर्जी का विरोध किया

भाषा। नई दिल्ली

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कथित भूमि घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अंतरिम जमानत के अनुरोध वाली उनकी अर्जी का सोमवार को उच्चतम न्यायालय में विरोध किया। गिरफ्तारी के खिलाफ और अंतरिम जमानत के लिए सोरेन की अर्जी पर शीर्ष अदालत में अपने हलफनामे में, जांच एजेंसी ने कहा कि रिकॉर्ड में मौजूद साक्ष्य से यह स्थापित होता है कि झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के नेता अवैध तरीके से संपत्तियां हासिल करने और उनपर कब्जा रखने में शामिल हैं, जो अपराध से अर्जित आय है। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की एक अवकाशकालीन पीठ सोरेन की गिरफ्तारी के खिलाफ और उनकी अंतरिम जमानत अर्जी पर मंगलवार को सुनवाई करने वाली है। एजेंसी ने कहा, पीएमएलए (धन शोधन निवारण अधिनियम) 2002 की धारा के तहत कई बयान दर्ज किए गए हैं जिससे स्थापित होता है कि बरियातू में लालू खटाल के निकट शांति नगर में 8.86 एकड़ जमीन अवैध गैरकानूनी तरीके से हासिल की गई और यह हेमंत सोरेन के कब्जे एवं उपयोग में है तथा यह कृत्य गुप्त तरीके से किया गया। लोकसभा चुनाव के दौरान प्रचार अभियान के लिए सोरेन की अंतरिम जमानत का विरोध करते हुए ईडी ने कहा, यह गौर करना जरूरी है कि चुनाव में प्रचार करने का अधिकार न तो मूल अधिकार है ना ही संवैधानिक अधिकार या कानूनी अधिकार है।

शीर्ष अदालत तेलंगाना बार एसोसिएशन के मानदंडों के खिलाफ याचिका पर सुनवाई को सहमत

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय तेलंगाना उच्च न्यायालय के उस फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई को सहमत हो गया जिसमें राज्य में दीवानी न्यायाधीश के पद के लिए परीक्षा में सिर्फ स्थानीय बार एसोसिएशन में पंजीकृत वकीलों को बैठने की अनुमति देने वाले पात्रता मानदंड को बरकरार रखा गया है।न्यायमूर्ति हृषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार मिश्रा की पीठ ने दिल्ली बार काउंसिल में पंजीकृत वकील वी राकेश रेड्डी की याचिका पर नोटिस जारी किया और उन्हें तेलंगाना में दीवानी न्यायाधीश पद के लिए आवेदन करने की अनुमति दे दी। पीठ ने अपने 17 मई के आदेश में कहा, 10 अप्रैल 2024 के विज्ञापन के अनुसार याचिकाकर्ता को अपने प्रवेश फॉर्म को ऑनलाइन अपलोड करने की अनुमति है। पीठ ने कहा कि अंतरिम उपाय के तहत इसे तेलंगाना राज्य न्यायिक (सेवा एवं कैडर) नियम 2023 और भर्ती नोटिस के आधार पर रद्द न किया जाए। तेलंगाना राज्य न्यायिक सेवा नियम 2023 के प्रावधानों के अनुसार, परीक्षा के लिए आवेदन करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए जरूरी है कि उसने स्थानीय बार एसोसिएशन में पंजीकृत होकर वकालत की हो और प्रमाण के रूप में वकालत का प्रमाण पत्र जमा करना होगा। पीठ ने रेड्डी की ओर से पेश वकील अपूर्व कुरुप और निधि मित्तल की इस दलील पर गौर किया कि वह दिल्ली बार काउंसिल में एक वकील के रूप में पंजीकृत हैं और 10 अप्रैल के विज्ञापन के तहत दीवानी न्यायाधीश के पद के लिए आवेदन करना चाहते हैं। कुरूप ने दलील दी कि उम्मीदवार को स्थानीय बार एसोसिएशन से वकालत का प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत करना आवश्यक है, इसलिए रेड्डी के आवेदन को शुरुआत में ही खारिज किया जा सकता है।

नौसेना के जहाज समुद्री सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से फिलिपीन की यात्रा पर

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना के तीन जहाज फिलिपीन के साथ समुद्री सहयोग और मजबूत करने के उद्देश्य से इस दक्षिण-पूर्व एशियाई देश की यात्रा पर हैं। उनकी यात्रा दक्षिण चीन सागर में भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े की परिचालन संबंधी तैनाती का हिस्सा है। नौसेना के एक प्रवक्ता ने बताया कि भारतीय नौसैन्य पोत- आईएनएस दिल्ली, आईएनएस शक्ति और आईएनएस किल्टन रविवार को मनीला पहुंचे।

बारामूला में कश्मीरी पंडितों ने घाटी में समर्पित टाउनशिप के लिए मतदान किया

भाषा। जम्मू

भीषण गर्मी के बावजूद प्रवासी कश्मीरी पंडित बड़ी संख्या में बारामूला लोकसभा क्षेत्र में मतदान करने पहुंचे और उन्होंने समुदाय की वापसी और पुनर्वास के लिए समर्पित टाउनशिप के निर्माण के वास्ते समर्थन व्यक्त किया। कश्मीरी पंडितों का कहना है कि घाटी में मंदिरों का जीर्णोद्धार भी उनके लिए एक अहम चुनावी मुद्दा है। मतदान के पहले चार घंटों के भीतर 17.37 लाख मतदाताओं में से 21.30 प्रतिशत से अधिक लोगों ने वोट डाले। कई मतदाताओं ने कश्मीर से अपने स्थाई संबंध और वापस लौटने की इच्छा पर जोर दिया। उदयवाला मतदान केंद्र पर वोट डालने वाले विकास रैना ने कहा, भारत के अवांछित नागरिक के रूप में रहते हुए यह मेरा 34वां वर्ष है। हमने पहले भी वोट दिया है। लेकिन इस बार, हमने स्पष्ट तौर पर (समुदाय के लिए) टाउनशिप स्थापित करने और मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए वोट दिया है।

देश में खुली जेलों के दायरे को कम करने का कोई प्रयास नहीं किया जाए: उच्चतम न्यायालय

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने निर्देश दिया है कि देश में कार्यरत खुली जेलों के दायरे को कम करने का कोई प्रयास नहीं किया जाना चाहिए। अर्ध-खुली या खुली जेल व्यवस्था के तहत दोषियों को आजीविका कमाने के लिए दिन के दौरान परिसर से बाहर काम करने और शाम को वापस लौटने की अनुमति दी जाती है। इस अवधारणा को दोषियों को समाज के साथ आत्मसात करने और मनोवैज्ञानिक दबाव को कम करने के लिए पेश किया गया था क्योंकि उन्हें बाहर सामान्य जीवन जीने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। न्यायमूर्ति बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने उल्लेख किया कि जेलों और कैदियों से संबंधित मामले में न्याय मित्र के रूप में सहायता कर रहे वकील के. परमेश्वर ने कहा है कि केंद्र द्वारा एक आदर्श मसौदा नियमावली तैयार की गई है जिसमें खुले शिविरोंसंस्थाओंजेलों का नाम खुले सुधारात्मक संस्थान किया गया है।

पेज 1 का शेष

चढ़ता पारा...

महाराष्ट्र में, शिव सेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे ने दावा किया कि मतदान केंद्रों के बाहर सुविधाओं के बारे में मतदाताओं ने बहुत सारी शिकायतें कीं। भाजपा नेता किरीट सोमैया ने आरोप लगाया कि शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राउत और सुनील राउत मुंबई के भांडुप में अपने मतदान केंद्र के बाहर भ्रष्ट आचरण में शामिल पाए गए। पूर्व सांसद ने यह भी दावा किया कि उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) के दो कार्यकर्ताओं को डमी ईवीएम का उपयोग करने के अवैध एवं भ्रष्ट आचरण को लेकर गिरफ्तार किया गया। हालांकि, राज्यसभा सदस्य संजय राउत के भाई एवं विधायक सुनील राउत ने आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि मतदाताओं को जानकारी देने के उद्देश्य से मतदान केंद्र के 100 मीटर के दायरे के बाहर एक डमी ईवीएम रखी गई थी। उन्होंने दावा किया कि फिर भी पुलिस ने राजनीतिक दबाव में इसे हटा दिया। वहीं, मुंबई की छह लोकसभा सीट पर शाम पांच बजे तक कुल 47.52 प्रतिशत मतदान हुआ। इस दौरान धीमा मतदान प्रक्रिया, ईवीएम में खराबी और मतदाता सूचियों में नाम न होने की खबरें भी सामने आईं। मुंबई के छह निर्वाचन क्षेत्रों में कुल 99,38,621 पंजीकृत मतदाता जबकि 116 उम्मीदवार थे। उत्तर मध्य मुंबई निर्वाचन क्षेत्र के पवई में हीरानंदानी कॉम्प्लेक्स क्षेत्र में मतदान केंद्र पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) ने पूर्वाह्न 11:30 बजे काम करना बंद कर दिया। अभिनेता-निर्माता और शिवसेना (यूबीटी) के नेता आदेश बांदेकर ने दावा किया कि मतदाताओं को लाइन में इंतजार करना पड़ा और मशीन बदलने में दो घंटे लगे। ओडिशा में, बरगढ़ जिले के सरसरा के पास कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने कथित तौर पर एक ऑटो-रिक्शा चालक की हत्या कर दी, जो कुछ मतदाताओं को मतदान केंद्र तक ले जा रहा था। मृतक के परिवार के सदस्यों ने दावा किया कि यह एक राजनीतिक हत्या है। पुलिस का कहना है कि अपराध का कारण निजी रंजिश है। ओडिशा में कुछ जगहों पर ईवीएम में गड़बड़ी की भी खबरें आईं। इस दौर में 4.26 करोड़ महिलाओं और 5,409 तृतीय-लिंग के मतदाताओं समेत 8.95 करोड़ से अधिक लोग मतदान करने के पात्र थे और 94,732 मतदान केंद्रों पर 9.47 लाख मतदान अधिकारी तैनात किए गए हैं। अब तक 23 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों और 379 सीटों के लिए मतदान पूरा हो चुका है।

ईरान....

चाहे कुछ भी हो जाए। ईरानी संविधान के तहत, यदि राष्ट्रपति की मृत्यु हो जाती है, तो खामेनेई की सहमति से ईरान का उप-राष्ट्रपति पदभार संभालता है, और 50 दिनों के भीतर एक नया राष्ट्रपति चुनाव कराया जाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान के राष्ट्रपति डॉ. सैयद इब्राहिम रईसी के दुखद निधन से गहरा दुख और सदमा लगा है। प्रधानमंत्री ने कहा, भारत-ईरान द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उनके परिवार और ईरान के लोगों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना। दुख की इस घड़ी में भारत ईरान के साथ खड़ा है। विदेश मंत्री जयशंकर ने ईरानी राष्ट्रपति रईसी और विदेश मंत्री होसैन अमीर-अब्दुल्लाहियन की मौत पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि भारत त्रासदी के इस समय में ईरान के लोगों के साथ खड़ा है। जयशंकर ने एक्स पर कहा, हेलीकॉप्टर दुर्घटना में ईरान के राष्ट्रपति डॉ. इब्राहिम रईसी और विदेश मंत्री एच. अमीर-अब्दुल्लाहियन के निधन की खबर सुनकर गहरा सदमा लगा। कांग्रेस प्रमुख खड़गे ने ईरानी राष्ट्रपति के निधन पर शोक व्यक्त किया और कहा कि दुख की इस घड़ी में भारतीय ईरान के लोगों के साथ खड़े हैं।

विदेशी दान....

भुगतान गेटवे आदि, पीएमएलए, 2002 के तहत जांच के दौरान एकत्र किए गए। ईडी ने अपनी जांच में आप और उसके नेताओं द्वारा विदेशी धन के संग्रह में अनियमितताओं के कई उदाहरणों का दावा किया और आप विधायक दुर्गेश पाठक सहित उनमें से कुछ पर कनाडा में एक फंड-जुटाने वाले कार्यक्रम के दौरान एकत्र किए गए धन की हेराफेरी करने का आरोप लगाया। निदेशालय ने अनिकेत सक्सेना (आप ओवरसीज इंडिया के समन्वयक), कुमार विश्वास (तत्कालीन आप ओवरसीज इंडिया के संयोजक), कपिल भारद्वाज (तत्कालीन आप सदस्य) और दुर्गेश पाठक सहित विभिन्न आप स्वयंसेवकों और पदाधिकारियों के बीच आदान-प्रदान किए गए ई-मेल की सामग्री के माध्यम से आरोपों की पुष्टि की है। अब तक की जांच से पता चला है कि संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में धन जुटाने के अभियानों के माध्यम से न केवल राशि एकत्र की गई थी, बल्कि विदेशी दान पर एफसीआरए के तहत लगाए गए प्रतिबंधों से बचने के लिए आप द्वारा बनाए गए खातों की किताबों में वास्तविक दानदाताओं की पहचान भी छिपाई गई थी। एक राजनीतिक दल के लिए नागरिक, लेकिन विदेशी दान के डेटा के विश्लेषण से पता चला कि कई दानदाताओं ने दान के लिए एक ही पासपोर्ट नंबर का उपयोग किया है। आप को दान देने के लिए एक ही पासपोर्ट नंबर, ई-मेल आईडी, मोबाइल नंबर और क्रेडिट कार्ड का उपयोग किया है। जांच से यह भी पता चला कि आप ने एक संस्था का गठन किया है। आप ओवरसीज़ इंडिया के साथ-साथ संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में स्वयंसेवक भी शामिल थे, जिनका प्राथमिक कार्य आप इंडिया के लिए विदेशी धन जुटाना था। यह भी पता चला है कि करोड़ रुपये के विदेशी दान का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 2016 में इन स्वयंसेवकों के लिए 50 करोड़ रुपये तय किए गए थे। ईडी ने कहा कि कनाडाई नागरिकों की ईमेल आईडी और मोबाइल नंबरों के माध्यम से दान, 19 कनाडाई नागरिकों की ईमेल आईडी और मोबाइल नंबरों का उपयोग करके कुल 51,15,044/- रुपये का दान प्राप्त हुआ है। हालाँकि, इन कनाडाई नागरिकों के नाम और उनकी राष्ट्रीयता छिपा दी गई है और रिकॉर्ड में सही ढंग से प्रतिबिंबित नहीं हुई है। इसके बजाय इन दान के खिलाफ अलग-अलग नामों का उल्लेख किया गया है और यह जानबूझकर आप द्वारा विदेशी नागरिकों द्वारा दान को छिपाने के लिए किया गया था जो एफसीआरए, 2010 की धारा 3 और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 298 का उल्लंघन है। सूत्रों ने कहा कि यह राशि विदेशी दानदाताओं की पहचान और राष्ट्रीयता के साथ-साथ कई अन्य तथ्यों को छुपाने, गलत घोषित करने और हेरफेर करके विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए), 2010 और जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के प्रावधानों का उल्लंघन करके जुटाई गई है। आप द्वारा विदेशी धन प्राप्त करने में एफसीआरए उल्लंघन और अन्य अनियमितताएं भारत-पाक सीमा पर कांटेदार बाड़ के माध्यम से पाकिस्तान से हेरोइन की तस्करी में शामिल एक अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स कार्टेल के खिलाफ पंजाब के फाजिल्का जिले में दर्ज एक मामले की जांच के दौरान सामने आई। इस संबंध में फाजिल्का की एक विशेष अदालत ने पंजाब के भोलाथ से तत्कालीन आप विधायक सुखपाल सिंह खैरा को मुकदमे का सामना करने के लिए आरोपी के रूप में समन जारी किया था। खैरा ने अपने बयान में खुलासा किया कि 1,19,000 डॉलर की विदेशी फंडिंग आगामी पंजाब विधानसभा चुनाव 2017 से ठीक पहले अप्रैल-मई, 2015 में आप द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित विदेशी फंड-जुटाने के अभियान के दौरान जुटाई गई थी। ईडी के मुताबिक, विदेश में रहने वाले 155 लोगों ने 55 पासपोर्ट नंबरों का इस्तेमाल कर 404 मौकों पर कुल 1.02 करोड़ रुपये का दान दिया। कम से कम 71 दानदाताओं ने 256 अवसरों पर कुल 99.90 लाख रुपये का दान देने के लिए 21 मोबाइल नंबरों का उपयोग किया और विदेश में रहने वाले 75 दानदाताओं ने 148 अवसरों पर कुल 19.92 लाख रुपये का दान करने के लिए 15 क्रेडिट कार्ड का उपयोग किया। जांच में विदेशों में धन जुटाने के अभियानों के दौरान आप पदाधिकारियों और स्वयंसेवकों की ओर से अनियमितताओं और अनियमितताओं का भी पता चला है। 2016 में कनाडा में आप द्वारा आयोजित एक फंड जुटाने के कार्यक्रम के दौरान, अनिकेत सक्सेना (आप ओवरसीज इंडिया के समन्वयक) और कुमार विश्वास, तत्कालीन आप ओवरसीज इंडिया के संयोजक के बीच एक ई-मेल बातचीत हुई, जिससे पता चला कि दुर्गेश पाठक (वर्तमान में आप दिल्ली विधानसभा में विधायक) और कपिल भारद्वाज (आप सदस्य) ने अनिकेत को धन संचय कार्यक्रम के दौरान एकत्र की गई 29000 डॉलर की दान राशि को सीधे भगवंत तूर के माध्यम से दुर्गेश पाठक और कपिल भारद्वाज को हस्तांतरित करने के लिए कहा था।

झुलसा देने...

चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में फैल गई है। इसके अलावा राजस्थान के कुछ हिस्सों में गर्म रातें दर्ज की गई हैं। आईएमडी के अनुसार, 21 और 22 मई को पूर्वी उत्तर प्रदेश में अलग-अलग लू चलने की संभावना है। साथ ही 20 से 24 मई तक हिमाचल प्रदेश, गुजरात और उत्तर-पूर्व मध्य प्रदेश में भी यही स्थिति रहेगी। ओडिशा में 21 मई से लू चलने की संभावना है। इसके अलावा, 21 मई को कोंकण और गोवा, बिहार और झारखंड में और 20 मई को गंगीय पश्चिम बंगाल और ओडिशा में गर्म और आर्द्र मौसम का अनुमान है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, गुजरात और राजस्थान में 20 से 24 मई तक गर्म रातों की भी भविष्यवाणी की गई है, जो चल रही गर्मी की लहर के कारण होने वाली परेशानी को बढ़ा सकती है।

कंगना रनौत को दिखाए गए काले झंडे, भाजपा ने सीईओ से शिकायत की

शिमला (भाषा)। हिमाचल प्रदेश की मंडी लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उम्मीदवार एवं अभिनेत्री कंगना रनौत को सोमवार को लाहौल-स्पीति के काजा में स्थानीय लोगों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने काले झंडे दिखाए। भाजपा की हिमाचल प्रदेश इकाई ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) के पास शिकायत दर्ज करा निर्वाचन अधिकारियों के तबादले और घटना की जांच की मांग की कि आखिर भाजपा और कांग्रेस दोनों को बिल्कुल पास में ही रैलियां करने की अनुमति कैसे दे दी गई?

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कंगना के विरोध में नारे लगाए- कंगना, वापस जाओ, कंगना वंगना नहीं चलेगी। वे जाहिर तौर पर पिछले साल अप्रैल में तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा पर की गई उनकी टिप्पणी से नाराज हैं। रनौत ने दलाई लामा को लेकर एक मीम सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर कहा था, व्हाइट हाउस में दलाई लामा का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। पोस्ट के साथ एक तस्वीर भी साझा की गई जिसमें छेड़छाड़ कर दलाई लामा को अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के साथ जीभ बाहर निकालते हुए दिखाया गया। इसके साथ ही तस्वीर पर टिप्पणी की- दोनों को एक ही बीमारी है, निश्चित रूप से इसीलिए दोनों दोस्त हो सकते हैं।

बाद में उन्होंने माफी मांगते हुए कहा कि उनका इरादा किसी को ठेस पहुंचाने का नहीं था और यह बाइडन की दलाई लामा के साथ दोस्ती के बारे में महज एक मजाक था। भाजपा के खातिर प्रचार के लिए रनौत के साथ काजा गए हिमाचल प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने सोमवार को आरोप लगाया कि कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भाजपा की बैठक में खलल डालने की कोशिश की और जब वे लौट रहे थे तो उनके काफिले पर पथराव किया। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, पहली बार ऐसा हुआ है, यह घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। कांग्रेस को उसी स्थान पर रैली करने की अनुमति दी गई, जहां भाजपा को रैली आयोजित करने के लिए पहले ही अनुमति दी जा चुकी थी। हमारी रैली में खलल डालने की कोशिश की गई और कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने शर्मनाक नारे लगाए, हमारे काफिले को रोका गया और पथराव किया जिसमें एक व्यक्ति घायल हो गया। ठाकुर ने कहा कि वह पूरे राज्य में प्रचार के लिए जाते हैं लेकिन ऐसी हरकत पहली बार हुई है जो कांग्रेस की हताशा को दर्शाती है।

देश को 2047 तक विकसित बनाना मेरा मिशन : पीएम

भाषा। भुवनेश्वर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि ब्रांड मोदी की धारणा लोगों के उस विश्वास का परिणाम है, जो उन्होंने दो दशक से अधिक के अपने सार्वजनिक जीवन में हासिल किया है। उन्होंने दिए एक विशेष साक्षात्कार में कहा कि 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, उसे वह करेंगे। वह ब्रांड मोदी के लंबे समय से टिके रहने और क्या वह मौजूदा चुनावों के साथ-साथ 2029 में खुद को प्रधानमंत्री बनते हुए देखते हैं, इस बारे में पूछे गए सवाल का जवाब दे रहे थे। मोदी ने कहा, मेरा जन्म कुछ बनने के लिए नहीं हुआ है। मैंने कुछ करने के लिए जन्म लिया है। 2047 तक अपने देश को एक विकसित राष्ट्र (विकसित भारत) बनाना मेरा मिशन है। मुझे कुछ करना है और इसे हासिल करने के लिए जो कुछ भी करना है, मैं उसे करना जारी रखूंगा। मैं तो बस काम करने वाला व्यक्ति हूं और यह देश के लोग हैं, जो फैसला करते हैं कि कौन क्या बनेगा। उन्होंने कहा कि ब्रांड मोदी इसलिए प्रभावी रहा, क्योंकि इस ब्रांड को बनाने में कोई सजग प्रयास नहीं किया गया।ब्रांड मोदी लोगों के उस विश्वास का परिणाम है, जो उन्होंने अपने दो दशक से अधिक के सार्वजनिक जीवन में हासिल किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि लोगों ने वास्तविक प्रयासों और अथक कठिन परिश्रम को देखा है, जो उन्होंने लोगों का जीवन बेहतर बनाने के लिए किया है। वे मानते हैं कि मैं गलत इरादे के साथ

मोदी दिवंगत नेता सुशील मोदी के आवास पर पहुंचे

पटना। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लोकसभा चुनाव के बीच एक सप्ताह के भीतर दूसरी बार सोमवार को बिहार की राजधानी पटना पहुंचे। वह यहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दिवंगत नेता सुशील कुमार मोदी के आवास पर गए और उनके परिजनों को सांत्वना दी। पिछले सप्ताहांत पटना में एक शानदार रोड शो करने वाले प्रधानमंत्री मोदी का हवाई अड्डे पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा ने स्वागत किया। पटना पहुंचने पर प्रधानमंत्री सीधे भाजपा के दिवंगत नेता सुशील कुमार मोदी के आवास पर गए।

कांग्रेस और इंडी गठबंधन के कार्यकर्ता भी उनको वोट देने नहीं आ रहे हैं : मोदी

भुवनेश्वर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस और उसके सहयोगियों का खराब प्रदर्शन इस लोकसभा चुनाव में मतदान का प्रतिशत कम होने का कारण हो सकता है और यहां तक उनके पार्टी कार्यकर्ता भी उनको वोट देने के लिए नहीं जा रहे है जिसका राजनीतिक लाभ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को मिल सकता है। प्रधानमंत्री ने पीटीआई-भाषा को दिए गए साक्षात्कार में विपक्षी गठबंधन इस बात पर विश्वास नहीं कर रहा है कि उनके पास कोई मौका है तथा उसके नेता और यहां तक कार्यकर्ता भी जमीन पर नहीं है। उन्होंने कहा, विगत 10 साल की प्रगति के ट्रैक रिकॉर्ड के सामने उनके (विपक्ष के) पास जनता के सामने ले जाने के लिए कोई मुद्दा नहीं है और उन्होंने हार मान ली है। मोदी ने कहा कि कांग्रेस और इंडी गठबंधन जमीन पर प्रचार के लिए कोई उल्लेखनीय कोशिश नहीं कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, जमीन पर उनके नेता और कार्यकर्ता नहीं है। इसलिए, ऐसा लगता है कि यहां तक कांग्रेस और इंडी गठबंधन के कार्यकर्ता भी मतदान करने के लिए घर से नहीं निकल रहे हैं जो एकमात्र उनका पारंपरिक मत आधार है। यह कारण हो सकता है। अगर यह सच है तो राजनीतिक रूप से यह स्थिति भाजपा के लिए लाभदायक हो सकती है लेकिन मेरा मानना है कि हमारे लोकतंत्र की और बेहतर सेवा होती अगर सभी दल विकासोन्मुखी एजेंडा बनाते और अधिक संख्या में मतदान के लिए मतदाताओं को प्रेरित करने के लिए कड़ी मेहनत करते। भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) जनता से संपर्क करने और विकास एवं प्रगति के लिए मतदान करने का अनुरोध करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

अल्पसंख्यकों के खिलाफ कभी नही बोला, लेकिन किसी को खास नागरिक स्वीकार करने को तैयार नही

भुवनेश्वर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि उन्होंने अल्पसंख्यकों के खिलाफ कभी एक शब्द भी नहीं बोला और भारतीय जनता पार्टी केवल आज ही नहीं, बल्कि कभी भी अल्पसंख्यकों के खिलाफ नहीं रही है। प्रधानमंत्री ने हालांकि स्पष्ट किया कि वह किसी को भी खास नागरिक के तौर पर स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। रविवार रात पीटीआई वीडियो के साथ साक्षात्कार में मोदी की इन टिप्पणियों को विपक्ष की इन आलोचनाओं के बीच अल्पसंख्यकों को लेकर सबसे स्पष्ट बयान माना जा रहा है कि उनके चुनावी भाषण समाज को बांटने वाले और ध्रुवीकरण करने वाले हैं।प्रधानमंत्री ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने संविधान के धर्मनिरपेक्ष तानेबाने की अवहेलना की है। उन्होंने कहा कि चुनाव प्रचार के दौरान उनके भाषणों का उद्देश्य वोट बैंक की राजनीति के साथ साथ अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण करने की विपक्षी दलों की कोशिशों का पर्दाफाश करना है।जब साक्षात्कार के दौरान मोदी से उनके बयानों के कारण अल्पसंख्यकों के बीच पैदा हुई आशंकाओं के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, मैंने अल्पसंख्यकों के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोला है। मैं केवल कांग्रेस की वोट बैंक की राजनीति के खिलाफ बोल रहा हूं। कांग्रेस संविधान के विरुद्ध काम कर रही है, यही बात कहता रहा हूं। मोदी ने कहा कि बी आर आंबेडकर और जवाहरलाल नेहरू समेत भारतीय संविधान के निर्माताओं ने फैसला किया था कि धर्म के आधार पर कोई आरक्षण नहीं होगा।अब आप उससे पलट रहे हो। उनका खुलासा करना मेरी जिम्मेदारी है। उस समय संविधान सभा में मेरी पार्टी का कोई सदस्य नहीं था। यह देशभर के उत्कृष्ट लोगों की सभा थी।प्रधानमंत्री से जब एक बार फिर पूछा गया कि क्या उनके चुनावी भाषणों में कभी अल्पसंख्यकों को निशाना नहीं बनाया गया तो उन्होंने कहा, भाजपा कभी अल्पसंख्यकों के खिलाफ नहीं रही। केवल आज ही नहीं, बल्कि कभी भी नहीं। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस तुष्टिकरण के रास्ते पर चलती है। प्रधानमंत्री ने कहा, वह लोग तुष्टिकरण के रास्ते पर चलते हैं, मैं संतुष्टिकरण के रास्ते पर चलता हूं। उन्होंने कहा, उनकी राजनीति तुष्टिकरण की है, मेरी राजनीति सबका साथ सबका विकास की है। हम सर्व धर्म समभाव में विश्वास रखते हैं। हम सभी को अपने साथ लेकर चलना चाहते हैं। हम किसी को खास नागरिक के तौर पर स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, बल्कि सभी को समान समझते हैं।

कश्मीर के बारे में कोई बयान नहीं दिया: वांगचुक

उल्याक्टोपो (लेह)। जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने कहा कि उनके हालिया बयान की छोटी क्लिप को तोड़-मरोड़कर और संदर्भ से बाहर पेश करके यह दिखाया गया है कि वह कश्मीर के बारे में बात कर रहे थे और देश विरोधी बयान दे रहे थे। वांगचुक ने यहां पीटीआई-भाषा से कहा, बयानों को तोड़-मरोड़कर पेश करना ठीक नही है। मैने कश्मीर के बारे में कुछ नही कहा है। उन्होंने कहा, बयानों को तोड़-मरोड़कर पेश करना और छोटी क्लिप प्रसारित किया जाना दुखद है। कारगिल के एक नेता ने कहा था कि लद्दाख को कश्मीर के साथ फिर से मिलाया जाना चाहिए। मैने इस पर आपत्ति जताई और कहा कि अगर यह उनका निजी विचार है, तो ठीक है, लेकिन अगर कारगिल के सभी लोगों को ऐसा लगता है, तो वे ऐसा कर सकते है। लेकिन लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश बना रहेगा। हमारी कश्मीर के साथ फिर से विलय में कोई दिलचस्पी नही है। यही संदर्भ था। उस (साक्षात्कार) की एक छोटी क्लिप को इस तरह दिखाया गया कि जैसे मै कश्मीर के बारे में बात कर रहा हूं और राष्ट्र-विरोधी बयान दे रहा हूं।

राजस्थान के पिलानी में पारा 46.6 डिग्री पर पहुंचा

जयपुर। राजस्थान के अधिकांश हिस्सो में गर्मी का दौर सोमवार को भी जारी है जहां पिलानी मे पारा 46.6 डिग्री दर्ज किया। राज्य मे भीषण गर्मी के कारण ग्रामीण और शहरी इलाको में आम जनजीवन प्रभावित हुआ है। राज्य के अधिकांश हिस्सो में पिछले कुछ दिनो से भीषण गर्मी पड़ रही है। मौसम केंद्र के अनुसार आगामी चार-पांच दिन के दौरान राज्य के कुछ भागो मे न्यूनतम तापमान भी औसत से 2-5 डिग्री ऊपर रहने की संभावना है। विभाग के अनुसार, राज्य के कुछ भागों मे धूल भरी आंधी चलने की प्रबल संभावना है और कुछ भागो में तेज हवा (25 से 30 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से) चलने की संभावना है। जयपुर मौसम केंद्र के अनुसार, सोमवार को दिन मे अधिकतम तापमान पिलानी में 46.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

मप्र के शिवपुरी में आग लगने के मामले में तीन गिरफ्तार

शिवपुरी (मप्र)। मध्य प्रदेश के शिवपुरी मे पिछले सप्ताह जिलाधिकारी कार्यालय मे आग लगने से कई दस्तावेज जल जाने के मामले मे एक सरकारी कर्मचारी और उसके दो सहयोगियो को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। शुक्रवार और शनिवार की मध्यरात्रि को जिलाधिकारी कार्यालय मे लगी भीषण आग मे कई दस्तावेज़ जल गए।

अकासा एयर का उत्तर प्रदेश में विस्तार

गोरखपुर। भारत की सबसे तेजी से बढ़ती एयरलाइंस अकासा एयर ने दिल्ली और बेंगलुरु से गोरखपुर और गोरखपुर से दिल्ली और बेंगलुरु के लिए सीधी उड़ान शुरू करने के लिए गोरखपुर को अपने नेटवर्क में 23वें डेस्टिनेशन के रूप में शामिल करने की घोषणा की। इसकी शुरुआत 29 मई 2024 से होगी। अकासा एयर इकलौती ऐसी एयरलाइन होगी, जिसके विमान बेंगलुरु से गोरखपुर तक रोजाना उड़ान भरेंगे। इस लॉन्च के साथ एयरलाइंस ने उत्तर प्रदेश में अपनी उपस्थिति को और मजबूत किया है। अकासा एयर के नेटवर्क में लखनऊ, वाराणसी, अयोध्या और प्रयागराज के बाद अब गोरखपुर को पांचवें डेस्टिनेशन के रूप में शामिल किया गया है। इन फ्लाइट्स के लिए टिकट अकासा एयर की वेबसाइट एंड्रॉयड और आईएओएस ऐप से या देश भर में फैले प्रमुख ट्रैवल एजेंट्स के जरिए बुक कराए जा सकते हैं। अकासा एयर के को-फाउंडर और चीफ कमर्शल ऑफिसर प्रवीन अय्यर ने कहा, हम अपने नेटवर्क में गोरखपुर को 23वें डेस्टिनेशन के रूप में शामिल कर बेहद खुश हैं। हमें पूरा विश्वास है कि ये फ्लाइट्स दोनों मेट्रो शहरों के बीच पॉइंट टु पॉइंट कनेक्टिविटी को बढ़ाएंगी। इन दोनों मेट्रो शहरों से गोरखपुर आने-जाने वाले यात्रियों की संख्या बढ़ेगी। अकासा एयर के को-फाउंडर और चीफ मार्केटिंग एंड एक्सपीरियंस ऑफिसर बेल्सन कॉटिन्हो ने कहा, आज गोरखपुर में अकासा के अनुभव की पेशकश कर हमें बेहद खुशी हो रही है। हम देशभर में अपनी उपस्थिति बढ़ा रहे हैं और उसे मजबूत कर रहे हैं।

हवा बदल चुकी है, राजग की विदाई तय: कांग्रेस

भाषा। नई दिल्ली

कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण का मतदान संपन्न होने के बाद सोमवार को दावा किया कि देश की हवा बदल चुकी है और यह आंधी का रूप ले रही है तथा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की विदाई तय है। लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में कुल 49 सीट पर वोट डाले गए। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया, पांचवें चरण का मतदान ख़त्म होने के साथ ही 428 सीटों पर मतदान संपन्न हो चुका है। निवर्तमान प्रधानमंत्री की विदाई के अब सिर्फ़ 15 दिन शेष रह गए हैं। उन्होंने दावा किया कि पहले चरण से जो रुझान शुरू हुआ था वह धीरे-धीरे मज़बूत होता जा रहा है, यह स्पष्ट है कि भाजपा, दक्षिण में साफ़ और उत्तर, पश्चिम एवं पूरब में हाफ होने जा रही है।रमेश ने कहा, ऐसा लगता है कि इंडिया गठबंधन पहले ही 272 सीटों के आंकड़े को पार कर चुका है और कुल मिलाकर 350 से अधिक सीटें जीतने की ओर अग्रसर है। मोदी जी का जाना अब लगभग तय हो गया है। कमरतोड़ महंगाई, रिकॉर्ड तोड़ बेरोज़गारी, और संविधान को बदलने एवं आरक्षण को ख़त्म करने की भाजपा की धमकियां मुख्य रूप से वे कारण हैं, जिनकी वजह से लोग इस सरकार को सत्ता से बेदख़ल करने जा रहे हैं। रमेश के अनुसार, यह चुनाव कांग्रेस पार्टी के सकारात्मक अभियान के आसपास केंद्रित रहा है। हमारा न्याय पत्र और हमारी गारंटियां सभी दलों के प्रचार अभियान के केंद्र में रहीं। खटा-खट के नारे ने लोगों का ध्यान इस हद तक खींच लिया है कि निवर्तमान प्रधानमंत्री भी इस पर प्रतिक्रिया देने को मजबूर हो गए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत प्रत्एक व्यक्ति के लिए मुफ्त अनाज़ की मात्रा को दोगुना करने की गारंटी की घोषणा ने उत्तर और पूर्वी भारत में ज़ोरदार प्रभाव डाला है। कांग्रेस महासचिव ने आरोप लगाया कि जैसे-जैसे प्रधानमंत्री के सत्ता के आख़िरी दिन क़रीब आ रहे हैं, वह तथ्यों को तोड़ मरोड़कर पेश करने, ध्यान भटकाने और बदनाम करने की अपनी ओछी राजनीति के और निचले स्तर तक उतरते जा रहे हैं। उन्होंने दावा किया, चुनाव आयोग की गहरी नींद दुर्भाग्यपूर्ण रही है। निवर्तमान प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भाजपा हर दिन आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करती है। मतदान में धार्मिक प्रतीकों का इस्तेमाल, मतदान के दिन विज्ञापन, सोशल मीडिया पर भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा बार-बार मतदान करते हुए वीडियो जारी करना, इन सभी ने निवर्तमान प्रधानमंत्री को जवाबदेह ठहराने की चुनाव आयोग की क्षमता पर सवाल उठाए हैं। रमेश ने कहा, हम मतदान के समापन के बाद जितना जल्दी संभव हो सके वोटिंग के अंतिम आंकड़ों के प्रकाशन की उम्मीद करते हैं। उन्होंने दावा किया, हर तरफ़ से आ रही जमीनी रिपोर्ट से बिल्कुल स्पष्ट है - हवा बदल चुकी है, अब आंधी का रूप धारण कर रही है। इंडिया जनबंधन राजग को परास्त करने के लिए तैयार है। 4 जून आ रहा है।

देश में बदलाव की आंधी चल रही है : राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण का मतदान आरंभ होने के बाद सोमवार को कहा कि जनता विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) के साथ मिलकर खुद यह चुनाव लड़ रही है और देश भर में बदलाव की आंधी चल रही है। लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में आज 49 सीट पर मतदान हो रहा है। इसमें रायबरेली लोकसभा क्षेत्र भी शामिल है जहां से राहुल गांधी खुद कांग्रेस के उम्मीदवार हैं। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया, आज लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण का मतदान है। पहले चार चरणों में ही यह साफ हो गया है कि जनता संविधान और लोकतंत्र की रक्षा के लिए खड़ी हो गई है और भाजपा को हरा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि नफ़रत की राजनीति से ऊब चुका यह देश अब अपने मुद्दों पर वोट कर रहा है। राहुल गांधी ने कहा, युवा नौकरी के लिए, किसान एमएसपी और कर्ज़ से मुक्ति के लिए, महिलाएं आर्थिक निर्भरता और सुरक्षा के लिए तथा मज़दूर वाजिब मेहनताने के लिए...।

उन्होंने कहा कि जनता विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) के साथ मिलकर खुद यह चुनाव लड़ रही है और देश भर में बदलाव की आंधी चल रही है।उन्होंने कहा, मैं अमेठी और रायबरेली समेत पूरे देश से अपील कर रहा हूं - अपने परिवारों की समृद्धि के लिए, खुद के अधिकारों के लिए, भारत की प्रगति के लिए बड़ी संख्या में बाहर निकलिए और वोट कीजिए।कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने भी लोगों से लोकतंत्र के लिए भारी संख्या में मतदान की अपील की।उन्होंने रायबरेली और अमेठी के मतदाताओं का भी आह्वान किया कि वे लोकतंत्र, संविधान और विकास की सकारात्मक राजनीति के साथ खड़े होने का संदेश दें।प्रियंका गांधी ने कहा, रायबरेली और अमेठी के मेरे प्रिय परिवारजनों, सेवा के सौ साल का सुनहरा इतिहास कहता है कि आप हमेशा लोकतंत्र और संविधान के लिए खड़े रहे। आपने हमेशा सेवा, समर्पण, संघर्ष और शहादत की पवित्र भावना का साथ दिया।उन्होंने कहा, आपकी जागरूकता पर हमें गर्व है। आप जन गण मन की वह शक्ति हो जिसके सामने झूठ का बड़े से बड़ा मायाजाल नाकाम हो जाता है। आप भटकावे की राजनीति को आईना दिखाते हुए उंगलियों पर गिना देते हैं कि किसने कितना काम किया और किसने सिर्फ बरगलाने की राजनीति की। कांग्रेस महासचिव ने कहा, आज अपनी इस जागरूकता को जनादेश में बदलने का समय है। भारी से भारी संख्या में मतदान करें और पूरे देश को यह संदेश भेजें कि आप लोकतंत्र, संविधान और विकास की सकारात्मक राजनीति के साथ हैं।

कांग्रेस ने खरगे के खिलाफ अशोभनीय टिप्पणियों को लेकर बंगाल प्रभारी से रिपोर्ट तलब की

भाषा। नई दिल्ली

कांग्रेस ने पश्चिम बंगाल में पार्टी के कुछ पदाधिकारियों द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के खिलाफ की गई अशोभनीय टिप्पणियों और प्रदेश इकाई के कार्यालय में तोड़फोड़ के मामले को पार्टी विरोधी गतिविधि एवं अनुशासनहीनता करार दिया है तथा प्रभारी गुलाम अहमद मीर से तथ्यात्मक रिपोर्ट तलब की है। पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने एक बयान जारी कर कहा कि इस घटनाक्रम से पार्टी के कार्यकर्ताओं की भावनाएं आहत हुई हैं तथा इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कोलकाता में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यालय के सामने रविवार को कांग्रेस अध्यक्ष खरगे के कई पोस्टर और होर्डिंग्स पर कथित तौर पर स्याही फेंकी गई थी। खरगे ने तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी की इंडिया गठबंधन के प्रति निष्ठा पर सवाल उठाने के लिए कांग्रेस की पश्चिम बंगाल इकाई के अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी को फटकार लगाई थी, जिसके एक दिन बाद यह घटना हुई। वेणुगोपाल ने सोमवार को एक बयान जारी कर कहा, यह हमारे संज्ञान में लाया गया है कि कांग्रेस के कुछ पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने मीडिया के साथ-साथ सोशल मीडिया पर माननीय कांग्रेस अध्यक्ष के खिलाफ कुछ अशोभनीय टिप्पणियां की हैं। कुछ उपद्रवियों द्वारा डब्ल्यूबीपीसीसी कार्यालय के बाहर लगे होर्डिंग को भी तोड़ने की घटना को अंजाम दिया गया है। इससे पार्टी के लाखों कार्यकर्ताओं और समर्थकों की भावनाएं आहत हुई हैं। उन्होंने कहा, हम ऐसी गंभीर पार्टी विरोधी गतिविधियों को बहुत गंभीरता से ले रहे हैं।

क्विक न्यूज

भारत सेवाश्रम संघ पर टिप्पणी करने के लिए संत ने ममता बनर्जी को भेजा कानूनी नोटिस

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद स्थित भारत सेवाश्रम संघ के स्वामी प्रदीप्तानंद महाराज ने सोमवार को कहा कि उन्होंने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को एक कानूनी नोटिस भेजा है। महाराज ने संगठन के बारे मे कथित रूप से अपमानजनक टिप्पणी करने के लिए ममता से मांफी मांगने को भी कहा है।ममता को कानूनी नोटिस भेजने की पुष्टि करते हुए स्वामी प्रदीप्तानंद महाराज ने पीटीआई-भाषा से कहा, अगर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी निजी तौर पर मुझे अपमानित करती तो मुझे इससे फर्क नही पड़ता। एक आध्यात्मिक गुरु होने के नाते हम निजी आलोचना से प्रभावित नही होते क्योंकि हम यहां लोगो की सेवा के लिए है। लेकिन उन्होंने (ममता ने) संगठन को अपमानित किया है, जो अस्वीकार्य है। संघ के राष्ट्रीय सचिव स्वामी विश्वात्मानंद महाराज ने हालांकि दावा किया कि उन्हे इस मुद्दे की जानकारी नही है।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी ममता बनर्जी की टिप्पणी की निंदा की और कहा कि एक विशेष वोट बैंक को खुश करने के लिए इन सामाजिक-धार्मिक संगठनो को धमकियां दी जा रही है।प्रधानमंत्री मोदी ने रविवार को पुरुलिया में एक रैली के दौरान इस्कॉन, रामकृष्ण मिशन और भारत सेवाश्रम संघ के खिलाफ झूठ फैलाकर शालीनता की सीमा पार करने के लिए टीएमसी की आलोचना की थी। ममता ने आरामबाग लोकसभा क्षेत्र के गोघाट में शनिवार को एक रैली के दौरान आरोप लगाया था, रामकृष्ण मिशन और भारत सेवाश्रम संघ के कुछ संत दिल्ली में भाजपा नेताओ के प्रभाव में काम कर रहे है।

पश्चिम बंगाल रामकृष्ण मिशन परिसर में तोड़फोड़

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले मे रामकृष्ण मिशन (आरकेएम) के परिसर मे बदमाशो ने कथित तौर पर तोड़फोड़ की और बंदूक दिखाते हुए संतो एवं अन्य कर्मियों को वहां से चले जाने की धमकी दी। मिशन के एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि रविवार तड़के यह घटना घटी जिसके पीछे एक स्थानीय भू-माफिया है। आरकेएम के अधिकारी ने पीटीआई-भाषा से कहा, करीब 10 हथियारबंद युवक तड़के तीन बजे हमारे आश्रम में घुस आए। वे पहले तल पर गए और उन्होंने वहां मौजूद वरिष्ठ संतो समेत आठ लोगों को बंदूक दिखाते हुए परिसर से चले जाने की धमकी दी। उन्होने बताया कि उसके बाद उन्होंने (युवकों ने) परिसर में तोड़फोड़ की तथा वहां से जाने से पहले सीसीटीवी कैमरे तोड़ दिए और मुख्य द्वार पर ताला लगा दिया। बाद में पुलिस ने ताला तोड़ा तथा संतों एवं कर्मियों को सुरक्षा दी जो हमलावरों के चले जाने के बाद खुले मे थे। आरकेएम अधिकारी ने कहा, यह संपत्ति के विवाद का मामला है और हमारे संत पहले ही एक स्थानीय बाहुबली एवं उसके कुछ साथियो के खिलाफ भक्तिनगर थाने में शिकायत दर्ज करा चुके है। हमने शिकायत में उसे नामजद किया है।

गुजरात पुलिस ने इस्लामिक स्टेट से जुड़े श्रीलंका के चार नागरिकों को गिरफ्तार किया

अहमदाबाद। गुजरात पुलिस के आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने प्रतिबंधित संगठन इस्लामिक स्टेट (आईएस) से संबंध रखने के आरोप में चार श्रीलंकाई नागरिकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक श्रीलंका के ए नागरिक कथित तौर पर भारत में आतंकी गतिविधियो को अंजाम देने के मिशन पर थे। एक अधिकारी ने बताया कि खुफिया सूचना के आधार पर कार्वाई करते हुए एटीएस ने रविवार रात को सरदार वल्लभाई पटेल हवाई अड्डे पर आतंकवादियो को पकड़ लिया। ए लोग श्रीलंका की राजधानी कोलंबो से चेन्नई होते हुए अहमदाबाद पहुंचे थे। गुजरात के पुलिस महानिदेशक विकास सहाय ने कहा कि ए लोग आईएस के आदेश पर आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए भारत आए थे। सहाय ने कहा कि एटीएस की टीम ने आरोपियो के पास से जब्त किए गए मोबाइल फोन मे मिली जानकारी और तस्वीरो के आधार पर शहर के नाना चिलोडा इलाके मे एक स्थान पर लावारिस पड़ी पाकिस्तान निर्मित तीन पिस्तौल और 20 कारतूस भी बरामद किए है। पुलिस महानिदेशक ने कहा कि उन्हे उनके पाकिस्तानी आकाओ ने हथियारो को इकट्ठा करने का निर्देश दिया था। आरोपियो की पहचान मोहम्मद नुसरत (35), मोहम्मद फारुख (35), मोहम्मद नफरान (27) और मोहम्मद रासदीन (43) के रूप में की गई है। इन्होंने कोलंबो से उड़ान भरी और रविवार तड़के चेन्नई पहुंचे। अधिकारी ने बताया कि इसके बाद आतंकवादियो ने अहमदाबाद के लिए दूसरी उड़ान ली, जहां वे रविवार रात करीब आठ बजे उतरे। उन्होंने बताया कि इन लोगो ने जांचकर्ताओ को सूचित किया कि वे पहले प्रतिबंधित श्रीलंकाई कट्टरपंथी आतंकवादी संगठन, नेशनल तौहीत जमात (एनजेटी) से जुड़े थे, और अपने पाकिस्तानी आका अबू बक्र अल बगदादी के संपर्क मे आने के बाद आईएस में शामिल हो गए।

लेखक अक्षत गुप्ता की किताब द नागा वॉरियर्स 27 मई को पाठकों को उपलब्ध होगी

नई दिल्ली। लेखक अक्षत गुप्ता द हिडन हिंदू की सफलता के बाद अपनी नई श्रृंखला द नागा वॉरियर्स के साथ ऐतिहासिक कथा साहित्य मे उतरने के लिए तैयार है। 27 मई को जारी होने वाली श्रृंखला की पहली पुस्तक मे प्रसिद्ध नागा साधुओ का एक दिलचस्प चित्रण किया गया है। गुप्ता अपनी सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक द हिडन हिंदू के लिए खासी चर्चा मे रहे है। द नागा वॉरियर्स का प्रकाशन पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया (पीआरएचआई) द्वारा किया गया है। गुप्ता ने एक बयान मे कहा, मै भारत की रहस्यमय यात्रा पर निकले बहादुर नागा योद्धाओं की एक मनोरम नई गाथा पेश करने के लिए उत्सुक हूं। द नागा वॉरियर्स सम्मान, नियति और प्राचीन रहस्यो के विषयों की खोज करती है। यह पुस्तक उन लोगो को श्रद्धांजलि देती है जिन्होंने धर्म को बरकरार रखा और मोक्ष की मांग की। उन्होंने कहा, हम कश्मीर से कन्याकुमारी तक 10 पवित्र स्थलो पर नागा साधुओ के सम्मान मे यज्ञ आयोजित करने की भी योजना बना रहे है।

किरदार के नाम मिलती है प्रसिद्धी : श्रद्धा

मुंबई। जी टीवी के शो कुंडली भाग्य ने अपनी दिलचस्प कहानी और जबर्दस्त ड्रामा के साथ पिछले 6 वर्षों से ज्यादा समय से अपने लगातार अपने दर्शकों के बीच उत्सुकता जगाए रखी है। इस शानदार सफर के दौरान शो की लीडिंग लेडी श्रद्धा आर्य ने हमेशा अपने दर्शकों का दिल जीता है, जो इस शो में सभी की चहेती किरदार प्रीता अरोड़ा का रोल निभा रही हैं। जहां यह शो अब लोकप्रियता के आसमान को छू रहा है, वहीं श्रद्धा को इस बात की खुशी है कि उन्हें प्रीता के रोल में एक खास पहचान मिली और अब यह नाम उनके नाम से जुड़ गया है। ऐसे बेहतरीन शो का हिस्सा बनने पर श्रद्धा ने अपना आभार जताया और एक ऐसे किरदार से जुड़ने का रोमांच साझा किया जो दर्शकों से गहराई से जुड़ गया है। कुंडली भाग्य के साथ अपने सफर के बारे में बताते हुए श्रद्धा ने अपने किरदार के बदलते स्वरूप पर चर्चा की, साथ ही एक डेली शो में कोई रोल निभाने से जुड़े उतार-चढ़ाव के बारे में भी बताया। उन्होंने यह ख्वाहिश जताई आने वाले कई सालों तक यह शो लगातार इसी तरह चलता रहे और इसकी सफलता के लिए दर्शकों का शुक्रिया अदा किया। श्रद्धा आर्य ने कहा कि जब मेरे फैंस और दर्शक मुझे मेरे किरदार प्रीता के नाम से बुलाते हैं तो बहुत अच्छा लगता है। अपने किरदार के नाम से पहचाना जाना एक एक्टर की सबसे ब?ी उपलब्धि होती है। यह हमारी कड़ी मेहनत और लगन का सबूत है, जो किसी भी किरदार में जान फूंकने में लगती है। मैं अपने फैंस से मिले प्यार और सपोर्ट के लिए वाकई बेहद खुश और आभारी हूं। किसी कैरेक्टर को डेवलप करने में बहुत मेहनत लगती है, जिसके लिए आपका कमिटमेंट और हौसला बहुत जरूरी है। असल में यह काफी उतार-चढ़ाव भरा सफर होता है। मैं हाल ही में शॉपिंग के लिए बाहर गई थी और वहां मैंने एक मां को अपनी बेटी से यह कहते हुए सुना, 'वो प्रीता है ना', और उस पल ने वाकई मेरे चेहरे पर मुस्कान ला दी।

अग्निवीर राष्ट्र की संप्रभुता के रक्षक: प्रमुख रक्षा अध्यक्ष चौहान

भाषा। बेंगलुरु

प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने अग्निवीरों को संबोधित करने के लिए सोमवार को बेलगावी में मराठा लाइट इंफ्रेंट्री रेजिमेंटल सेंटर का दौरा किया। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अपने संबोधन में जनरल चौहान ने सैन्य सेवा के उद्देश्य और सैन्य संरचना में इसकी अहम भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि अग्निवीर केवल सैनिक नहीं हैं, बल्कि वे नेतृत्वकर्ता, नवोन्मेषी और राष्ट्र की संप्रभुता के रक्षक भी हैं। रक्षा प्रवक्ता ने कहा, नई उभरती युद्धशैलियों का जिक्र करते हुए उन्होंने साइबर युद्ध, कृत्रिम मेधा और अन्य खतरों सहित भविष्य के संघर्षों की जटिलता एवं उनका पूर्वानुमान नहीं किए जाने को रेखांकित किया। उन्होंने प्रौद्योगिकी एकीकरण और लगातार सीखने पर भी जोर दिया तथा कहा कि लड़ाई के प्रति नवोन्मेषी रुख अपनाने की भी जरूरत है। उन्होंने सशस्त्र बलों को पेशे के रूप में चुनकर अग्निवीरों द्वारा जताई गई प्रतिबद्धता को लेकर उनका आभार जताते हुए कहा कि यह राष्ट्र के प्रति उनके असाधारण कर्तव्य का एक गवाह है।

विदाई भाषण में कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायाधीश चितरंजन दास ने कहा : मैं संघ का सदस्य था

कोलकाता। कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद से सोमवार को सेवानिवृत्त हुए न्यायमूर्ति चित्तरंजन दास ने कहा कि वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सदस्य थे। उच्च न्यायालय में न्यायाधीशों और बार के सदस्यों की उपस्थिति में अपने विदाई समारोह को संबोधित करते हुए न्यायमूर्ति दास ने कहा कि यदि संगठन उन्हें किसी भी सहायता या किसी ऐसे काम के लिए बुलाता है जिसमें वह सक्षम हैं तो वह संगठन में वापस जाने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा, कुछ लोगों को भले ही अच्छा न लगे, मुझे यहां स्वीकार करना होगा कि मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का सदस्य था और हूं। न्यायमूर्ति दास स्थानांतरण पर उड़ीसा उच्च न्यायालय से कलकत्ता उच्च न्यायालय आए थे। उन्होंने कहा, संगठन का मुझ पर बहुत एहसान है... मैं बचपन से लेकर युवावस्था तक वहां रहा हूं। न्यायमूर्ति दास ने कहा, मैंने साहसी, ईमानदार होना और दूसरों के प्रति समान दृष्टिकोण रखना तथा देशभक्ति की भावना तथा काम के प्रति प्रतिबद्धता के बारे में सीखा है। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने काम की वजह से करीब 37 साल तक संगठन से दूरी बनाकर रखी।

मुसलमानों के खिलाफ हर मंच से नफरती भाषण दे रहे हैं पीएम : विपक्ष

भाषा। नई दिल्ली

विपक्ष ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अल्पसंख्यकों के खिलाफ कभी एक शब्द भी नहीं बोलने की टिप्पणी को लेकर सोमवार को उनकी आलोचना करते हुए कहा कि वह झूठ बोल रहे हैं क्योंकि वह हर उपलब्ध मंच से मुसलमानों के खिलाफ नफरत भरे भाषण दे रहे हैं। मोदी ने पीटीआई-वीडियो को दिए साक्षात्कार में कहा है कि उन्होंने अल्पसंख्यकों के खिलाफ कभी एक शब्द भी नहीं बोला और भारतीय जनता पार्टी केवल आज ही नहीं, बल्कि कभी भी अल्पसंख्यकों के खिलाफ नहीं रही है। हालांकि, प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि वह किसी को भी विशेष नागरिक के तौर पर स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। उनकी टिप्पणी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के महासचिव डी राजा ने कहा, यह पूरी तरह से झूठ है। मोदी जानते हैं कि वे (भाजपा) मुसलमानों के बारे में कैसी बात बोल रहे हैं। मंगलसूत्र, अधिक बच्चों को जन्म देने वाली माताओं के बारे में किसने बात की? मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यकों का अपमान किया गया है और उन्हें कई वाजिब अधिकारों से वंचित किया गया है। राजा ने आरोप लगाया कि भाजपा-आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) अल्पसंख्यकों को कमजोर करने और उनका उपहास करने के मंसूबे को आगे बढ़ा रहे हैं। राज्यसभा सदस्य

कपिल सिब्बल ने कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य की कोई बात नहीं हो रही है जो हमें विकसित भारत की ओर ले जाएगा, बल्कि मंगलसूत्र की चर्चा हो रही है। सिब्बल ने कहा, वे देश के विकास के बारे में नहीं, बल्कि अपनी पार्टी के विकास के बारे में सोचते हैं। तृणमूल कांग्रेस की सांसद सागरिका घोष ने भी प्रधानमंत्री की टिप्पणी के लिए उनकी आलोचना की। उन्होंने कहा, जब आप सोचते हैं कि वह अब और झूठ नहीं बोल सकते, तो वह एक और झूठ बोलते हैं... यह वह पार्टी है जिसने बिलकिस बानो के बलात्कारियों को माला पहनाई थी, यह वह पार्टी है जिसने मुस्लिम-पशु व्यापारी की पीट-पीटकर हत्या करने वालों को माला पहनाई थी। मोदी खुद शमशान, कब्रिस्तान की बात करते हैं। सागरिका ने दावा किया कि मोदी ने मुसलमानों के खिलाफ सबसे भयावह सांप्रदायिक भाषा का इस्तेमाल किया है, जैसे कि उन्होंने कहा कि कांग्रेस हिंदुओं की संपत्ति मुसलमानों को दे देगी। उन्होंने कहा, वह लगातार हर उपलब्ध मंच से मुसलमानों के खिलाफ नफरत फैलाने वाले भाषण दे रहे हैं। भाजपा पदाधिकारियों और संघ परिवार के सदस्यों ने मुसलमानों पर हमले किए हैं और मुसलमानों को गाली देने वालों के खिलाफ कोई कार्वाई नहीं की गई। यह पूरी तरह से मुस्लिम विरोधी पार्टी है। आम आदमी पार्टी (आप) के सांसद संजय सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री की टिप्पणियां हास्यास्पद हैं क्योंकि वह रोजाना नफरत की जुबान में बात करते हैं। सिंह ने कहा, केवल हिंदू और मुस्लिम ही नहीं, वह हिंदुओं को भी आपस में लड़वाते हैं।

मोहम्मद मोखबर ईरान के कार्यवाहक राष्ट्रपति नियुक्त किए गए

एपी। दुबई

मोज न्यूज एजेंसी द्वारा उपलब्ध कराए गए इस चित्र में, सोमवार को ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रायसी को ले जा रहा एक हेलीकॉप्टर वरजाघन, उत्तर-पश्चिमी ईरान में दुर्घटनाग्रस्त दिख रहा है। इसके बाद बचाव दल के सदस्य एक पीड़ित का शव ले जाते हुए। ईरानी राष्ट्रपति इब्राहिम रायसी, देश के विदेश मंत्री राज्य मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, देश के उत्तर-पश्चिम के धुंधले, पहाड़ी क्षेत्र में एक घंटे की खोज के बाद हेलीकॉप्टर दुर्घटना स्थल पर अन्य लोग मृत पाए गए हैं।

ईरान के प्रथम उपराष्ट्रपति मोहम्मद मोखबर को देश के उत्तर-पश्चिमी इलाके में एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी की मौत के बाद सोमवार को इस्लामी गणराज्य का कार्यवाहक राष्ट्रपति नियुक्त किया गया।

मोखबर (68) ईरान के शिया धर्मतंत्र में अन्य राजनीतिक नेताओं की तुलना में काफी हद तक सुर्खियों से दूर रहे हैं। रईसी के निधन के बाद मोखबर अचानक जनता की निगाहों के सामने आए हैं। ईरान में राष्ट्रपति चुनाव से पहले वह लगभग 50 दिन तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में सेवा दे सकते हैं।

ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने रविवार को हुई दुर्घटना में रईसी की मौत पर जारी एक शोक संदेश में मोखबर की नियुक्ति की घोषणा की। हेलीकॉप्टर का मलबा सोमवार को ईरान के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में मिला।

मोखबर ने सरकार में प्रमुख पदों पर कार्य किया है। उन्होंने खास तौर पर बोनयाद या धर्मार्थ संगठनों में बड़ी भूमिका निभाई है। ईरान की 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद जब्त की गई संपत्ति से इन संगठनों को बढ़ावा मिला। इनमें वे संपत्तियां भी थीं जो पहले ईरान के शाह या उनकी सरकार से जुड़ी थीं।

मोखबर ने दिवंगत सर्वोच्च नेता अयातुल्ला रुहोल्ला खुमैनी से संबंधित एक धर्मार्थ फाउंडेशन का जिम्मा संभाला। इस संगठन को इमाम खुमैनी के आदेश की तामील (ईआईकेओ) के रूप में जाना जाता है।

अमेरिकी कोषागार विभाग का कहना है कि इस संगठन के पास सर्वोच्च नेता अली खामेनेई की सीधी देखरेख में अरबों डॉलर की संपत्ति का नियंत्रण है, जिसकी ऊर्जा, दूरसंचार और वित्तीय सेवाओं सहित ईरानी अर्थव्यवस्था के लगभग हर क्षेत्र में हिस्सेदारी है।

अमेरिका ने ईआईकेओ पर राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों, धार्मिक अल्पसंख्यकों और निर्वासित ईरानियों सहित सरकार के आलोचकों से भूमि और संपत्ति जब्त करके असंतुष्टों के अधिकारों का व्यवस्थित रूप से उल्लंघन करने का भी आरोप लगाया। इस वजह से अमेरिका ने 2021 में मोखबर पर प्रतिबंध लगाया था।

यूरोपीय संघ (ईयू) ने भी ईरान के परमाणु कार्यक्रम के बारे में चिंताओं के बीच अन्य लोगों के साथ कुछ समय के लिए मोखबर पर प्रतिबंध लगाया था।

ईआईकेओ के प्रमुख के तौर पर मोखबर ने कोविड-19 महामारी के चरम के दौरान टीका बनाने के प्रयास का निरीक्षण किया और लाखों खुराक बनाने का वादा किया।

मोखबर पूर्व में बैंकिंग और दूरसंचार क्षेत्र में भी काम कर चुके हैं। उन्होंने मुस्तजाफान फाउंडेशन में भी काम किया। यह संगठन देश की बड़ी-परियोजनाओं और व्यवसायों का प्रबंधन करता है।

ईरानी मीडिया की खबरों से पता चलता है कि अंतरराष्ट्रीय कानून में डॉक्टरेट कर चुके मोखबर ने ईरान के तेल उद्योग पर पश्चिमी देशों के प्रतिबंधों को दरकिनार करने के देश प्रयासों में खास भूमिका निभाई थी।

मोखबर 2022 से ईरान की एक्सपेडिएंसी काउंसिल के सदस्य हैं। यह संस्था सर्वोच्च नेता को सलाह देती है, साथ ही संसद और ईरान की संवैधानिक निगरानी इकाई गार्जियन काउंसिल के बीच विवादों का निपटारा करती है।

मोखबर का जन्म एक सितंबर 1955 को ईरान के दक्षिण-पश्चिम में स्थित खुजेस्तान प्रांत के देजफुल में हुआ था।

समूह यूनाइटेड अगेंस्ट न्यूक्लियर ईरान (यूएएनआई) के अनुसार, मोखबर ने 1980 के दशक के ईरान-इराक युद्ध के दौरान रिवोल्यूशनरी गार्ड की मेडिकल कोर में अधिकारी के रूप में कार्य किया था।

यूएएनआई ने कहा, मोखबर ने ईआईकेओ द्वारा जमा की गई विशाल संपत्ति का इस्तेमाल ईरानी लोगों की कीमत पर अपने जैसे शासन के करीबी लोगों को पुरस्कृत करने के लिए किया।

ब्रिटेन में संक्रमित खून के कारण हजारों लोगों की मौत हुईः जांच रिपोर्ट

एपी। लंदन

ब्रिटेन के संक्रमित रक्त प्रकरण की जांच में सोमवार को पाया गया कि अधिकारियों और लोक स्वास्थ्य सेवा ने जानकारी रहने के बावजूद हजारों मरीजों को संदूषित रक्त के जरिए जानलेवा संक्रमण कराया।

यह माना जाता है कि ब्रिटेन में, 1970 के दशक से लेकर 1990 के दशक के शुरुआती वर्षों तक एचआईवी या हेपटाइटिस से संक्रमित रक्त आधान करने से करीब 3,000 लोगों की मौत हुई। इस प्रकरण को 1948 से ब्रिटेन की सरकार संचालित राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) के इतिहास में सबसे घातक आपदा माना जाता है।

जांच समिति की अध्यक्षता करने वाले पूर्व न्यायाधीश ब्रायन लैंगस्टाफ ने आपदा को टालने में नाकाम रहने के लिए तत्कालीन सरकारों और मेडिकल पेशेवरों की आलोचना की है। उन्होंने पाया कि आपदा को छिपाने के लिए जानबूझ कर प्रयास किए गए और सरकारी अधिकारियों द्वारा सबूत नष्ट करने के साक्ष्य हैं। लैंगस्टाफ ने कहा, यह आपदा एक दुर्घटना नहीं थी। संक्रमण इसलिए हुए कि प्राधिकार-चिकित्सक, रक्त सेवा प्रदाता और तत्कालीन सरकारों ने मरीजों की सुरक्षा को प्राथमिकता नहीं दी।

प्रभावित हुए ज्यादातर लोग हेमोफिलिया से ग्रसित थे। इसके चलते रक्त में थक्का बनना कम हो जाता है। 1970 के दशक में मरीजों को नया उपचार दिया गया जिसे ब्रिटेन ने अमेरिका से अपनाया था। कुछ प्लाज्मा, कैदियों सहित ऐसे लोगों के थे जिन्हें रक्त के एवज में भुगतान किया गया था।

जांच रिपोर्ट के अनुसार, करीब 1,250 लोग रक्स्राव की समस्याओं से ग्रसित थे जिनमें 380 बच्चे थे। ए लोग एचआईवी वाले रक्त आधान करने से संक्रमित हुए थे। उनमें से तीन-चौथाई की मौत हो गई, जबकि 5,000 लोग हेपटाइटिस सी से ग्रसित हो गए जो एक प्रकार का यकृत संक्रमण है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि इस बीच, रक्त आधान करने पर करीब 26,800 अन्य लोग भी हेपटाइटिस सी से संक्रमित हुए। इस प्रकरण पर, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के सोमवार देर शाम खेद व्यक्त करने की उम्मीद है और अधिकारियों द्वारा करीब 12.7 अरब अमेरिकी डॉलर के मुआवजे की घोषणा करने की संभावना है। करीब 1,500 पीड़ितों का प्रतिनिधित्व कर रहे अधिवक्ता डेस कोलिन्स ने रिपोर्ट के प्रकाशन को सच्चाई का दिन करार दिया।

ताइवान के नए राष्ट्रपति ने चीन से सैन्य धमकियां न देने का अनुरोध किया

एपी। ताइपे

ताइवान के नए राष्ट्रपति लाई चिंग-ते ने पद संभालने के बाद अपने पहले भाषण में चीन से इस स्व:शासित द्वीप के खिलाफ सैन्य धमकी न देने का अनुरोध किया। चीन, ताइवान पर अपना दावा जताता है।

लाई ने इस साल की शुरुआत में चुनाव जीतने के बाद सोमवार को एक समारोह में पद की शपथ ली।

लाई के शपथ ग्रहण करने पर उन्हें उनके देश के नेताओं और ताइवान के साथ आधिकारिक राजनयिक संबंध रखने वाले 12 देशों के प्रतिनिधिमंडलों के अलावा अमेरिका, जापान और विभिन्न यूरोपीय देशों के नेताओं ने बधाई दी।

लाई ने दक्षिणी शहर ताइनान के मेयर के रूप में राजनीति में प्रवेश किया था और वहां से वह उपराष्ट्रपति और फिर राष्ट्रपति पद तक पहुंचे हैं।

उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति साई इंग-वेन का स्थान लिया है, जिन्होंने कोविड-19 महामारी और चीन के बढ़ते सैन्य खतरों के बीच आठ साल तक ताइवान का नेतृत्व किया और देश को आर्थिक एवं सामाजिक विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाया।

लाई ने साई के दूसरे कार्यकाल में उपराष्ट्रपति पद की जिम्मेदारी संभाली थी। उन्होंने 2017 में खुद को ताइवान की स्वतंत्रता के लिए काम करने वाला कार्यकर्ता बताया था और उनके इस बयान की चीन ने कड़ी निंदा की थी। इसके बाद से उन्होंने अपना रुख नरम किया और अब वह ताइवान जलडमरूमध्य में यथास्थिति बनाए रखने एवं चीन के साथ बातचीत की संभावना का समर्थन करते हैं।

लाई अमेरिका के साथ संबंधों को मजबूत करने के साई के प्रयासों को आगे बढ़ाएंगे। अमेरिका ताइवान को एक देश के रूप में औपचारिक रूप से मान्यता नहीं देता, लेकिन वह उसे रक्षा के साधन मुहैया कराने के अपने

कानूनों से बंधा हुआ है।

साई के कार्यकाल के दौरान ताइवान समलैंगिक विवाह को वैध बनाने वाला एशिया का पहला समाज बना। बहरहाल, उनके आलोचकों का कहना है कि उन्होंने निर्णय को उच्चतम न्यायालय और जनमत संग्रह पर छोड़कर राजनीतिक जिम्मेदारी से बचने की कोशिश की।

आईसीसी अभियोजक ने नेतन्याहू, हमास नेताओं के गिरफ्तारी वारंट का अनुरोध किया

एपी। हेग

अंतरराष्ट्रीय अपराध अदालत (आईसीसी) के मुख्य अभियोजक करीम खान ने सोमवार को कहा कि वह इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू सहित इजराइल और हमास के नेताओं के लिए सात महीने के युद्ध के दौरान उनके कृत्यों के संबंध में गिरफ्तारी वारंट का अनुरोध कर रहे हैं।

करीम खान ने कहा कि उनका मानना है कि नेतन्याहू, उनके रक्षा मंत्री योव गैलेंट और हमास के तीन नेता - एह्या सिनवार, मोहम्मद दीफ और इस्माइल हनिएह - गाजा पट्टी और इजराइल में युद्ध अपराधों और मानवता के खिलाफ अपराधों के लिए जिम्मेदार हैं।

खान ने इजराइली कार्वाइयों के बारे में एक बयान में कहा कि गाजा की नागरिक आबादी के खिलाफ अन्य हमलों और सामूहिक दंड के साथ ही युद्ध की एक विधि के रूप में भुखमरी का इस्तेमाल करने का असर साफ तौर पर नजर आता है। ... उन्होंने कहा कि इनमें कुपोषण, निर्जलीकरण, गहन पीड़ा और शिशुओं, अन्य बच्चों और महिलाओं सहित फलस्तीनी आबादी में हुई मौतें भी शामिल हैं।

खान ने सात अक्टूबर की हमास की कार्वाइयों के बारे में कहा कि उन्होंने आज दायर आवेदनों में लगाए आरोपों में उल्लेखित इन हमलों के विनाशकारी दृश्य और अपराधों के गहरे प्रभाव को स्वयं देखा है।

उन्होंने आगे कहा, जिंदा बचे लोगों के साथ बातचीत में, मैंने सुना कि कैसे एक परिवार के भीतर, एक माता पिता और उनके बच्चे के बीच प्रेम का रिश्ता युद्ध की भेंट चढ़ गया। ए कार्वाई जवाबदेही की मांग करती है।

इजराइल-हमास युद्ध के दृश्यों ने मेरा भी दिल तोड़ दिया: बाइडन

एपी। अटलांटा

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने रविवार को इजरायल-हमास युद्ध पर अमेरिकी छात्रों की पीड़ा को स्वीकार किया और ऐतिहासिक ब्लैक मोरहाउस कॉलेज के स्नातकों से कहा कि उन्होंने उनके विरोध की आवाजें सुनी हैं और गाजा में संघर्ष के दृश्यों ने उनका भी दिल तोड़ दिया।

उन्होंने छात्रों से कहा, "मैं शांतिपूर्ण अहिंसक विरोध प्रदर्शन का समर्थन करता हूं।

बाइडन ने कहा कि गाजा में मानवीय संकट है, "इसलिए मैंने युद्ध को रोकने के लिए तत्काल संघर्ष विराम का आह्वान किया है और कहा है कि 7 अक्टूबर को इजरायल पर हमास आतंकवादियों के हमले के बाद हमास द्वारा अभी भी बंधक बनाए गए लोगों को घर लाया जाए। राष्ट्रपति ने अमेरिकी लोकतंत्र और इसकी सुरक्षा में उनकी भूमिका पर भी विचार किया।

बाइडन ने कहा, यह दुनिया की सबसे कठिन, सबसे जटिल समस्याओं में से एक है। उन्होंने कहा, इसमें कुछ भी आसान नहीं है। मैं जानता हूं कि यह मेरे परिवार सहित आपमें से कई लोगों को क्रोधित और निराश करता है। मैं जानता हूं कि इससे आपका दिल टूट जाता है। यह मेरा भी दिल तोड़ देता है। बाइडन ने लगभग 30 मिनट के भाषण का अधिकांश समय घरेलू समस्याओं पर केंद्रित रखा। उन्होंने अप्रवासियों पर डोनाल्ड ट्रम्प की बयानबाजी की निंदा की।

नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड ने संसद में विश्वास मत हासिल किया

भाषा। काठमांडू

नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल प्रचंड ने सोमवार को संसद में विश्वास मत हासिल कर लिया जो उनके पदभार संभालने के 18 महीने के भीतर चौथा शक्ति परीक्षण था।

इस दौरान मुख्य विपक्षी दल नेपाली कांग्रेस ने नारेबाजी की और वह मतदान से दूर रही।

नेपाल की प्रतिनिधि सभा (एचओआर) में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओइस्ट सेंटर) के नेता प्रचंड (69) को 275 सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में 157 वोट मिले।

मतदान में कुल 158 सांसदों ने हिस्सा लिया। मुख्य विपक्षी दल नेपाली कांग्रेस ने मतदान प्रक्रिया का बहिष्कार किया और उपप्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री रबी लामिछाने के खिलाफ नारेबाजी की। लामिछाने पर

सहकारी निधि के दुरुपयोग का आरोप है। विपक्षी दल की इस नारेबाजी के कारण मतदान प्रक्रिया में देरी हुई। मतदान के दौरान प्रतिनिधि सभा का एक सदस्य तटस्थ रहा।

सदन के अध्यक्ष राज घिमिरे ने घोषणा की कि संसद में बहुमत मिलने के साथ ही प्रचंड ने विश्वास मत हासिल कर लिया है।

यह शक्ति प्रदर्शन गठबंधन सहयोगियों में शामिल जनता समाजबादी पार्टी (जेएसपी) द्वारा पिछले सप्ताह गठबंधन सरकार से अपना समर्थन वापस लिए जाने के कुछ दिनों बाद किया गया।

सरकार को विश्वास मत जीतने के लिए कम से कम 138 मतों की आवश्यकता थी।

इससे पहले, नेपाली कांग्रेस द्वारा अवरोध पैदा किए जाने के कारण मतदान में देरी हुई। नेपाली कांग्रेस ने घोटाले में लामिछाने की कथित संलिप्तता की जांच के लिए संसदीय जांच समिति के गठन की मांग की।

प्रचंड के दिसंबर 2022 में प्रधानमंत्री पद संभालने के बाद से संसद में विश्वास मत के लिए चौथी बार मतदान हुआ है।

संवैधानिक प्रावधानों के मुताबिक, किसी सहयोगी दल के सत्तारूढ़ गठबंधन से समर्थन वापस लेने की स्थिति में प्रधानमंत्री को विश्वास मत हासिल करना होता है। इससे पहले प्रचंड ने 13 मार्च को लगातार तीसरी बार विश्वास मत जीता था।

श्रीलंका में सीता अम्मन मंदिर के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में प्रयोग किया गया सरयू का पवित्र जल

भाषा। कोलंबो

श्रीलंका में एक हिंदू मंदिर के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में अयोध्या की सरयू नदी के पवित्र जल का इस्तेमाल किया गया। इस प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में हजारों लोग शामिल हुए। श्रीलंका के सीता एलिया गांव में सीता अम्मन मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन रविवार को हुआ। भारतीय उच्चायोग ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, श्रीलंका में सीता अम्मन मंदिर के कुंभाभिषेकम कार्यक्रम में हजारों भारतीय, श्रीलंकाई और नेपाली श्रद्धालु शामिल हुए। इस प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में श्रीलंका में भारतीय उच्चायुक्त संतोष झा, आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद रहे। देवी सीता को समर्पित इस मंदिर का अभिषेक समारोह सरयू नदी के पवित्र जल से हुआ, जो भारत के अयोध्या से लाया गया था। श्रीलंका की एक वेबसाइट न्यूज फर्स्ट की रिपोर्ट के मुताबिक भगवान राम की जन्मभूमि माने जाने वाले अयोध्या और देवी सीता का जन्मस्थान माने जाने वाले नेपाल से सीता अम्मन मंदिर को पवित्र प्रसाद प्राप्त हुआ। भारत और श्रीलंका सहित दुनिया भर से श्रद्धालु इस समारोह को देखने और इसमें भाग लेने के लिए एकत्र हुए। प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के समापन के अवसर पर देवी सीता के लिए भारत और नेपाल से भेजे गए वस्त्रों के अलावा आंध्र प्रदेश के तिरुपति के प्रसिद्ध श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर से भेजी गई मिठाइयां और अन्य सामग्री भेंट की गईं। उल्लेखनीय है कि श्रीलंका पर्यटकों की संख्या बढ़ाने को भगवान राम से जुड़े तीर्थस्थलों के विकास पर विशेष ध्यान दे रहा है।

अमेरिकी बाल रोग विशेषज्ञों का दावा: एचआईवी पीड़ित महिलाएं करा सकती हैं स्तनपान बशर्ते...

एपी। वाशिंगटन

अमेरिका के बाल रोग विशेषज्ञों के समूह ने सोमवार को आमूल-चूल नीतिगत बदलाव करते हुए कहा कि एचआईवी से संक्रमित महिलाएं अपने बच्चों को स्तनपान करा सकती हैं बशर्ते उनके द्वारा ली जा रही दवा से एड्स का कारण बनने वाला विषाणु निष्प्रभावी हो गया है।

अमेरिकी बाल रोग विशेषज्ञ अकादमी ने नई रिपोर्ट में 1980 के दशक में एचआईवी महामारी के दौरान की गई अनुशंसा को बदल दिया है।

कोलोरोडो विश्वविद्यालय में बाल एचआईवी विशेषज्ञ और शोधपत्र की प्रमुख लेखिका डॉ.लीजा अबुओगी ने कहा कि यह स्वीकार किया गया है कि नियमित रूप से ली जाने वाली दवा स्तनपान के जरिए एचआईवी संक्रमण के प्रसार के खतरे को एक प्रतिशत से भी कम कर देती है।

अबुओगी ने कहा, अब दवाएं इतनी अच्छी हैं, जच्चा एवं बच्चे के लिए इतनी लाभदायक हैं कि हम उस अवस्था में हैं जहां साझा निर्णय लेना महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि एंटीरिट्रोवायरल थेरेपी के तौर पर जानी जाने वाली दवा स्तनपान के जरिए एचआईवी के प्रसारित होने के खतरे को पूरी तरह से खत्म नहीं करती और स्तनपान कराने से रोकना केवल वायरस का प्रसार होने से रोकने के अन्य तरीकों में से एक है।

उन्होंने कहा कि इसके साथ ही अभिभावक को बच्चे को शुरुआती छह महीने तक केवल स्तनपान ही कराना चाहिए क्योंकि अनुसंधान इंगित करते हैं कि स्तनपान और बाहरी दूध अदल-बदल कर पिलाने से बच्चे की पाचन क्रिया प्रभावित होती है और एचआईवी संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

अबुओगी ने कहा कि अमेरिका में हर साल करीब पांच हजार एचआईवी संक्रमित महिलाएं बच्चे को जन्म देती हैं। इनमें से करीब सभी वायरस को निष्प्रभावी बनाने के लिए दवाएं लेती हैं। हालांकि, दवा रोकने की स्थिति में वायरस फिर से प्रभावी हो सकता है।

एलिजाबेथ ग्लेसर पैडियाटिक एड्स फाउंडेशन में सलाहकार लिन मेफेनसन ने कहा कि एचआईवी की दवा से पहले करीब 30 प्रतिशत संक्रमण मां से उसके बच्चे को स्तनपान के जरिए होता था। उन्होंने बताया कि 1990 के दशक के शुरुआत में करीब दो हजार बच्चे मां से स्तनपान के जरिए संक्रमित होते थे और आज यह संख्या घटकर 30 प्रतिशत से कम रह गई है।

थोटाकुरा ने पहला भारतीय अंतरिक्ष पर्यटक बनने पर गर्व जताया

भाषा। ह्यूस्टन (अमेरिका)

उद्यमी और पायलट गोपी थोटाकुरा ने कहा कि उन्हें अमेजन के संस्थापक जेफ बेजोस के ब्लू ओरिजिन के एनएस -25 मिशन पर एक पर्यटक के रूप में अंतरिक्ष में जाने वाला पहला भारतीय बनने पर गर्व है।

थोटाकुरा (30) और पांच अन्य सदस्यों को लेकर गई ब्लू ओरिजिन की सातवीं मानवयुक्त उड़ान सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में पहुंची। एनएस-25 रविवार सुबह पश्चिम टेक्सास में लॉन्च साइट वन से रवाना हुई थी।

वह 1984 में भारतीय सेना के विंग कमांडर राकेश शर्मा के बाद अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष पर्यटक और दूसरे भारतीय बन गए।

ब्लू ओरिजिन द्वारा एक्स पर पोस्ट किए एक वीडियो में थोटाकुरा को अंतरिक्ष यान से यह कहते हुए सुना गया, भारत अंतरिक्ष में। उन्हें हाथ में एक छोटा भारतीय ध्वज भी पकड़े हुए देखा गया।

आंध्र प्रदेश में जन्मे उद्यमी और पायलट थोटाकुरा को एक बैनर पकड़े हुए भी देखा गया जिस पर लिखा था, मैं हमारे सतत ग्रह के लिए एक पर्यावरण-योद्धा हूं।

उनके साथ अंतरिक्ष में गए चालक दल के अन्य सदस्यों में मैसन एंजेल, स्लिवेन चिरोन, केनेथ एल. हेस, कैरोल शालेर और वायुसेना के पूर्व कैप्टन एड ड्वाइट शामिल हैं। ड्वाइट को 1961 में राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी द्वारा देश के पहले अश्वेत अंतरिक्ष यात्री उम्मीदवार के रूप में चुना गया था, लेकिन उन्हें कभी अंतरिक्ष में उड़ान भरने का अवसर नहीं मिला।

चालक दल के सभी सदस्य उड़ान भरने के लिए उत्साहित थे।

न्यू शेपर्ड (एनएस) अब तक 37 लोगों को अंतरिक्ष में ले जा चुका है।

यह मिशन न्यू शेपर्ड कार्यक्रम के लिए सातवीं और इसके इतिहास में 25वीं मानव उड़ान थी। अभी तक इस कार्यक्रम के तहत 31 मनुष्यों को कार्मन रेखा से ऊपर ले जाया गया है जो पृथ्वी के वायुमंडल और अंतरिक्ष के बीच प्रस्तावित पारंपरिक रेखा है।

न्यू शेपर्ड ब्लू ओरिजिन द्वारा अंतरिक्ष पर्यटन के लिए विकसित पूरी तरह से पुन: इस्तेमाल होने वाला उप-कक्षीय प्रक्षेपण यान है।

ब्लू ओरिजिन के अनुसार, गोपी एक पायलट और विमान चालक हैं जिन्होंने वाहन चलाने से पहले उड़ान भरना सीख लिया था।

वह हार्ट्सफील्ड-जैक्सन अटलांटा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के समीप स्थित समग्र कल्याण और व्यावहारिक स्वास्थ्य मामलों से संबंधित वैश्विक केंद्र प्रिजर्व लाइफ कोर्प के सह-संस्थापक हैं।

वह वाणिज्यिक रूप से विमान उड़ाने के अलावा एयरोबेटिक विमान और सीप्लेन के साथ ही गर्म हवा के गुब्बारे भी उड़ा चुके हैं। वह अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा विमान पायलट के तौर पर भी काम कर चुके हैं।

रोमांचक यात्राओं के शौकीन थोटाकुरा ने हाल में तंजानिया के माउंट किलिमंजारो ज्वालामुखी की भी चढ़ाई की थी।

आंध्र प्रदेश में जन्मे थोटाकुरा ने एम्ब्री-रिडल एयरोनॉटिकल यूनिवर्सिटी से स्नातक किया है।

फाइनल पर नजर रखकर उतरेंगी टीमें

- पहला क्वालीफायर आज : केकेआर और सनराइजर्स के मुकाबला
- रनों का अंबार लगने की उम्मीद

भाषा। अहमदाबाद

बेहतरीन फॉर्म में चल रही कोलकाता नाइट राइडर्स का सामना इंडियन प्रीमियर लीग के पहले क्वालीफायर में मंगलवार को रन मशीन सनराइजर्स हैदराबाद से होगा तो दर्शकों को रोमांचक क्रिकेट की सौगात मिलने की गारंटी रहेगी। केकेआर इस साल आईपीएल प्लेआफ में पहुंचने वाली पहली टीम थी जबकि सनराइजर्स ने आखिरी लीग मैच में पंजाब किंग्स को चार विकेट से हराकर दूसरा स्थान हासिल किया। लीग चरण के 70 मैचों में शीर्ष दो स्थान पर रही इन टीमों को पिछले दस दिन में बारिश के कारण अच्छा खासा ब्रेक मिल गया है। वैसे प्लेआफ से पहले मैदान पर अधिक समय नहीं बिता पाने की चुनौती भी कठिन है। सैकड़ों किलोमीटर का सफर करके यहां पहुंचने वाली केकेआर और सनराइजर्स को हालात के अनुकूल ढलने के लिए अधिक समय नहीं मिलेगा। दोनों ने आखिरी लीग मैच रविवार को ही खेला है। सनराइजर्स ने हालांकि पूरा मैच खेलकर पंजाब को हराया लेकिन केकेआर और राजस्थान रॉयल्स का मैच बारिश के कारण नहीं हो सका। केकेआर ने आखिरी पूरा मैच 11 मई को खेला था। बारिश के खलल से पहले केकेआर ने लगातार चार मैच जीते थे पिछले दो मैच बारिश की भेट हो गए। शीर्ष पर काबिज केकेआर को विकेटकीपर बल्लेबाज फिल साल्ट (435 रन) की कमी खलेगी जो टी20 विश्व कप से पहले इंग्लैंड टीम से जुड़ने स्वदेश लौट गए हैं। साल्ट और सुनील नारायण (461) ने केकेआर को शानदार शुरूआत दी है। मध्यक्रम में कप्तान श्रेयस अय्यर (287 रन) प्रभावित नहीं कर सके लेकिन इसकी कमी टीम को खली नहीं। रॉयल्स के खिलाफ मैच बारिश में धुलने के कारण साल्ट की जगह टीम में आए रहमानुल्लाह गुरबाज को अभ्यास नहीं मिल सका जिससे केकेआर खेमा चिंतित होगा। केकेआर के लिए नीतिश राणा और आंद्रे रसेल का फॉर्म में रहना भी बहुत जरूरी है। कागजों पर केकेआर और सनराइजर्स बराबरी की टीमें लगती है जिससे यह मुकाबला और रोमांचक हो गया है। ट्रेविस हेड और अभिषेक शर्मा दोनों ने 200 से अधिक की स्ट्राइक रेट से रन बनाकर रिकॉर्ड की झड़ी लगा दी है। आस्ट्रेलिया के हेड ने आक्रामक बल्लेबाजी की नई परिभाषा गढी है और अब तक एक शतक तथा चार अर्धशतक समेत 533 रन बना चुके हैं। उनके साथ अभिषेक (467 रन) ने भी खुलकर खेलते हुए आईपीएल में अभी तक 41 छक्के जड़ डाले हैं। सनराइजर्स के पास तीसरे नंबर पर राहुल त्रिपाठी जैसा भरोसेमंद बल्लेबाज है। हेनरिच क्लासेन फॉर्म में लौट आए हैं और पंजाब के खिलाफ 42 रन बनाए। पिछले साल विश्व कप फाइनल में देखा गया था कि अहमदाबाद में बाद में बल्लेबाजी करने वाली टीम को अधिक सफलता मिलती है। छह में से चार बाद लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम कामयाब रही है। केकेआर के पास मिचेल स्टार्क की अगुवाई में तेज गेंदबाजों के साथ बेहतरीन स्पिनर हैं तो सनराइजर्स की गेंदबाजी की अगुवाई कप्तान पैट कमिंस कर रहे हैं। इस सत्र में उनके पिछले मैच में केकेआर ने सनराइजर्स को चार रन से हराया था।

स्टार ने रोहित के आरोपों को नकारा

- बोला- निजी बातचीत का प्रसारण नही किया

भाषा। नई दिल्ली

इंडियन प्रीमियर लीग के प्रसारणकर्ता स्टार स्पोर्ट्स ने सोमवार को रोहित शर्मा से जुड़ी किसी निजी बातचीत के ऑडियो का प्रसारण करने से इनकार किया। भारतीय कप्तान ने चैनल पर रिकॉर्डिंग रोकने के आग्रह के बावजूद उनकी निजता के उल्लंघन का आरोप लगाया है। कोलकाता नाइट राइडर्स ने रोहित और अपने सहायक कोच अभिषेक नायर से जुड़ा एक वीडियो साझा किया है जिसमें भारतीय कप्तान को कथित तौर पर मुंबई इंडियन्स में अपने भविष्य पर विचार करते हुए देखा जा सकता है। यह वीडियो 11 मई को वायरल हो गया था। नाइट राइडर्स ने बाद में अपने सोशल मीडिया पेज से इस वीडियो को हटा दिया। रोहित को 16 मई को लखनऊ सुपर जाइंट्स के खिलाफ मुंबई के मैच से पहले भी धवल कुलकर्णी से बात करते देखा जा सकता है। इस सलामी बल्लेबाज ने एक बार फिर कैमरों को अपनी तरफ देखकर प्रसारणकर्ता से ऑडियो बंद करने का आग्रह किया। रविवार को उन्होंने चैनल पर निजी बातचीत का प्रसारण करने का आरोप लगाया लेकिन स्टार ने बयान में आरोपों से इनकार किया है। चैनल ने कहा, वानखेड़े स्टेडियम में 16 मई को ट्रेनिंग सत्र के दौरान ली गई इस क्लिप में, जिसके लिए स्टार स्पोर्ट्स के पास आधिकारिक अनुमति थी, सीनियर खिलाड़ी को मैदान पर अपने दोस्तों के साथ बातचीत करते हुए दिखाया गया। इस बातचीत का कोई ऑडियो रिकॉर्ड प्रसारित नहीं किया गया। क्लिप में केवल सीनियर खिलाड़ी को अपनी बातचीत का ऑडियो रिकॉर्ड नहीं करने का अनुरोध करते हुए दिखाया गया था जिसे स्टार स्पोर्ट्स के मैच से पूर्व की तैयारियों के सीधे प्रसारण में दिखाया गया और इसके अलावा इसकी कोई संपादकीय प्रासंगिकता नहीं थी। इस बातचीत के ऑडियो को नाइट राइडर्स ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर पोस्ट किया जिसके बाद मुंबई इंडियन्स के साथ रोहित के भविष्य को लेकर अटकलें लगने लगी। विवाद के बाद नाइट राइडर्स ने इसे हटा दिया। रोहित ने रविवार को कहा, एक्सक्लूसिव सामग्री पाने की जरूरत और केवल व्यूज तथा जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित करने से एक दिन प्रशंसकों, क्रिकेटरों और क्रिकेट के बीच का विश्वास टूट जाएगा। बेहतर समझ की जीत होनी चाहिए। चैनल ने कहा कि वह खिलाड़ियों की निजता की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।

दीक्षा की फॉर्म में वापसी, प्रणवी और त्वेसा के साथ संयुक्त रूप से 24वें स्थान पर

ब्रेडनबर्ग (जर्मनी)। भारतीय गोल्फर दीक्षा डागर फॉर्म में वापसी करते हुए यहां 2024 अर्नड्ट जर्मन मास्टर्स गोल्फ टूर्नामेंट में हमवतन प्रणवी उर्स और त्वेसा मलिक के साथ संयुक्त रूप से 24वें स्थान पर रहीं। दीक्षा ने अंतिम दौर में 67 के स्कोर से कुल एक अंडर 287 का स्कोर बनाया। पहले दौर के बाद संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर रही प्रणवी ने अंतिम दौर में 69 जबकि त्वेसा ने 71 का स्कोर बनाया। जर्मनी की एलेक्सांद्रा फर्स्टलिंग ने प्ले ऑफ में अपनी करीबी मित्र ऐना स्पिट्ज को दूसरे प्ले ऑफ होल में पछाड़कर खिताब जीता।

इंडियन ओपन सर्फिंग 31 मई से

मंगलुरू। इंडियन ओपन सर्फिंग (आईओएस) का पांचवा सत्र 31 मई से दो जून तक यहां खेला जाएगा। इसमें चार वर्गों पुरूष ओपन , महिला ओपन, ग्रोम्स (अंडर 16) बालक और बालिका वर्ग के मुकाबले होगे। भारतीय सर्फिंग महासंघ ने एक विज्ञप्ति में कहा , इंडियन ओपन सर्फिंग 2024 कैलेंडर वर्ष में राष्ट्रीय चैम्पियनशिप सीरिज का दूसरा चरण होगा। इससे पहले केरल में मार्च में अंतरराष्ट्रीय सर्फिंग फेस्टिवल हुआ है।

नागल जिनेवा ओपन के पहले दौर से बाहर

जिनेवा। भारत के चोटी के एकल खिलाड़ी सुमित नागल जिनेवा ओपन के पहले दौर में अर्जेंटीना के सेबेस्टिएन बाएज से हारकर बाहर हो गए हैं। दुनिया के 94वें नंबर के खिलाड़ी नागल को दुनिया के 19वें नंबर के खिलाड़ी अर्जेंटीना के क्लेकोर्ट विशेषज्ञ प्रतिद्वंद्वी ने 7 -6, 6-3 से हराया। नागल ने हार के बाद ट्वीट किया , आज की हार से निराश हूं। लेकिन फ्रेंच ओपन से पहले अच्छी तैयारी हुई। अगला लक्ष्य पेरिस।

आनन्देश्वर ने किया मतदान, अधिक से अधिक वोट देने की अपील

लखनऊ। उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के महासचिव डा.आनन्देश्वर पाण्डेय ने सोमवार को निरालानगर में सरस्वती विद्या मंदिर स्थित मतदान केंद्र पर वोट देकर लोगों से मत देकर लोकतंत्र के इस महापर्व में भागीदार बनने की अपील की। उन्होंने कहा कि सभी वोटरों से मेरा निवेदन है कि वे अपना वोट जरूर डालें और मतदान करना आपका दायित्व है। उन्होंने इसके साथ ही ये भी अपील की कि स्वस्थ व शांतिपूर्ण लोकतंत्र के लिए बढ़.चढ़कर मतदान प्रक्रिया में भाग लें एवं अपने मताधिकार का प्रयोग करें।

बीसीसीआई ने छह पूर्वोत्तर राज्यों में इनडोर क्रिकेट अकादमी की आधारशिला रखी

नई दिल्ली। पूर्वोत्तर राज्यों के उभरते हुए क्रिकेट खिलाड़ियों की मदद के लिए भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने सोमवार को छह राज्यों में इनडोर क्रिकेट प्रशिक्षण अकादमियों की आधारशिला रखी। इनडोर क्रिकेट अकादमी अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड और सिक्किम के खिलाड़ियों को सुविधा प्रदान करेंगी। यह अकादमी शिलांग, ईटानगर, कोहिमा, आइजोल, इंफाल और गंगटोक मे स्थित होगी। बीसीसीआई के सचिव जय शाह ने एक्स पर लिखा, पूर्वोत्तर मे बीसीसीआई की आगामी अत्याधुनिक इनडोर प्रशिक्षण सुविधाओ की आधारशिला रखकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। इससे पहले इन राज्यों के क्रिकेटरों को मानसून के मौसम के दौरान प्रशिक्षण के लिए कोलकाता, बेंगलुरु, चेन्नई, मुंबई या अहमदाबाद के केंद्रों की यात्रा करनी पड़ती थी।

दीप्ति ने दिव्यांगता को दी मात, रिकॉर्ड के साथ सोने पर जमाई धाक

- विश्व पैरा में 400 मीटर टी20 में स्वर्ण जीता

भाषा। कोबे (जापान)

भारत की दीप्ति जीवनजी ने विश्व पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में महिलाओं की 400 मीटर टी20 रेस में 55 . 07 सेकेंड के विश्व रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता। पैरा एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता दीप्ति ने अमेरिका की ब्रियाना क्लार्क का 55 . 12 सेकेंड का विश्व रिकॉर्ड तोड़ा जो उसने पिछले साल पेरिस में बनाया था। तुर्की की एसिल ओंडेर 55 . 19 सेकेंड के साथ दूसरे स्थान पर रही जबकि एक्वाडोर की लिज़ांशेला एंगुलो 56 . 68 सेकेंड का समय निकालकर तीसरे स्थान पर रही। दीप्ति ने रविवार को एशियाई रिकॉर्ड समय 56 . 18 सेकेंड के साथ अपनी हीट रेस जीती थी। टी20 वर्ग की रेस बौद्धिक रूप से अक्षम खिलाड़ियों के लिए है। दीप्ति ने पिछले साल हांगझोउ पैरा एशियाई खेलों की 400 मीटर टी20 स्पर्धा में 56.69 सेकेंड के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता था जो तत्कालीन एशियाई रिकॉर्ड था। दीप्ति जूनियर और सीनियर चैम्पियनशिप में सक्षम शरीर वाले खिलाड़ियों के साथ भी चुनौती पेश कर चुकी हैं। सक्षम शरीर वाले खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए उन्होंने जूनियर स्तर पर कई पदक जीते हैं। उन्होंने सीनियर स्तर पर सक्षम खिलाड़ियों के साथ पिछली बार चेन्नई में 2022 राष्ट्रीय अंतर राज्यीय प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था जहां उन्होंने 100 मीटर और 200 मीटर रेस में प्रतिस्पर्धा पेश की थी। योगेश कथुनिया ने पुरूषों के एफ 56 वर्ग चक्का फेंक में 41 . 80 मीटर के साथ रजत पदक जीता। भाग्यश्री महाराव ने भी महिला गोला फेंक एफ34 वर्ग में 7.56 मीटर के प्रयास के साथ रजत पदक जीता। भारत ने अब तक एक स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य पदक जीत लिए हैं। रविवार को निशाद कुमार (टी47 उंची कूद) और प्रीति पाल (टी35 200 मीटर) ने क्रमश: रजत और कांस्य पदक जीता था।

बौद्धिक अक्षमता के कारण दीप्ति को ताने देने वाले विश्व चैम्पियन बनने के बाद कर रहे तारीफ

नई दिल्ली। दीप्ति जीवनजी के माता-पिता को लंबे समय तक गांव के लोग मानसिक रूप से कमजोर बच्चे के लिए ताने मारते रहे लेकिन जापान के कोबे में पैरा एथलेटिक्स विश्व चैम्पियनशिप में विश्व रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीतने के बाद उनकी तारीफ करते नहीं थकरहे है। दीप्ति की जीत के बाद तेलंगाना के कल्लेडा गांव में स्थित छोटे से घर के बाहर बड़ी संख्या में लोग जश्न मना रहे है। तेलंगाना के वारंगल जिले में दिहाड़ी मजदूर के घर जन्मी 20 वर्षीय दीप्ति ने सोमवार को महिलाओं की 400 मीटर टी20 वर्ग दौड़ में 55.07 सेकंड के विश्व रिकॉर्ड समय के साथ स्वर्ण पदक जीता। उन्होने आगामी पेरिस पैरालंपिक के लिए भी क्वालीफाई किया।टी20 श्रेणी उन एथलीटों के लिए है जो बौद्धिक रूप से कमजोर है। दीप्ति के कोच नागपुरी रमेश ने कहा कि उसके माता-पिता को गांव वालो के तानो का सामना करना पड़ता था। दीप्ति के माता-पिता दिहाड़ी मजदूर थे और वे परिवार चलाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। इसके अलावा उन्हे ग्रामीणो से लगातार ताने भी सुनने पड़ते थे कि मानसिकरूप से कमजोर लड़की की शादी नही हो सकती है। उन्होने कहा, पिछले साल हांगझोऊएशियाई पैरा खेलो मे दीप्ति के स्वर्ण पदक जीतने के बाद चीजो मे बदलाव आना शुरू हुआ। अब वहीं गांव वाले दीप्ति की उपलब्धि के लिए उसके माता-पिता की तारीफ कर रहे है। उन्होने मुझे बताया कि पैरा एशियाई खेलो के बाद उनके हैदराबाद आने के बाद से चीजे बदल गई। उन्होने मुझे बताया कि क्षेत्र के जिला कलेक्टर और राजनीतिक दलो के नेता भी उनके घर आए थे, जो उनके लिए चौंकाने वाला था। दीप्ति ने हांगझोउ पैरा एशियाई खेलों में 400 मीटर टी20 वर्ग में 56.69 सेकेंड के एशियाई रिकॉर्ड समय के साथ स्वर्ण पदक जीता था। दीप्ति के पिता जे यादगिरी और मां जे धनलक्ष्मी इतने गरीब थे कि उनके पास अपने बच्चे को वारंगल से हैदराबाद भेजने के लिए बस का किराया देकर करने के लिए भी पैसे नहीं थे। जब मैने दीप्ति को प्रशिक्षण देने का फैसला करने के वाकए को याद करते हुए कहा, उन्हें वारंगल में एक पीईटी शिक्षक के माध्यम से एक स्कूल मीट मे देखा गया था। जब मैने उनसे दीप्ति को भेजने के लिए कहा, तो उन्होंने कहा कि उनके पास बस किराए के लिए पैसे नही है। मैने उनसे कहा कि वे बस में चढ़ जाएं और परिचालक से मेरी बात करा दें। रमेश ने बताया कि दीप्ति को खेलो मे आगे बढ़ाने के लिए उसके पिता को अपनी जमीन बेचनी पड़ी थी।

आईपीएल नीलामी में आरसीबी द्वारा चुने जाने से पहले क्रिकेट छोड़ने का मन बना रहे थे स्वप्निल

बेंगलुरू बाएं हाथ के स्पिनर स्वप्निल सिंह ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की पिछली नीलामी के शुरुआती दौर मे अपने नाम पर बोली नही लगने के बाद खेल को अलविदा करने की योजना बना रहे थे लेकिन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु(आरसीबी) ने उन्हें टीम मे शामिल कर लिया। बाए हाथ की स्पिन गेंदबाजी के साथ स्वप्निल बल्ले से भी योगदान देने की क्षमता रखते है। अपने 18 साल के घरेलू क्रिकेट करियर मे उन्होने बड़ौदा और उत्तराखंड की टीमो का प्रतिनिधित्व किया है। आईपीएल में वह आरसीबी से पहले किंग्स इलेवन पंजाब (अब पंजाब किंग्स) और लखनऊ सुपरजायंट्स का हिस्सा रह चुके हैं। स्वप्निल ने आरसीबी बोल्ड डायरिज से कहा, आईपीएल नीलामी के दिन मै एक मैच के लिए धर्मशाला जा रहा था। जब मै वहां पहुंचा तब शाम के सात-आठ बज रहे थे। तब तक कुछ नही हुआ था और नीलामी का आखिरी दौर चल रहा था, मुझे लगा कि मेरे लिए चीजें खत्म हो गई है। मैने सोचा था कि मै मौजूदा (घरेलू) सत्र में खेलूंगा और अगर जरूरत पड़ी तो अगला सत्र खेलने के बाद अपना करियर खत्म कर दूंगा क्योकि मै पूरी ज़दिगी खेलना नही चाहता था। जीवन मे अच्छा करने के लिए अन्य चीजें भी है। मै बहुत निराश था। प्रथम श्रेणी क्रिकेट मे 2006 मे पदार्पण करने वाले 33 साल के स्वप्निल को आरसीबी ने 20 लाख रुपए की बोली के साथ टीम मे शामिल किया था।

मेजबान के खिताब नहीं जीत पाने का कलंक धोने उतरेगा वेस्टइंडीज

एंटीगा। टी20 विश्व कप के इतिहास मे कोई मेजबान आज तक खिताब नही जीत सका है लेकिन दो बार कप्तान के तौर पर वेस्टइंडीज को टी20 चैम्पियन बनाने वाले डेरेन सैमी इस बार मुख्य कोच के तौर पर इस सिलसिले को तोड़ना चाहेंगे। पिछले आठ सत्रों मे कोई मेजबान टी20 विश्व कप नही जीत सका है। सैमी को इस बार वेस्टइंडीज और अमेरिका मे होने वाले टूर्नामेंट में यह मिथक तोड़ने की उम्मीद है। श्रीलंका 2012 मे कोलंबो मे फाइनल मे वेस्टइंडीज से हार गया था। जीत के लिए 138 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंकाई टीम 101 रन पर आउट हो गई थी। चार साल बाद वेस्टइंडीज ने ईडन गार्डंस पर इंग्लैंड को हराकर दूसरी बार खिताब जीता। उस समय बेन स्टोक्स के आखिरी ओवर मे कार्लोस ब्रेथवेट ने चार लगातार छक्के लगाए थे। सैमी को पिछले साल वेस्टइंडीज का सीमित ओवरों का मुख्य कोच बनाया गया। उनके साथ खेल चुके जॉनसन चार्ल्स और आंद्रे रसेल ही इस टीम मे हैं। सैमी ने कैरेबियाई मीडिया से कहा , हमें पता है कि विजई टीम कैसे चुनी जाती है। हम पहले भी यह कर चुके है और इस बार भी टूर्नामेंट को लेकर काफी रोमांचित है। हमने तैयारी आस्ट्रेलिया मे पिछले विश्व कप से ही शुरू कर दी थी। वेस्टइंडीज की टीम यूएई मे हुए 2021 टी20 विश्व कप से ग्रुप चरण मे ही बाहर हो गई थी। वही आस्ट्रेलिया में 2022 में हुए टूर्नामेंट मे भी निकोलस पूरन की कप्तानी वाली टीम मुख्य ड्रॉ के लिए क्वालीफाई नही कर सकी थी। पूरन पर इस बार कप्तानी का दबाव नही है और वह मध्यक्रम मे ट्रंपकार्ड साबित हो सकते है। उन्होने आईपीएल मे लखनऊसुपर जाइंट्स के लिए 499 रन बनाए। मेजबान को सुनील नारायण की कमी खलेगी जिन्होंने आईपीएल मे इस सत्र में कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए शानदार प्रदर्शन किया है।

टी20 विश्व कप के लिए मैकगुर्क, शॉर्ट होंगे आस्ट्रेलिया के रिजर्व खिलाड़ी : रिपोर्ट

नई दिल्ली। आक्रामक बल्लेबाज जैक फ्रेसर मैकगुर्क और मैथ्यू शॉर्ट एक जून से अमेरिका और वेस्टइंडीज मे होने वाले टी20 विश्व कप के लिए आस्ट्रेलिया के रिजर्व खिलाड़ी होंगे। बाईस वर्ष के मैकगुर्क ने आईपीएल मे दिल्ली कैपिटल्स के लिए शानदार प्रदर्शन किया है। अभी तक टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण नही कर सके मैकगुर्क को टी20 विश्व कप टीम मे जगह नही मिली है क्योंकि आस्ट्रेलिया के पास शीर्ष तीन स्थानो के लिए डेविड वॉर्नर, ट्रेविस हेड और कप्तान मिचेल मार्श पहले से हैं। बल्लेबाजी हरफनमौला शॉर्ट ने आस्ट्रेलिया के लिए पिछले 14 में से नौ टी20 मैच खेले हैं। इनमें से पांच में उन्होंने पारी का आगाज किया और पिछले दो सत्र मे वह बिग बैश लीग भी खेल चुके है। ईएसपीएन क्रिकइन्फो के अनुसार , आस्ट्रेलिया के मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बेली ने सुझाव दिया था कि विश्व कप मे एक रिजर्व साथ लेकर जाएंगे लेकिन अब वे शॉर्ट के साथ फ्रेसर मैकगुर्क को भी ले जा रहे है। आस्ट्रेलियाई टीम बृहस्पतिवार को वेस्टइंडीज रवाना होगी। उसे त्रिनिदाद मे 28 और 30 मई को नामीबिया और वेस्टइंडीज के खिलाफ दो अभ्यास मैच खेलने है। हेड, कैमरन ग्रीन, पैट कमिंस, मिचेल स्टार्क और ग्लेन मैक्सवेल आईपीएल प्लेआफ खेलने के बाद टीम से जुड़ेंगे। आस्ट्रेलिया को पांच जून को बारबाडोस मे ओमान के खिलाफ पहला मैच खेलना है।

खेल हो या शिक्षा, अनुशासन जरूरत है: गोपीचंद ने छात्रों से कहा

पटना। खिलाड़ी और कोच के रूप मे बेहद अनुशासित पुलेला गोपीचंद ने यहां प्रतिस्पर्धी परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों को प्रेरित करते हुए अनुशासन का महत्व बताया। पूर्व ऑल इंग्लैंड चैंपियन और द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता 50 साल के गोपीचंद इंजीरियंग और मेडिसिन पाठ्यक्रम की प्रतिस्पर्धी परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों से मुखातिब थे। भारत के मुख्य बैडमिंटन कोच गोपीचंद ने यहां एलेन करियर इंस्टीट्यूट में छात्रों से कहा, खेल हो या शिक्षा दोनो समान है। दोनो मे अनुशासन और प्रतिबद्धता जरूरी है। समय के साथ इसमें मेंटर (मार्गदर्शक) की जरूरत भी जुड़ गई है। शिक्षा के साथ जब ट्रेनिंग भी दी जाती है तब एक छात्र मौजूदा समय मे प्रतिस्पर्धा मे सक्षम बन पाता है। इसी तरह खेल मे भी अगर अनुशासन और प्रतिबद्धता के साथ कोचिंग अच्छी हो तो खिलाड़ी आगे बढ़ता है। ओलंपिक पदक विजेताओं साइना नेहवाल और पीवी सिंधू जैसी खिलाड़ियों को तैयार करने वाले हैदराबाद के गोपीचंद ने कहा कि उन्हें पटना जैसे शहरों के युवाओं का भविष्य उज्जवल नजर आता है। खेल मे हमेशा एकतरफा नतीजे नही मिलते।

मुझे उम्मीद है कि आईपीएल भारत के लिए खेलने का शॉर्टकट नहीं बनेगा: गंभीर

चेन्नइ। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में क्रिकेट की गुणवत्ता से प्रभावित है लेकिन वह नही चाहते कि फ्रेंचाइजी आधारित टी20 लीग युवाओ के लिए भारतीय टीम मे प्रवेश का मार्ग बने।दिग्गज स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के यूट्यूब कार्यक्रम कुट्टी स्टोरीज विद ऐश पर गंभीर ने कहा, मेरे लिए बड़ी चिंता यह है कि कितने युवा भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट खेलना चाहते हैं। मुझे उम्मीद है कि आईपीएल भारत के लिए खेलने का शॉर्टकट (आसानी रास्ता) साबित नही होगा। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के मेंटोर ने माना कि आईपीएल से भारतीय क्रिकेटरों को फायदा हुआ है। उन्होंने कहा, आज के दौर में जब मै अंतरराष्ट्रीय टी20 टीमो को देखता हू और भारत के खिलाफ खेलने की बात आती है तो दो-तीन टीमो के अलावा मुझे ज्यादा टक्कर देने वाली टीमे नही दिखती है। उन्होंने कहा, बहुत सी टीमे भारत की मजबूती की बराबरी नही कर सकती हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि आज के समय आईपीएल अंतरराष्ट्रीय टी20 क्रिकेट की तुलना मे कही अधिक प्रतिस्पर्धी हो गया है। उन्होंने कहा, हमारे घरेलू खिलाड़ियों का स्तर बढ़ा है। वे जिस तरह से आईपीएल खेलना चाहते है, जिस तरह से वे टी20 क्रिकेट को लेकर तैयारी करते है मुझे लगता है कि उनका ज्यादा ध्यान टी20 क्रिकेट खेलने पर है।

भारतीय मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले टीम ने जीता सोना

- एशियाई रिले में राष्ट्रीय रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण जीता

भाषा। बैंकॉक

भारत की मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले टीम ने सोमवार को यहां पहली एशियाई रिले चैंपियनशिप में राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए स्वर्ण पदक जीता। भारतीय टीम हालांकि पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने में नाकाम रही। मुहम्मद अजमल, ज्योतिका श्री दांडी, अमोज जैकब और शुभा वेंकटेशन की चौकड़ी ने तीन मिनट 14.12 सेकेंड के समय के साथ स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इससे पहले का राष्ट्रीय रिकॉर्ड तीन मिनट 14.34 सेकेंड का था जो भारतीय टीम ने पिछले साल हांगझोउ एशियाई खेलों में रजत पदक जीतने के दौरान बनाया था। भारतीय टीम रेस के चारों चरण के दौरान बढ़त बनाए हुए थी। श्रीलंका की टीम तीन मिनट 17.00 सेकेंड के समय के साथ दूसरे स्थान पर रही जबकि वियतनाम की टीम ने तीन मिनट 18.45 सेकेंड के समय के साथ तीसरा स्थान हासिल किया। सोमवार का यह समय भारतीय टीम को विश्व एथलेटिक्स की रोड टू पेरिस सूची में 21वें स्थान पर जगह दिलाता है। टीम का लक्ष्य 15वें या 16वें स्थान तक आना था। इस तरह भारतीय टीम की पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने की राह मुश्किल हो गई है क्योंकि पेरिस में मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले टीम में सिर्फ 16 टीम हिस्सा लेंगी। बहामास के नसाऊ में विश्व एथलेटिक्स रिले से पहले ही 14 चार गुणा 400 मीटर रिले टीम पेरिस ओलंपिक के लिए स्वत: क्वालीफाई कर चुकी हैं। अब 30 जून की समयसीमा तक देशों के सर्वश्रेष्ठ समय के आधार पर सिर्फ दो स्थान भरे जाने हैं। चेक गणराज्य (तीन मिनट 11.98) और इटली (तीन मिनट 13.56 सेकेंड) रोड डू पेरिस सूची में अभी क्रमश: 15वें और 16वें स्थान पर हैं। इससे पहले ही शीर्ष 14 टीम विश्व एथलेटिक्स रिले के दौरान पेरिस ओलंपिक का टिकट कटा चुकी हैं जहां भारतीय टीम क्वालीफाई करने में नाकाम रही। सोमवार को भारत का लक्ष्य कम से कम तीन मिनट 13.56 सेकेंड से बेहतर प्रदर्शन करना था जिससे कि वह 16वें स्थान पर आ जाए लेकिन टीम ऐसा करने में नाकाम रही। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) 30 जून की समय सीमा से पहले मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले टीम को अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भेजने पर विचार कर सकता है। भारत मंगलवार को एशियाई रिले के दूसरे दिन पुरुष और महिला चार गुणा 400 मीटर रिले रेस में प्रतिस्पर्धा पेश करेगा। बहामास में राजेश रमेश, रूपल चौधरी, अविनाश कृष्ण कुमार और ज्योतिका श्री दांडी की भारतीय मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले चौकड़ी ने खराब प्रदर्शन किया और पहले दौर के क्वालीफायर की हीट (शुरुआती दौर की रेस) में पेरिस का टिकट कटाने में विफल रही।

अरविंद चिदंबरम शारजाह मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट में शीर्ष पर बरकरार

शारजाह। भारतीय ग्रैंडमास्टर अरविंद चिदंबरम सोमवार को यहां शारजाह मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट के छठे दौर में अमेरिका के सैम शैंकलैंड के खिलाफ आसान ड्रॉ के साथ अपनी एकल बढ़त को बरकरार रखने में सफल रहे हैं। छह बाजियों में पांच अंकों के साथ चिदंबरम शतरंज की दुनिया में विशिष्ट माने जाने वाले 2700 रेटिंग अंक हासिल करने वाले शतरंज खिलाड़ियों की सूची में शामिल होने से दो अंक दूर है। दुनिया के सबसे मजबूत ओपन टूर्नामेंटों में शामिल इस प्रतियोगिता में शीर्ष वरीयता प्राप्त अर्जुन एरिगैसी ने रूस के दानिल युफा पर शानदार जीत दर्ज की ईरान के बर्दिया डेंशवर और अमीन ताबाताबेई, अमेरिका के हंस मोके नीमन और शैंकलैंड, सर्बिया के एलेक्सी सराना के साथ अर्जुन साढ़े चार अंकों के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं। इंग्लैंड के श्रेयस रॉयल ने अभिमन्यु पुराणिक को ड्रॉ पर रोककर ग्रैंड मास्टर नॉर्म की ओर एक और कदम बढ़ाया।

मलेशिया मास्टर्स में खिताब का सूखा खत्म करने उतरेगी सिंधू

कुआलालम्पुर। ब्रेक से लौटी पी वी सिंधू पेरिस ओलंपिक से पहले यहां मंगलवार से शुरू हो रहे मलेशिया मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट में जीत दर्ज करके अपना मनोबल ऊंचा करने के इरादे से उतरेगी। पूर्व विश्व चैम्पियन सिंधू ने उबेर कप और थाईलैंड ओपन में भाग नहीं लिया। अब वापसी करते हुए उनका लक्ष्य इस बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर सुपर 500 टूर्नामेंट में महिला एकल में अच्छा प्रदर्शन करने का होगा। वह पिछले साल अक्टूबर में घुटने की चोट से उबरने के बाद से फॉर्म में नहीं है। ओलंपिक में रजत और कांस्य पदक जीत चुकी सिंधू का रिटर्न पहले की तरह नहीं रहा है और कई करीबी मुकाबले वह हार गई हैं। वह छह प्रतिस्पर्धाओं में से दो में ही क्वार्टर फाइनल तक पहुंच सकी हैं। पिछली बार वह 2022 सिंगापुर ओपन में खिताब जीती थी। पहले दौर में उनका सामना स्कॉटलैंड की क्रिस्टी गिलमोर से होगा। इस टूर्नामेंट में एंग सि यंग, चेन यू फेइ, अकाने यामागुची और कैरोलिना मारिन जैसे सितारे भाग नहीं ले रहे हैं। सिंधू का सामना युवा खिलाड़ियों से होगा जो पहले भी उन्हें परेशान कर चुके हैं। अष्मिता चालिहा, आकृषि कश्यप और मालविका बंसोड भी अच्छे नतीजे देना चाहेंगी। पुरूष वर्ग में किरण जॉर्ज अकेले भारतीय हैं जो जापान के ताकुमा ओबायाशी से पहला मैच खेलेंगे। थाईलैंड ओपन चैम्पियन सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी यह टूर्नामेंट नहीं खेल रहे हैं। पुरूष युगल में कृष्णा प्रसाद गारागा और साई प्रतीक के की जोड़ी उतरेगी।

पेरिस ओलंपिक में बालाजी या युकी के साथ जोड़ी बनाएंगे रोहन बोपन्ना

नई दिल्ली। भारत के शीर्ष युगल खिलाड़ी रोहन बोपन्ना पेरिस ओलंपिक में एन श्रीराम बालाजी या युकी भांबरी के साथ जोड़ी बनाएंगे और अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) से उसे मंजूरी मिलना तय है। विश्व युगल रैंकिंग में चौथे स्थान पर काबिज 44 वर्ष के बोपन्ना शीर्ष दस में होने के कारण अपना जोड़ीदार चुन सकते हैं। पेरिस ओलंपिक में पुरूष युगल ड्रॉ में 32 टीमें होंगी जिसमें से एक देश अधिकतम दो टीमें रख सकता है। क्वालीफिकेशन मानदंडों के तहत शीर्ष दस में शामिल खिलाड़ी अपना जोड़ीदार चुन सकते हैं जो एटीपी या डब्ल्यूटीए रैंकिंग में शीर्ष 300 के भीतर होना चाहिए। फ्रेंच ओपन के बाद 10 जून की रैंकिंग क्वालीफिकेशन के लिए मान्य होगी।

एआईटीए सूत्रों के अनुसार बोपन्ना ने पेरिस ओलंपिक के लिए उनके जोड़ीदार के तौर पर टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना (टॉप्स) में शामिल करने के लिए एआईटीए को बालाजी और भांबरी का नाम भेजा है। एआईटीए महासचिव अनिल धूपर ने पीटीआई से कहा , आम तौर पर खिलाड़ी अपना जोड़ीदार खुद चुनता है। चयन समिति उससे विकल्प पूछेगी और उस पर बात की जाएगी। रोहन जिसके साथ भी खेलना चाहेगा, उस पर विचार किया जाएगा। बालाजी ने हाल ही में जर्मनी के आंद्रे बेजेमैन के साथ कैगलियारी चैलेंजर टूर्नामेंट जीता था। वहीं भांबरी ने फ्रांस के अलबानो ओलिवेत्ती के साथ अप्रैल में म्युनिख में एटीपी 250 टूर्नामेंट जीता और इस महीने बोर्डो चैलेंजर के सेमीफाइनल में पहुंचे। भारतीय टेनिस में ओलंपिक या बहु खेल आयोजनों में नामांकन को लेकर हमेशा विवाद रहा है। वर्ष 2012 में महेश भूपति और बोपन्ना दोनों ने लिएंडर पेस के साथ खेलने से इनकार कर दिया था जिसके बाद पेस ने विष्णु वर्धन को जोड़ीदार बनाया था।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोनः 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादकः शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।